उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम

पर्यटन (337)

2

विद्याधनम् सर्वधनं प्रधानम्

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्था)

ए-24-25, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर - 62, नोएडा - 201309 (उ.प्र.)

वेबसाइट: www.nios.ac.in, टॉल फ्री नंबर 18001809393

सलाहकार-समिति

अध्यक्ष
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

निदेशक
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

उप निदेशक
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

पाठ्यक्रम समिति

प्रो. सैयद इनायत अली ज़ैदी
अध्यक्ष, इतिहास एवं संस्कृति विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

प्रो. सम्पद सवैन
अध्यक्ष, पर्यटन विभाग हास्पिटलिटी एंड
होटल मैनेजमेंट, इंदिरा गांधी नेशनल
ट्राइबल यूनिवर्सिटी, अमरकंटक

डॉ अब्दुल गनी
कुलसचिव
कश्मीर विश्वविद्यालय
श्रीनगर

श्री विपुल सिंह
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
मोतीलाल नेहरू कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

फादर बाबू जोसेफ
अध्यक्ष, इतिहास और पर्यटन विभाग
सेल्सियन कॉलेज, सोनाडा
दार्जिलिंग, प. बंगाल

एच.के. भूटानी
एक्जीक्यूटिव मैनेजर
अशोक होटल आईटीडीसी
नई दिल्ली

डॉ. अज़मत नूरी
शैक्षिक अधिकारी (इतिहास)
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

डॉ. सौम्या राजन
शैक्षिक अधिकारी (अंग्रेजी)
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

पाठ-लेखक

डॉ. बी.बी. पारिदा
प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, पर्यटन विभाग
बर्दवान यूनिवर्सिटी, बंगाल

प्रो. सैयद इनायत अली ज़ैदी
अध्यक्ष, इतिहास एवं संस्कृति विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

डॉ. रामाश्रय प्रसाद
सहायक प्रोफ़ेसर
भीमराव अम्बेडकर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. अब्दुल कादिर
सहायक प्रोफ़ेसर, पर्यटन, होटल
हास्पिटलिटी एंड हेरिटेज स्टडीज़
जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

डॉ. सुभाष आनंद
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. आर. एस. पसरीचा
उप-प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
एम.बी.डी.ए.वी. सीनियर
सेकेण्डरी स्कूल, नई दिल्ली

डॉ अब्दुल गनी
कुलसचिव
कश्मीर विश्वविद्यालय
श्रीनगर

डॉ. मुश्ताक ए लोन
सहायक प्रोफ़ेसर
मैनेजमेंट स्टडीज़ विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय, कश्मीर, श्रीनगर

डॉ. नुसरत यास्मीन
सहायक प्रोफ़ेसर, पर्यटन विभाग
होटल, हास्पिटलिटी एंड हेरिटेज
स्टडीज़, जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

डॉ. सम्पद सवैन
अध्यक्ष, पर्यटन विभाग
हास्पिटलिटी एंड होटल मैनेजमेंट
इंदिरा गांधी नेशनल ट्राइब्ल
यूनिवर्सिटी, अमरकंटक

डॉ. रोशन आरा
वरिष्ठ व्याख्याता (वाणिज्य)
शिक्षा विभाग, जम्मू-कश्मीर
श्रीनगर

डॉ. सैयद फहर अली
सहायक प्रोफ़ेसर
नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी
नोएडा

सुश्री महिंद धंडा
सहायक प्रोफ़ेसर, स्टेट इंस्टीट्यूट
ऑफ़ होटल मैनेजमेंट, रोहतक

डॉ. अज़मत नूरी
शैक्षिक अधिकारी (इतिहास)
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

अनुवादक

डॉ. नीरज धनकर
प्रोफ़ेसर
हिमगिरी जी विश्वविद्यालय, देहरादून

सुश्री मैत्रेय दुआ
सीनियर कन्टेंट डेवलपर
एसचांद एंड संस

श्री कृष्ण कुमार
पी.जी.टी., शिक्षा निदेशालय
दिल्ली

सुश्री सोनी चड्ढा
स्वतंत्र अनुवादक

श्री विनय कुमार
स्वतंत्र अनुवादक

सुश्री कान्ता जोशी
स्वतंत्र अनुवादक

श्री एम. एल. साहनी
सेवानिवृत्त व्याख्याता
शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

श्री दिवाकर मनी
हिंदी अधिकारी
जयपुर

भाषा-संपादक

डॉ. वेद प्रकाश
प्रोफ़ेसर
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

डॉ. प्रेम तिवारी
सहायक प्रोफ़ेसर
दयाल सिंह महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. अंशुमान ऋषि
शिक्षक, कुलाची हंसराज स्कूल
दिल्ली

पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. अज़मत नूरी
शैक्षिक अधिकारी (इतिहास)
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

सुश्री तरुण
सहायक निदेशक (शैक्षिक)
रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

आपसे दो बातें

प्रिय शिक्षार्थी,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, पर्यटन के उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम में आपका स्वागत करता है। 'पर्यटन के आधार' के अंतर्गत पर्यटन की अवधारणाएँ, पर्यटन के भौगोलिक और सांस्कृतिक आयाम, पर्यटन-आकर्षणों में क्षेत्रों की भूमि और लोग, पर्यटन व्यापार-प्रबंधन, यात्रा और पर्यटन में व्यवसाय-संचालन, अतिथि-सत्कार प्रबंधन, क्षेत्र विशेष के सांस्कृतिक धरोहर के आयामों के साथ-साथ पर्यटन के विकास एवं प्रारूप को सन्निहित किया गया है।

शिक्षार्थी के ज्ञान में बढ़ोतरी एवं कौशल के विकास के लिए इस पाठ्यक्रम में पर्यटन के विविध क्षेत्रों से संबंधित जानकारी को अध्ययन-सामग्री के रूप में समावेशित किया गया है। इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पढ़ने के पश्चात शिक्षार्थी पर्यटन को व्यावसायिक कार्यक्रम के एक विकल्प के रूप में चुन सकते हैं। आज के समय में पर्यटन व्यवसाय के रूप में स्थापित हो चुका है इसलिए इससे संबंधित पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों के लिए एक अच्छे विकल्प के रूप में उभरकर आया है। आज के समय में लोगों की बढ़ती आय के कारण बेहतर जीवन जीने की इच्छा बढ़ती जा रही है। इससे पर्यटक के रूप में विभिन्न आकर्षक स्थलों भ्रमण पर्यटन उद्योग को बढ़ावा दें रहा है। इसलिए आने वाले समय में एक उद्योग के रूप में पर्यटन का विशाल क्षेत्र बनता दिख रहा है। अत: इस उद्योग को बढ़ावा देने के लिए सक्षम लोगों को आमंत्रित किया जाना चाहिए।

पर्यटन के पाठ्यक्रम को मॉड्यूल के रूप में बनाया और विकसित किया गया है। पाठ्यक्रम सामग्री को पाँच अनिवार्य मॉड्यूल और एक वैकल्पिक मॉड्यूल में बाँटा गया है। प्रत्येक मॉड्यूल में कुछ पाठ हैं। चूँकि प्रत्येक मॉड्यूल स्व-निहित या स्वतंत्र है, इसलिए अपनी रुचि एवं पसंद के अनुसार किसी भी मॉड्यूल से पढ़ाई शुरू की जा सकती है।

हमें उम्मीद है कि यह पाठ्यक्रम पर्यटन उद्योग में प्रयोग किए जाने वाले अवधारणा, प्रतिमान अभ्यास/कार्य को समझने एवं ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होगा। यह पाठ्यक्रम क्षेत्र विशेष से संबंधित प्राकृतिक सुंदरता एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रति गर्व और चेतना विकसित करेगा। उपर्युक्त तत्व पर्यटन संसाधनों के प्रमुख तत्व है। इसलिए व्यवस्थित एवं सिलसिलेवार ढ़ंग से इनका अध्ययन बहुत ही प्रासंगिक है।

इस पाठ्यक्रम से संबंधित किसी भी प्रकार की कठिनाई से उबारने एवं मदद के लिए कृपया हमें लिखने में संकोच न करें। आपकी हर जरूरत में आपकी मदद करने के लिए हम यहाँ हैं। आपकी जरूरत को पूरा करने में आपके द्वारा दी गई प्रतिक्रिया (फीडबैक) एक दिशा-निर्देश देता है।

आपको धन्यवाद

पाठ्यक्रम समन्वयक

पाठ-सामग्री का प्रयोग कैसे करें

बधाई! आपने स्वाध्यायी शिक्षार्थी बनने की चुनौती को स्वीकार किया है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान प्रत्येक कदम पर आपके साथ है और आपको ध्यान में रखकर हमने विषय विशेषज्ञों की टीम की सहायता से पाठ्य सामग्री तैयार की है। स्वतंत्र अधिगम के प्रारूप का पालन किया गया है। निम्नलिखित बिंदु आपको सुझाएँगे कि इस मुद्रित सामग्री का सर्वोत्तम उपयोग आप कैसे कर सकते हैं? आपकी मदद के लिए इन बिंदुओं के बारे में विस्तार से बताया गया है।

शीर्षक : एक अग्रिम संगठक है और आपको पाठ की विषयवस्तु का आभास आपको देता है। इसे अवश्य पढ़ें।

प्रस्तावना : यह पाठ को पिछले पाठ से जोड़कर पाठ का पूरा परिचय देगी।

उद्देश्य : ऐसे कथन हैं जो स्पष्ट करते हैं कि पाठ से आप को क्या सीखना है? यह जाँचने में भी सहायता करेंगे कि पाठ को पढ़ने के बाद आपने क्या सीखा? इन्हें अवश्य पढ़िए।

नोट्स : प्रत्येक पृष्ठ के एक ओर खाली स्थान छोड़ा गया है जिसमें आप नोट्स बनाने के लिए आवश्यक बिंदु लिख सकते हैं।

पाठगत प्रश्न : प्रत्येक खंड के बाद स्वयं की जाँच किए जाने वाले अति लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे गए हैं। ये आपको अपनी प्रगति जाँचने में सहायता करेंगे। पाठगत प्रश्नों को अवश्य हल कीजिए। इन्हें सफलतापूर्वक पूरा करने से आपको यह निर्णय लेने में आसानी होगी कि आप आगे बढ़ें या पीछे आकर दोबारा सीखें।

आपने क्या सीखा : यह पाठ के मुख्य बिंदुओं का सार है। यह पुनर्स्मरण और पुनरावृत्ति में सहायता करेगा। आप इसमें अपने बिंदु भी जोड़ सकते हैं।

पाठांत अभ्यास : ये दीर्घ और लघु उत्तरीय प्रश्न हैं जो विषय को स्पष्ट रूप से समझने के लिए अभ्यास करने के लिए प्रेरित करता है।

क्या आप जानते हैं? : ये बॉक्स कुछ अतिरिक्त जानकारी देते हैं। बाक्स में दी गई सामग्री महत्वपूर्ण है और इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। यह सामग्री मूल्यांकन के लिए नहीं, अपितु आपके सामान्य ज्ञान को बेहतर बनाने के लिए है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर : इनकी सहायता से आप जान सकेंगे कि आपने पाठगत प्रश्नों के जो उत्तर दिए हैं वे कितने सही हैं।

क्रियाकलाप : सिद्धांत को बेहतर ढंग से समझने के लिए कुछ क्रियाकलाप सुझाए गए हैं।

वेब-साइट : ये वेब-साइट्स विस्तृत अधिगम प्रदान करती हैं। सामग्री में आवश्यक जानकारी शामिल की गई है और अधिक जानकारी के लिए आप इनको देख सकते हैं।

विषय-सामग्री : एक विहंगम दृष्टि

माड्यूल-1: पर्यटन के आधार

1. पर्यटन का विकास
2. पर्यटन उद्योग एवं इसका गठन
3. पर्यटन का प्रभाव
4. यात्रा और पर्यटन : भूगोल के मौलिक तत्व
5. पर्यटन के लिए परिवहन

माड्यूल-2: पर्यटन के सांस्कृतिक आयाम

6. भारतीय संस्कृति और धरोहर की समझ
7. भारत की मंचीय कला की विरासत
8. पर्यटकों को लुभाती भारतीय वास्तुकला

माड्यूल-3: भारत में पर्यटन के सांस्कृतिक एवं धरोहर संबंधी दृष्टिकोण

9. भारत में संस्कृति और धरोहर-I: हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म
10. भारत में संस्कृति और धरोहर-II: सिख, इस्लाम और ईसाई धर्म
11. भारत के सांस्कृतिक आकर्षण

माड्यूल-4: पर्यटन आकर्षण के रूप में प्राकृतिक विविधता

12. भारत में पर्यटन के प्राकृतिक आकर्षण
13. भारत में पर्यटन की प्रगति और प्रतिरूप
14. विश्व में पर्यटन का विकास और स्वरूप

माड्यूल-5: पर्यटन व्यवसाय का प्रबंधन

15. पर्यटन प्रबंधन
16. मानव संसाधन प्रबंधन-I
17. मानव संसाधन प्रबंधन-II
18. संप्रेषण तथा व्यक्तित्व-विकास
19. पर्यटन-विपणन

माड्यूल-6A: यात्रा एवं पर्यटन संचालन व्यापार

20. यात्रा एजेंसियों के कार्य एवं पर्यटन-संचालन व्यापार
21. यात्रा-एजेंसियों के कार्य एवं पर्यटन-संचालन
22. यात्रा-विवरण एवं पर्यटन पैकेजिंग

अथवा

माड्यूल-6B: अतिथि-सत्कार प्रबंधन

20. आतिथि-सत्कार एवं खान-पान उद्योग
21. मुख्य कार्यालय का परिचालन
22. होटल के सहायक संचालक

विषय-सूची

माड्यूल-3: भारत में पर्यटन के सांस्कृतिक एवं धरोहर संबंधी दृष्टिकोण

9. भारत में संस्कृति और धरोहर-I: हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म 1
10. भारत में संस्कृति और धरोहर-II: सिख, इस्लाम और ईसाई धर्म 20
11. भारत के सांस्कृतिक आकर्षण 36

माड्यूल-4: पर्यटन आकर्षण के रूप में प्राकृतिक विविधता

12. भारत में पर्यटन के प्राकृतिक आकर्षण 69
13. भारत में पर्यटन की प्रगति और प्रतिरूप 90
14. विश्व में पर्यटन का विकास और स्वरूप 106

माड्यूल-3: भारत में पर्यटन के सांस्कृतिक एवं धरोहर संबंधी दृष्टिकोण

9. भारत में संस्कृति और धरोहर-I: हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म
10. भारत में संस्कृति और धरोहर-II: सिख, इस्लाम और ईसाई धर्म
11. भारत के सांस्कृतिक आकर्षण

टिप्पणियाँ

9

भारत में संस्कृति और धरोहर – I: हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म

सिंधु घाटी सभ्यता के साथ शुरुआत करते हुए, प्राचीन समय में हमने पढ़ा था कि भारतीय सभ्यता में निरंतर प्रगतिशील बदलाव होते रहे थे। समाज में ब्राह्मणों का प्रभुत्व था। क्षत्रियों का राजनीति पर नियंत्रण था और वैश्यों का अर्थव्यवस्था पर। समाज में शुद्र सबसे निम्न सदस्य के रूप में थे और अन्य वर्णों के लोगों को सेवाएँ देते थे। छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक हम समाज में काफी बदलाव देखते हैं। रूढ़िवादी प्रणाली में ब्राह्मणों द्वारा लोगों पर नियंत्रण करने के प्रयास के कारण नए धर्मों, जैसे- बौद्ध और जैन धर्म का उदय हुआ। इस पाठ में हम, हिंदुओं की जीवन-शैली के बारे में भी पढ़ेंगे और यह भी जानेंगे कि दो प्रमुख धर्म-बौद्ध और जैन अलग-अलग धर्मों के रूप में किस तरह उभर कर आए।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- हिंदुओं के धर्म और उनके धार्मिक स्थलों के बारे में उल्लेख कर सकेंगे;
- जैन धर्म की शिक्षाओं और उनके धार्मिक स्थलों के बारे में भी वर्णन कर सकेंगे और
- बौद्ध धर्म की शिक्षाओं और उनके धार्मिक स्थलों की व्याख्या कर सकेंगे।

9.1 हिंदू

हिंदू जीवन-शैली हर प्रकार से लचीली है क्योंकि यह ईश्वर के सभी रूपों और भक्तों को स्वीकार करती है। यहाँ ईश्वर के किसी एक रूप या धर्म गुरु में विश्वास नहीं किया जाता है। यह हठधर्मिता से परे है। इनके रीति-रिवाज़ रंगारंग एवं उत्साहपूर्ण और त्योहार स्फूर्ति से भरे होते हैं। अपने रस्मों और रिवाज़ों से हिंदू लोग अधिकतर मंदिरों में स्थापित दिव्य मूर्तियों की पूजा करते हैं। दिव्य मूर्तियों के दर्शन बहुत महत्व रखते हैं। ऐसा माना जाता है कि इससे ईश्वर भी भक्तों को समान महत्व

से देखते हैं। ईश्वर के दर्शन करने के लिए और अपना संबंध ईष्ट से गहरा करने के लिए अधिकतर हिंदू देश के कोने-कोने में बसे तीर्थ स्थानों जैसे, पवित्र नदियों, पहाड़ों और मंदिरों में जाते हैं। हिंदू उन्हें पवित्र स्थान या तीर्थ कहते हैं तथा इन तीर्थों पर जाने को तीर्थ-यात्रा कहते हैं। तीर्थ का अर्थ कष्ट से मुक्ति के लिए यात्रा करना या पवित्र स्थल है। वेदों के समय में इन स्थलों का संबंध केवल उन्हीं स्थानों से होता था जो पानी से जुड़े होते थे परंतु महाभारत काल तक आते-आते तीर्थ किसी पवित्र झील, पहाड़, वन या गुफ़ा को भी माना जाने लगा। तीर्थों का अर्थ भौतिक स्थलों से अधिक है। हालाँकि हिंदू अध्यात्मिक स्थानों, स्वर्ग और धरती का मिलन-स्थल, ऐसे स्थान जहाँ मोक्ष की प्राप्ति के लिए कोई जन्म, मृत्यु तथा पुनर्जन्म के बंधनों से मुक्त हो सकता है, आदि को तीर्थ स्थल मानते हैं। ऐसे स्थलों की यात्रा तीर्थ-यात्रा कहलाती है।

9.1.1 हिंदुओं के पवित्र स्थान और धरोहर

मोक्ष की प्राप्ति हेतु हिंदुओं के लिए, पवित्र स्थानों पर जीवन में एक बार यात्रा करना अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक क्रियाकलाप माना जाता है। चारों धाम या मठ महान संत शंकराचार्य द्वारा स्थापित किए गए हैं। चूँकि ये भारत के चारों कोनों में स्थित हैं, इसलिए यह सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण को दर्शाता है और बाद में इसने भारत को राष्ट्र के रूप में स्थापित किया।

इन मठों की स्थापना के अतिरिक्त, यहाँ चार धाम भी हैं- बद्रीनाथ, पुरी, द्वारका और रामेश्वरम। ऐसे भक्त जो इन मठों और धामों की यात्रा करते हैं, इन्हें धार्मिक पर्यटक कहते हैं।

द्वारका

गुजरात स्थित द्वारका भगवान कृष्ण से संबंधित महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यह शहर भारत के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह कृष्ण के साम्राज्य की राजधानी थी और यहाँ बहुत से महत्वपूर्ण मंदिर स्थित हैं। यहाँ के प्रमुख मंदिर को 'जगत मंदिर' के नाम से जाना जाता है।

पुरी और दिव्य रथ

पुरी में भगवान जगन्नाथ का बहुत ही भव्य मंदिर है जो ओडिशा के रक्षक माने जाते हैं। ईसा पश्चात आठवीं शताब्दी में हिंदू धर्म के अनंत मूल्यों का प्रसार करने के लिए आदि शंकराचार्य द्वारा चुने गए स्थानों में से यह एक है। ये स्थान उत्तर में हिमालय पर स्थित बद्रीनाथ, पश्चिम में समुद्र पर स्थित द्वारका और कर्नाटक में पश्चिम श्रृंगेरी में कांची हैं। पुरी के मंदिर में भगवान जगन्नाथ, उनके भ्राता बलराम और उनकी बहन सुभद्रा की प्रतिमाएँ साथ-साथ हैं।

पुरी के साथ जुड़े मनोरम कार्यक्रमों में से एक है- वार्षिक रथ यात्रा जो कि न केवल यात्रियों के लिए प्रमुख आकर्षण है बल्कि भक्तों के एकत्रित होने का स्थान भी है। इस रथ यात्रा में, तीनों प्रतिमाओं को उनके अलग-अलग रथों पर निकाला जाता है जिसे पुरी की गलियों में हजारों लोग खींच कर ले जाते हैं। इन्हें गुंडिचा मंदिर में लेकर जाते हैं और कुछ समय के बाद इन्हें वापस उनके सनातन स्थान पर ले जाते हैं (चित्र 9.1)।

चित्र 9.1: पुरी

शृंगेरी

शृंगेरी पश्चिम भारत में स्थित मुख्य हिंदू तीर्थ स्थलों में से एक माना जाता है। यह मैसूर के कादुर जिले में तुंगा नदी के बाएँ तट पर स्थित है। यहाँ की मुख्य देवी सरस्वती या शारदाम्बा या शरद अम्बा है। यह माना जाता है कि परंपराओं और प्रवचन में मठ गैर-सांप्रदायिक है। मुस्लिम कर्मचारियों के लिए गुरु के आदेश पर मंदिर की सीमा पर एक मस्ज़िद बनाई गई है। तुंगा नदी मंदिर के पास बहती है और यहाँ बड़ी संख्या में आए श्रद्धालु इन घाटों पर हज़ारों मछलियों को अपने हाथों से दाना डालते हैं।

जय बद्री विशाल

बद्रीनाथ स्थित 'जय बद्री विशाल' भगवान विष्णु के निवास स्थल के रूप में जाना जाता है। यह उत्तराखंड राज्य में स्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु और उनकी पत्नी अलकनंदा नदी के दाएँ तट पर तपस्या के लिए आए थे। भगवान विष्णु बहुत लंबे ध्यान में मग्न थे और इसीलिए अपने पति को छाया देने के लिए देवी लक्ष्मी ने बद्री के वृक्ष का रूप धारण कर लिया। इसीलिए इस नगर का नाम बद्रीनाथ पड़ गया। वर्तमान बद्रीनाथ मंदिर गढ़वालों के द्वारा बनवाया गया था। अन्य हिंदू मंदिरों की तरह इसके भी तीन भाग हैं-

(i) वह पवित्र स्थान जहाँ देवी/देवताओं की प्रतिमाएँ स्थापित की गई हो।

(ii) वह क्षेत्र जहाँ रीतियों का पालन किया जाता है।

(iii) जहाँ तीर्थ यात्री और भक्तजन एकत्रित होते हैं। तीर्थ यात्री काले पत्थर की बनी ईश्वर की प्रतिमा के दर्शन और पूजा करने आते हैं। बहुत से तीर्थ यात्री अलकनंदा नदी में स्नान करते हैं और विष्णु मंदिर के सामने गर्म पानी के झरने से जल लेते हैं। यहाँ होने वाली भारी बर्फ़बारी के कारण हर वर्ष मंदिर मई से अक्तूबर तक ही खुलता है। बहुत अधिक संख्या में धार्मिक तीर्थ यात्री यहाँ आते हैं। कुछ लोग हर वर्ष यहाँ आते हैं।

वाराणसी जिसे पहले बनारस या काशी के नाम से जाना जाता था, सभी तीर्थ स्थानों में से सर्वाधिक पवित्र माना जाता है। यह शिव का शहर (स्थान) माना जाता है। यहाँ दो हज़ार से भी अधिक मंदिर हैं और लगभग पाँच लाख से भी अधिक प्रतिमाएँ है। इनमें से अधिकांश शिवजी और उनके परिवार से संबंधित हैं। यह पावन नदी गंगा के तटों पर स्थित है। फ्रेंच यात्री, प्रांकोसी बर्नियर (1656–1668 ईसवी) ने धार्मिक महत्व के अलावा बनारस की शैक्षिक महत्ता के बारे में भी बताया है। बनारस में कई गुरुकुल हैं। उनके शब्दों में, ''अत्यंत निर्मल और समृद्ध देश के बीचों बीच स्थित गंगा पर बसा एक खूबसूरत शहर, हिंदुओं का गुरुकुल भी माना जा सकता है। यह भारत का एथेंस है। इस शहर में हमारे विश्वविद्यालयों (यूरोपीय विश्वविद्यालयों) की तरह कोई कॉलेज या नियमित कक्षा का प्रावधान नहीं है परंतु यह प्राचीन काल के विद्यालयों से मिलता-जुलता है। शिक्षक शहर के विभिन्न स्थानों, प्राइवेट घरों और मुख्य रूप से उपनगरों में बिखरे होते थे। कुछ शिक्षकों के पास चार अनुयायी होते थे, तो कुछ के पास छह या सात, जो कि अधिकतम संख्या थी। आमतौर पर लोग अपने गुरु के पास दस-बारह वर्ष तक रहते थे।'' आशा करते हैं कि यह जानकारी इन धार्मिक स्थानों के बारे में अधिक जानने, पढ़ने तथा और भी अधिक जानकारी एकत्र करने के लिए प्रेरणा देगी।

चित्र 9.2: काशी मंदिर

गया वह स्थान है, जहाँ के लिए यह मान्यता है कि यदि यहाँ संस्कार किया जाए तो मृत की आत्मा को मोक्ष प्राप्त होता है। बहुत से हिंदू गया जाते हैं, जो चाहते हैं कि उनके पूर्वजों को मोक्ष मिले।

हरिद्वार – यह उत्तराखंड में हिमालय की निचली पहाड़ी पर स्थित वह स्थान है जहाँ गंगा मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है। इसे 'गंगा का प्रवेशद्वार' भी कहा जाता है। हरिद्वार भारत के सबसे महत्वपूर्ण हिंदू तीर्थ स्थलों में से एक है। हरिद्वार की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर बहुत समृद्ध है। हिंदुओं

टिप्पणियाँ

के धर्मग्रंथों में, हरिद्वार को मायापुर के नाम से जाना जाता है। इसे हरि का द्वार या ईश्वर के वास का प्रवेश स्थान माना जाता है।

अयोध्या हिंदुओं के प्रमुख पवित्र नगरों में से एक है। इसका प्राचीन भारतीय महाकाव्य में महत्वपूर्ण स्थान है। भगवान राम ने अयोध्या के राजकुमार के रूप में अवतार लिया था।

इस शहर में अन्य परंपराओं का भी पालन किया जाता है। जैन धर्म की परंपराओं के अनुसार इसे प्रथम और चतुर्थ तीर्थंकरों के जन्मस्थान के रूप में माना जाता है। बौद्ध धर्म की परंपरा यह बताता है कि इस शहर को देखने के लिए भगवान बुद्ध आए थे।

कांचीपुरम - कांचीपुरम तमिलनाडु स्थित भारत के उन सात शहरों में से एक है, जिन्हें अंतिम मोक्ष हेतु दर्शन करने के लिए आवश्यक माना जाता है। यहाँ हिंदुओं के प्रमुख मंदिर हैं- वर्धराजा पेरूमल मंदिर, एकांबरेश्वर मंदिर, कामाक्षी अम्मा मंदिर और कुमारकोट्टम। यह शहर शैव और वैष्णवों दोनों के लिए तीर्थ स्थल है। हिंदू देवता विष्णु के 108 मंदिरों में से 14 मंदिर कांचीपुरम में स्थित हैं।

उत्तराखंड स्थित **केदारनाथ** चारों धामों में से सबसे दूरस्थ है। यह हिमालय की गोद में चोराबाड़ी हिमनद के पास मंदाकिनी नदी के शीर्ष पर स्थित है। यह हिंदुओं के सबसे पावन मंदिरों में से एक हैं। केदारनाथ मंदिर विश्व भर में लोकप्रिय हिंदुओं का तीर्थ स्थल है। भारत के छोटे चार धाम तीर्थों में से प्रसिद्ध केदारनाथ का नाम राजा केदार के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने सतयुग में शासन किया था। इनकी पुत्री का नाम वृंदा था, जिन्हें आंशिक रूप से लक्ष्मी जी का अवतार माना जाता है।

सोमनाथ मंदिर गुजरात के पश्चिमी तट पर स्थित प्रभास क्षेत्र में स्थित है। यह भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इसका अर्थ है - चंद्र देव का रक्षक। सोमनाथ का मंदिर शाश्वत तीर्थस्थान के नाम से जाना जाता है और हिंदुओं में अत्यंत पवित्र तथा पूजनीय तीर्थ स्थल माना जाता है।

अमरनाथ की गुफा जम्मू और कश्मीर स्थित लोकप्रिय तीर्थ स्थल है। यह भगवान शिव को समर्पित है। यह मंदिर हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग है और हिंदुओं के मुख्य तथा पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है। यह गुफ़ा बर्फीले पहाड़ों से घिरी हुई है। इस गुफ़ा में अधिकतर समय बर्फ़ जमा रहती है। केवल गर्मियों में बहुत ही कम समय के लिए जब यह बर्फ़ हटती है, तब इसे तीर्थ यात्रियों के लिए खोला जाता है। बीहड़ पर्वतीय क्षेत्र होने के बावजूद भी अमरनाथ की गुफा में बर्फ़ से बने शिवलिंग के दर्शन करने के लिए लाखों हिंदू भक्त हर वर्ष यहाँ आते हैं।

कामाख्या हिमालय की पहाड़ियों में प्रकट हुई एक प्रमुख देवी थी। इन्हें काली और महा त्रिपुरा सुंदरी का रूप माना जाता है। इनके नाम का अर्थ है ''इच्छा की प्रख्यात देवी।'' वे पुनर्निर्मित कामाख्या मंदिर में निवास करती हैं और इन्हें शिला योनि (स्त्री उत्पादक अंग) के रूप में पूजा जाता है। सती की मिथकों से जुड़ा यह मंदिर 51 शक्ति पीठों में प्रमुख है। यह प्रमुख शक्ति मंदिरों और विश्व भर में स्थित हिंदुओं के मुख्य तीर्थों में से एक है।

कैलाश पर्वत चीन नगरी के दक्षिण-पश्चिमी तिब्बती क्षेत्र में स्थित एशिया का एक पवित्र तीर्थ स्थल है। यह तिब्बत के पठार पर 6714 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। हिंदू पुराणों के अनुसार इसे भगवान शिव का घर भी कहा जाता है।

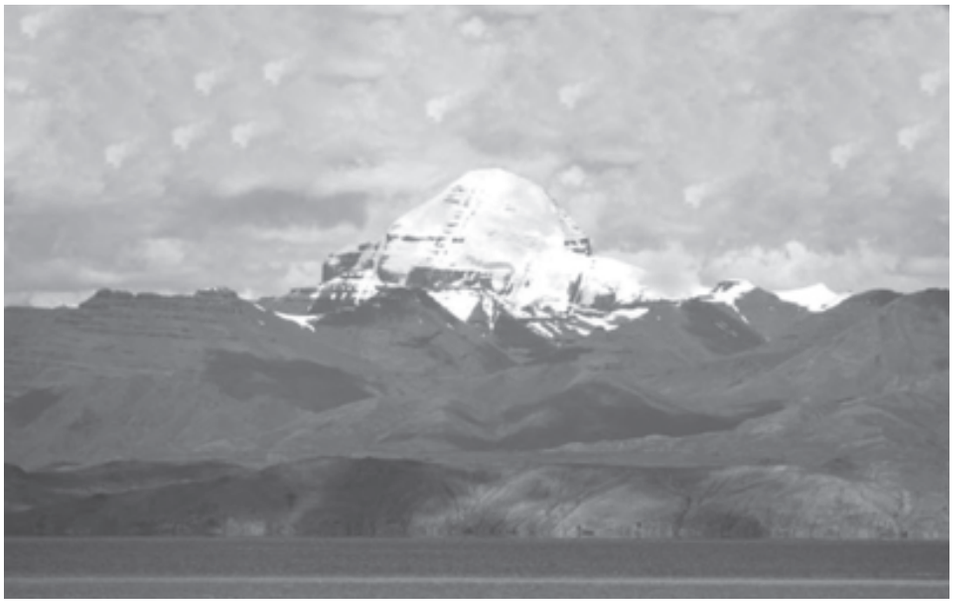

चित्र 9.3: कैलाश पर्वत

यमुना नदी के किनारे दिल्ली और आगरा राजपथ पर **मथुरा** स्थित है। यह हिंदुओं के प्रिय भगवान श्री कृष्ण का जन्म स्थल है। उनसे बहुत-सी मनमोहक कहानियाँ हैं जिसमें आपदाओं के समय लोगों को बचाने से जुड़ी हैं। श्रीकृष्ण का गोपियों और गोप बालाओं के साथ नृत्य ईश्वर का अपने भक्तों के साथ नृत्य करना माना गया है। उत्सुक तीर्थयात्री मथुरा और वृंदावन के आसपास के स्थानों को देखने जाते हैं। दो मुख्य त्योहारों, होली और जन्माष्टमी के समय मथुरा और वृंदावन में भारतीय और विदेशी यात्रियों की भीड़ जमा रहती है। यात्रियों और पर्यटकों को मंदिर के आँगन में बहुत से भक्त विशेष रूप से महिलाएँ पूजा के पवित्र भजन गाती मिल जाएँगी। बाँके-बिहारी जैसे लोकप्रिय मंदिरों में तो कभी-कभी अपने प्रभु की स्थिति का आभास करके भक्त ईश्वर की भक्ति में नृत्य करते हुए भी दिखाई देते हैं। इसे बृजभूमि कहते हैं। यहाँ पर श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था, यहीं पर उनका यौवन बीता। यह होली के उत्सव को धूम-धाम से मनाने के लिए भी लोकप्रिय हैं।

नासिक भारत का एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। पौराणिक कथाओं के अनुसार 14 वर्षों के वनवास के दौरान नासिक अयोध्या के राजा राम का अस्थायी निवास था।

प्रयाग जहाँ गंगा और यमुना का मिलन होता है, भारत के प्राचीन तीर्थस्थलों में से एक है। प्रयाग इलाहाबाद (अल्हा के शहर) में स्थित है। ऋग्वेद में प्रयाग की प्रशंसा की गई है। लोकप्रिय कुंभ का मेला भी यहीं आयोजित होता है जहाँ, पवित्र गंगा नदी में भक्त डुबकी लगाते हैं।

टिप्पणियाँ

चित्र 9.4: पवित्र गंगा नदी

जगन्नाथ पुरी - हजारों भक्तगणों द्वारा दिव्य रथ को खींचे जाने के आयोजन को देखने के लिए बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक यहाँ पहुँचते हैं। पुरी हिंदुओं के चार पवित्र धामों (पुरी, द्वारका, रामेश्वरम और बद्रीनाथ) में से एक है।

रामेश्वरम भारतीय उपद्वीप के दक्षिणतम भाग पर स्थित है। यह हिंदुओं का पवित्र स्थल माना जाता है। पुराणों के अनुसार राजा राम ने अपनी पत्नी सीता जी की खोज के दौरान श्रीलंका तक जाने के लिए यहाँ समुद्र पर पुल बनाया था।

चित्र 9.5: रामेश्वरम मंदिर

उ**ज्जैन** शिप्रा नदी के पूर्वी तट पर स्थित है। यह भारत के प्राचीन शहरों में से एक है। यह मध्य प्रदेश के मलवा प्रदेश में स्थित है। प्राचीन काल में उज्जैन ''उज्जयनी'' और ''अवन्ती'' नाम से जाना जाता था।

चित्र 9.6: उज्जैन मंदिर

पुष्कर राजस्थान में स्थित है। यह सबसे पवित्र तीर्थस्थलों में से एक है। इस छोटे से नगर में लगभग 500 मंदिर हैं और यह हिंदुओं का सबसे पवित्र स्थान माना जाता है। भगवान ब्रह्मा का एकमात्र मंदिर पुष्कर में ही स्थित है।

चित्र 9.7: पुष्कर

तिरूपति बालाजी मंदिर आंध्र प्रदेश के दक्षिणी भाग के छोटे से चित्तूर जिले में स्थित है। यह भारत का एक लोकप्रिय मंदिर है। यह भारत का सबसे संपन्न मंदिर माना है क्योंकि यहाँ भक्तों द्वारा बहुत अधिक दान किया जाता है।

वैष्णो देवी मंदिर जम्मू से 60 कि. मी. दूर त्रिकुटा की पहाड़ियों पर स्थित है। भारत-भर में यहाँ सबसे अधिक संख्या में भक्त दर्शन और पूजा करने आते हैं।

चित्र 9.8: वैष्णो देवी

पाठगत प्रश्न 9.1

(i) हिंदुओं के लिए बनारस के महत्व का वर्णन संक्षेप में कीजिए।

(ii) मथुरा के धार्मिक महत्व का वर्णन संक्षेप में कीजिए।

(iii) द्वारका, पुरी और सोमनाथ के धार्मिक पारंपरिक मूल्यों का वर्णन संक्षेप में कीजिए।

क्रियाकलाप 9.1

हिंदू देवी-देवताओं तथा धरोहर स्थानों के चित्र एकत्रित कीजिए और अपनी स्क्रैप बुक में चिपकाएँ।

9.2 जैन धर्म

वर्धमान महावीर को जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है। वे जैन धर्म के 24वें तथा अंतिम तीर्थंकर (गुरु) थे। वज्जि की राजधानी वैशाली में उनका जन्म हुआ था। उनके पिता सिद्धार्थ क्षत्रिय वंश के मुखिया थे।

तीस वर्ष की आयु में वर्धमान ने सत्य की खोज में अपना घर त्याग दिया था। उन्होंने सुख और आराम का जीवन त्याग दिया और तपस्वी बन गए। सत्य की प्राप्ति से पहले उन्होंने बारह वर्षों तक तपस्या की। इसी ज्ञानोदय से वे विजयी या जिन कहलाए। इसीलिए उनके अनुयायियों को जैन और उनके दर्शन को जैन धर्म कहा गया है।

92.1 महावीर की शिक्षाएँ

- महावीर ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते थे और उनका यज्ञ, बलि और कर्मकांडों में कोई विश्वास नहीं था।
- वे जाति प्रथा में विश्वास नहीं रखते थे और सभी मनुष्यों को समानता की शिक्षा देते थे।
- उन्होंने अपने अनुयायियों को चार संकल्प लेने के लिए कहा था - (i) जीवन को नुकसान न पहुँचाएँ (ii) झूठ न बोलें (iii) संपत्ति के स्वामी न बनें (iv) चोरी न करें।
- महावीर ने लोगों को त्रिमार्ग का अनुसरण करने के लिए भी कहा - उचित आस्था, उचित ज्ञान और उचित व्यवहार का मार्ग। उनके अनुसार, यही सर्वाधिक उच्च लक्ष्य यानी सिद्ध शिला तथा मोक्ष, दूसरे शब्दों में जन्म व मृत्यु के चक्र से मुक्ति का मार्ग था। महावीर की सबसे मुख्य शिक्षाओं में से अहिंसा एक थी। यदि आप अपने किसी जैन मित्र से बात करेंगे तो वे आपको बताएँगे कि वे मांस नहीं खाते और न ही मांसाहारी भोजन को छूते हैं। इनमें से कुछ तो अपने मुँह में कपड़े का टुकड़ा बाँधे रखते हैं ताकि कोई किटाणु भी उनके मुँह में आकर मर न जाए। महावीर ने अपने उपदेश आम बोलचाल यानि अर्द्ध मागधी या प्राकृत भाषा में दिए, जिससे उन्हें समझना आसान था। लोगों ने उनके द्वारा बताए गए समानता के विषय को भली-भाँति समझा। उनकी मृत्यु के पश्चात जैन धर्म दो संप्रदायों में विभाजित हो गया- दिगंबर और श्वेतांबर। दिगंबरों में वे सम्मिलित हुए जो वस्त्र नहीं पहनते थे और श्वेतांबर में वे सम्मिलित हुए जो सफ़ेद वस्त्र पहनते थे। बहुत से राजाओं ने अपने राज्य में जैन धर्म को अपनाया, विशेष रूप से मगध के शासकों, बिम्बिसार और अजातशत्रु ने। इन शासकों द्वारा जैन कला, वास्तु-कला और साहित्य का संरक्षण किया गया। माउंट आबू स्थित दिलवाड़ा का मंदिर जैनियों का सबसे सुंदर मंदिर है। महावीर ने अपना संपूर्ण जीवनकाल अंग, मिथिला, मगध और कोसला प्रदेशों में उपदेश देते हुए व्यतीत किया। 527 ईसा पूर्व, 72 वर्ष की आयु में राजगृह के पास स्थित पावापुरी में उनका निधन हो गया।

9.2.2 भारत में जैनियों के धार्मिक तीर्थ स्थल

भारत में ऐसे अनेक स्थान हैं जहाँ प्राचीन काल में जैन धर्म के लोगों से जुड़े होने के कारण जैनियों के लिए विशेष महत्व रखता है। यहाँ कुछ ऐसे स्थान हैं जहाँ जैनियों ने इस संसार का त्याग किया और मोक्ष प्राप्त किया, कुछ स्थानों पर धार्मिक कार्यक्रम मनाए जाते हैं, या कुछ लोकप्रिय मंदिर या मंदिरों का समूह है जिनसे तीर्थस्थल बने हैं। जैनियों के अलावा विश्व के विभिन्न भागों से लोग इन धार्मिक धरोहरों के दर्शन करने के लिए आकर्षित होते हैं। जैन धर्म के कुछ प्रमुख धरोहर निम्नलिखित हैं :

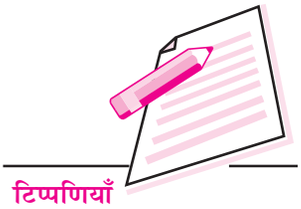

पार्श्वनाथ पर्वत – बिहार में बसा जैनियों का अद्वितीय पवित्र स्थान पार्श्वनाथ पर्वत या सम्मेद शिखर है। ऐसा माना जाता है कि यहाँ 24 में से 20 जैन तीर्थंकरों ने यहाँ देह त्यागा और मोक्ष प्राप्त किया। निचली ढलानों में वनों से घिरे इस आकर्षक चोटी वाले पर्वत का शिखर मंदिरों से ढ़ँका है। बहुत से तीर्थयात्री सभी तीर्थों की यात्रा करने के बाद यहीं आकर अपनी यात्रा का समापन करते हैं। उसके लिए वे इस पहाड़ी के निम्नवर्ती भाग में 30 मील की परिक्रमा करते हैं।

बिहार स्थित पावापुरी बहुत ही सुंदर स्थान है, विशेष रूप से जब यहाँ की विशाल झील पर कमल खिलते हैं। काफी वर्षों से अनगिनत तीर्थ यात्री यहाँ की राख से अपने माथे पर तिलक लगाते हैं। इससे यहाँ पर झील का निर्माण हुआ। यहाँ उस स्थान पर मंदिर की स्थापना की गई है, जहाँ महावीर ने मोक्ष प्राप्त किया था। दूसरा मंदिर उनके दाह-संस्कार वाले जगह पर बना। इस झील में बना टापू पक्की सड़क द्वारा तट से जुड़ा हुआ है। यहाँ जल में उगे सुंदर कमल के फूलों का बहुत ही भव्य नज़ारा दिखाई देता है। महावीर के निर्वाण का स्मरण करते हुए हर वर्ष यहाँ दिवाली का त्योहार बहुत ही उत्साह से मनाया जाता है।

जैसलमेर – राजस्थान स्थित जैसलमेर, जैन पांडुलिपियों और हज़ारों धार्मिक पुस्तकों वाले अपने लोकप्रिय पुस्तकालय के कारण कई विद्वानों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। न केवल विद्वानों बल्कि बहुत से जैन धर्म के अनुयायियों के लिए भी पीले पत्थरों से निर्मित नक्काशीदार भव्य मंदिरों के कारण आकर्षण का केंद्र है।

राजस्थान के रणकपुर में स्थित यह भव्य मंदिर ईसा पश्चात् 15वीं शताब्दी में बनाया गया था। आमतौर पर जैन मंदिर की दीवारें ऊँची होती हैं, इस मंदिर की बाहरी दीवारों के भीतर 40 हज़ार वर्ग फीट पर ऊँचा मंदिर बना है। इस मंदिर में चार कलात्मक द्वार हैं और सफ़ेद संगमरमर से बनी छह फीट ऊँची प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की चार मूर्तियाँ हैं। ये मूर्तियाँ चारों अलग दिशाओं की ओर उन्मुख हैं, इसीलिए इसे चतुर्मुख भी कहा गया है। मंदिर में अनेक खम्बे हैं, जिनकी संख्या 1444 है। यहाँ बने 29 कक्षों में जिस तरफ भी दृष्टि जाती है, खम्बे दिखाई देते हैं। परंतु ये खम्बे और कक्षों को इस तरह बनाया गया है कि कहीं से भी देखने पर बीच-बीच में खुला प्रांगण दिखाई देता है।

राजस्थान में माउंट आबू स्थित **दिलवाड़ा मंदिर** जैन वास्तुकला की उत्तम रचना होने में कोई संदेह पैदा नहीं करता है। यह अपनी सुंदरता और बारीक नक्काशी के लिए भारत में स्थित एक अद्वितीय रचना है। ऐसा कहा जाता है कि इस मंदिर को बनाने में लगे मज़दूरों को मज़दूरी संगमरमर पर काम करने से निकले चूरे के अनुसार भुगतान किया जाता था। यहाँ मुख्य रूप से दो मंदिर परिसर बने हुए हैं। पहला एक धनी व्यापारी विमल शाह ने लगभग 1030 ईसवी में प्रथम तीर्थंकर की याद में बनाया था, जिसका 1322 ईसवी में नवीनीकरण किया गया। इसकी सजावट के लिए एक विशाल कक्ष में 48 स्तंभ लगाए गए हैं। यहाँ बने गोल गुंबद के 11 घेरे में बारी-बारी से मानव व जीव-जंतुओं की अद्भुत प्रतिमाएँ बहुत ही प्रभावशाली हैं। दूसरा मंदिर तीर्थंकर नेमिनाथ को समर्पित है जो 155 फुट लंबा है। इसकी स्थापना वास्तुपाल ने अपने भाई तेजपाल सहित लगभग

टिप्पणियाँ

1230 ईसवी में की। वह गुजरात के राज्य रक्षक का प्रमुख मंत्री था। वह शत्रुंजय और गिरनार सहित पचास से अधिक धार्मिक इमारतों का निर्माण कराने के लिए उत्तरदायी था। प्रत्येक मंदिर परिसर में चारों ओर सुंदर प्रतिमाएँ हैं। यह चारों ओर से दीवारों से घिरा होता है और आधार पर सुंदर प्रतिमाएँ बनी होती हैं। न केवल भव्य मंदिर बल्कि समुद्र तल से 4000 फुट ऊपर का बेहद सुंदर नज़ारा इस स्थान को और भी आकर्षक बना देता है। जैन परंपरा का यह बेहद खास तीर्थ स्थल माउंट आबू की ओर पर्यटकों को आकर्षित करता है।

गिरनार – गुजरात स्थित गिरनार में इतने मंदिर व तीर्थ स्थल पाए जाते हैं कि इसे मंदिरों का नगर माना जाता है। यह इस बात से प्रसिद्ध है कि जहाँ तीर्थंकर नेमीनाथ ने मोक्ष प्राप्त किया था। गिरनार पर्वत के शिखर पर स्थित एक लोकप्रिय मंदिर हज़ार वर्षों से भी अधिक पुराना है। यहाँ के शिलालेखों से पता चलता है कि इसकी मरम्मत 1278 ईसवी में की गई थी। यह आयताकार मंदिर 70 तीर्थंकरों के मूर्तियों से घिरा है। हालाँकि यह सर्वाधिक विशाल मंदिर है परंतु यहाँ अनेक मंदिर हैं जिनमें से एक मंदिर की स्थापना 1231 ईसवी में वास्तुपाल द्वारा की गई थी। इसे 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ को समर्पित किया गया है।

शत्रुंजय गुजरात में स्थित एक प्राचीन पारंपरिक तीर्थस्थल है। ऐसा कहा जाता है कि प्रथम तीर्थंकर ऋषभ और उनके प्रमुख अनुयायी ने यहाँ मोक्ष प्राप्त किया था। नौ दीवारों वाले इस मंदिर के भीतर सैंकड़ों छोटे मंदिर स्थित हैं। 12वीं सदी के मध्य में ऋषभ देव के प्राचीन मंदिर के स्थान पर नवीन मंदिर बनाया गया। 1231 ई में वास्तुपाल द्वारा यहाँ सात मंदिर स्थापित किए गए। कुछ मंदिरों को देखकर पता लगाया जा सकता है कि ये दसवीं शताब्दी के हैं। 17वीं शताब्दी तक आते-आते शत्रुंजय बहुत महत्वपूर्ण स्थल माना जाने लगा था। यह बहुत ही विशिष्ट और लोकप्रिय स्थान बन गया। इस स्थान पर लोग काफी संख्या में दर्शन करने आते हैं। यहाँ का मार्ग समझाने के लिए निर्देश पुस्तकें भी लिखी गई ताकि तीर्थयात्री आसानी से दर्शन कर सकें। हर वर्ष किसी एक दिन यहाँ की 12 मील की यात्रा करने वाले दर्शनार्थियों की संख्या लगभग 20 हज़ार हो जाती है। यह यात्रा बहुत ही कठिन मानी जाती हैं परंतु इसका आंनद इसके संघर्ष को सार्थक बना देता है।

श्रवण बेलगोला – यह मैसूर से 62 मील दूर है। इस पहाड़ी पर 470 फीट की ऊँचाई पर लगभग 500 कदम दूर बाहुबली की विशालकाय प्रतिमा स्थित है। यह 57 फुट ऊँची और कंधे के पास 26 फुट चौड़ी है। लगभग 980 ई में चट्टानों पर नक्काशी करके इसे बनाया गया था। यह विश्व भर में स्वतंत्र रूप से खड़ी सबसे विशाल प्रतिमा है। जैन मंदिर में इस प्रतिष्ठित प्रतिमा को हर दिन स्नान कराया जाता है। श्रवण बेलगोला की प्रतिमा इतनी विशाल है कि स्नान कराने के रीति-रिवाज को केवल चरणों को धोकर पूरा कराया जा सकता है। प्रत्येक बारह से पंद्रह वर्ष के अंतराल में यहाँ बहुत बड़ी मचान भी लगाई जाती है और जल में चंदन, नारियल और चीनी को मिला कर प्रतिमा पर इसकी वर्षा की जाती है।

रणकपुर मंदिर – रणकपुर राजस्थान में स्थित एक छोटा-सा गाँव है। इस मंदिर में बहुत ही भव्य नक्काशी की गई है। यहाँ का वास्तुशिल्प जैनियों की गहरी आस्था एवं इसकी समृद्धि का प्रमाण देता है। यह जैनियों का लोकप्रिय तीर्थ स्थल है।

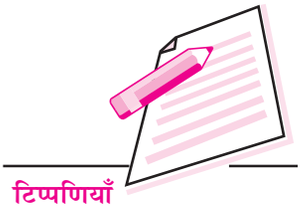

पाठगत प्रश्न 9.2

1. जैनियों के मुख्य संप्रदाय कौन-कौन से हैं?
2. बिहार में पार्श्वनाथ के जैन धरोहरों की महत्ता के बारे में लिखिए।
3. राजस्थान में माउंट आबू स्थित जैन मंदिर क्यों लोकप्रिय है?

क्रियाकलाप 9.2

भारत में स्थित जैन धरोहरों के चित्रों को एकत्रित कीजिए और अपनी कॉपी में चिपकाएँ और इनके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखें। इन्हें भारत के मानचित्र में भी दर्शाएँ।

9.3 बौद्ध धर्म

इस धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध शाक्य वंश के थे। उनके पिता इस वंश के मुखिया थे। ईसा पूर्व 560 में लुंबिनी (बाग) के निकट कपिलवस्तु में गौतम का जन्म हुआ था।

उनके पिता नहीं चाहते थे कि वे संत बनें। उनके पिता उन्हें अपने पास उपलब्ध हर प्रकार के भोग-विलास के साधन दिए।

ऐसा माना जाता है कि एक दिन वे घूमने के लिए निकले और उन्होंने एक वृद्ध, एक बीमार और एक मृत व्यक्ति को देखा। इससे पहले इस राजकुमार ने केवल सुख और खुशियाँ देखीं थीं। वे मनुष्य के दुखों को देख और सह नहीं सके। उन्होंने मोक्ष और सत्य की खोज में अपने घर को त्यागने का निर्णय किया। एक रात जब उनकी पत्नी और बच्चे सो रहे थे, वे चुपके से घर से निकल गए और तपस्वी बन गए।

उन्होंने बहुत से ज्ञानियों से बात की परंतु सत्य को खोज पाने में सफल न हो सके। तब, बोधगया में पीपल के वृक्ष के नीचे उन्होंने बहुत लंबे समय तक ध्यान लगाया। अंत में, उन्होंने दुखों का कारण जाना। फिर वे ज्ञानी बुद्ध बन गए। उन्होंने अपना पहला उपदेश वाराणसी के निकट सारनाथ स्थित मृग उद्यान में दिया था। वहाँ उनके पहले पाँच अनुयायी बने। 80 वर्ष की आयु में बुद्ध ने कुशीनगर में महापरिनिर्वाण (मोक्ष) की प्राप्ति की। गौतम बुद्ध के धार्मिक दर्शन को बौद्ध धर्म कहा जाता है।

9.3.1 बुद्ध की शिक्षाएँ

बुद्ध ने सिखाया कि मनुष्य के सभी दुखों का कारण इच्छा है। इच्छाओं को नियंत्रित करना व इस पर विजय पाना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

- इसे अष्टांग मार्ग पर चल कर प्राप्त किया जा सकता है, जिसका अर्थ है- उचित व्यवहार, उचित वाणी, उचित कर्म, जीविका का उचित साधन, उचित प्रयास, उचित सचेतन, उचित ध्यान, उचित संकल्प और उचित दृष्टिकोण। बुद्ध ने साधारण व्यक्तियों की भाषा में अपनी बात समझाई, जैसे पालि और प्राकृत भाषा में। उन्होंने जीवन के गुणों और नैतिक मूल्यों पर ध्यान दिया।

बौद्ध धर्म एक संगठित धर्म है। बौद्ध भिक्षुओं के लिए संघ निर्मित किए गए हैं। भिक्षुओं के रहने के लिए विहार बनाए गए थे। शिक्षा के लिए इन संघों को राज्य का संरक्षण प्राप्त हुआ, जिससे नालंदा जैसे महा विश्वविद्यालय उभर कर आए। बौद्ध धर्म का प्रसार विश्व के कई देशों में हुआ।

इस विषय के विद्यार्थी के रूप में यदि आप पर्यटन को अपना पेशा चुनना चाहते हैं, आपको उन स्थानों से परिचित होना चाहिए ताकि आप यात्रियों और दर्शकों को इन स्थानों और इनके महत्व के बारे में बता सकें। अत: अब हम भारत के बौद्ध तीर्थ स्थलों के बारे में जानेंगे।

9.3.2 भारत के बौद्ध धरोहर/स्थान

सारनाथ : वाराणसी से केवल कुछ मील दूर सारनाथ में बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना पहला उपदेश दिया था। सारनाथ में स्तूपों के अवशेष मिलते हैं। यहाँ स्थित मुख्य तीर्थ सारनाथ संग्रहालय के सामने मौर्य राजवंश के राजा अशोक द्वारा स्थापित स्तंभ हैं। इस संग्रहालय में पाँच आकर्षक प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं। इससे मौर्य और गुप्त राजवंशों के इतिहास का ज्ञान होता है। सारनाथ में धमेख स्तूप भी है। ऐसा माना जाता है कि बुद्ध ने अपना पहला उपदेश यहीं पर दिया था।

अमरावती स्तूप : इसका समय ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी का माना जाता है। इसके अधिकतर अवशेष चेन्नई के संग्रहालय में मिलते हैं। भरहुत स्तंभ का समय भी ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी का माना जाता है और इसके अधिकतर अवशेष कोलकाता संग्रहालय में मिलते हैं।

सांची, मध्य प्रदेश : सांची का मुख्य तोरण आंध्र प्रदेशियों द्वारा (सातवाहन) ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में (अथवा संभवत: इसके बाद) बनवाया था। अमरावती मूर्तिकला की यादें ताज़ा करते हुए नागार्जुनकोंड कभी बौद्धों का एक समृद्ध केंद्र रहा था। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से इस विशाल बौद्ध स्थल के अवशेष संग्रहालय में रखे गए हैं।

हरवानी : जम्मू और कश्मीर स्थित हरवान कभी बौद्धों का संपन्न स्थल माना जाता था। यहाँ स्थापित स्तूपों के अवशेष तथा अनेक प्रतिमाएँ हैं। सजी हुई ये प्रतिमाएँ दोनों रूपों में थीं- नैसर्गिक और अमूर्त। इसमें मानवीय आकृतियाँ भी शामिल हैं- जिनमें नृत्यकार और संगीतकार, घुड़सवार, बातचीत करते जोड़े, पक्षी, जानवर, फूल, बेल और लताओं आदि को भी दर्शाया गया है। सांची अपने स्तूपों, विशालकाय अशोक स्तंभों, मंदिरों, आश्रमों और मूर्तिकलाओं के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। सम्राट अशोक ने यहाँ की सुंदर पहाड़ियों से आकर्षित होकर इस तीर्थ की स्थापना की। उन्होंने यहाँ विशाल स्तूप स्थापित किए। उसके बाद अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रसार करने के लिए बुद्ध के अवशेषों को विश्वभर में अनेक स्तूप स्थापित करने के लिए वितरित किया।

मूल रूप से ये स्तूप कम ऊँचाई के गोलाकार ईंट के बने थे, परंतु आज के स्तूपों से छोटे थे। इनके आधार ऊँचे सीढ़ीदार थे। इसके शीर्ष पर छाते के आकार का पत्थर लगा हुआ था। इन स्तूपों में भगवान बुद्ध के अवशेष रखे थे। बाद में इन स्तूपों का प्रयोग व्यापक रूप से बौद्ध धर्म की स्थापना हेतु बीज रूप में किया जाने लगा।

अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र : ये बौद्धों की मूल गुफ़ाएँ ईसा पूर्व दूसरी और पहली शताब्दी की हैं। गुप्त काल के समय इन गुफ़ाओं में कई चित्र और प्रतिमाएँ बनीं। अजंता की ये गुफ़ाएँ (20°30' उत्तरी अक्षांश तथा 75°40' पूर्वी देशांतर) औरंगाबाद के उत्तर दिशा में 107 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं। लगभग 12 कि.मी. दूर स्थित अजंता गाँव के नाम पर इन गुफ़ाओं का नाम पड़ा। इन गुफ़ाओं की खोज ब्रिटिश सेना की मद्रास रेजीमेंट के एक आर्मी अफसर द्वारा शिकार के दौरान 1819 में की गई। तभी से अजंता की गुफाएँ बहुत लोकप्रिय हो गईं और यह विश्व भर में एक महत्वपूर्ण पर्यटन गंतव्य स्थान बन गया। ये गुफाएँ, अपनी प्रतिमाओं (भित्ति चित्रों) भारतीय कला के उत्तम नमूनों, विशेषरूप से चित्रकारी के कारण प्रसिद्ध हैं।

चित्र 9.9: अजंता गुफाएँ

9.3.3 भागलपुर क्षेत्र में चट्टानों पर नक्काशियाँ

बिहार के भागलपुर और सुल्तानगंज में गुप्त काल (5वीं–7वीं ईसवी) में निर्मित चट्टानों पर नक्काशियाँ बुद्ध को दर्शाती हैं।

नालंदा, बिहार : ईसा पश्चात चौथी से 12वीं शताब्दी काल में नालंदा बौद्ध अध्ययन का महत्वपूर्ण केंद्र था। प्राचीन काल में नालंदा ज्ञान का अभूतपूर्व केंद्र रहा है। विश्व के सर्वाधिक प्राचीन विश्वविद्यालय के खंडहर यहाँ हैं। यह बोधगया से 62 कि. मी. और पटना से 90 कि.मी. दूर दक्षिण में स्थित है। चूँकि बुद्ध अपने जीवनकाल में कई बार नालंदा गए थे, इसीलिए यह बाद में 5वीं से 12वीं शताब्दी के दौरान काफी प्रसिद्ध हो गया। 7वीं शताब्दी में चीन पर्यटक ह्वेनसांग

टिप्पणियाँ

यहाँ ठहरे और शिक्षा प्रणाली की उत्कृष्टता और मठवासियों के जीवन की पवित्रता की विस्तृत जानकारी के बारे में लिखा। उन्होंने प्राचीन काल के इस अद्भुत विश्वविद्यालय के परिवेश और वास्तुशिल्प का जीवंत वर्णन भी किया। यहाँ विश्व के 2000 शिक्षक और 10,000 बौद्ध भिक्षु बौद्ध धर्म पालन करने वाले प्रदेशों से आए और विश्व के प्रथम आवासीय अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में रह कर पढ़ाई की।

उदयगिरी : ईसा पश्चात छठी शताब्दी से रत्नागिरि में स्थित बौद्ध स्थल उदयगिरी कटक (ओडिशा) से बहुत दूर नहीं है। आठवीं शताब्दी में यह बौद्ध कला और दर्शन के वज्रयान संप्रदाय का मुख्य केंद्र बन गया था। सिरपुर और छत्तीसगढ़ में आप आठवीं शताब्दी के बौद्ध मठों के अवशेष देख सकते हैं।

बोधगया : यह बौद्धों के चार प्रमुख पवित्र तीर्थों में से एक है। विश्व-भर से बौद्ध धर्म के अनुयायी बोधगया का दर्शन करना सबसे पवित्र मानते हैं।

बौद्ध धर्म के संस्थापक, गौतम बुद्ध, ने बोधगया में ही पवित्र वटवृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति की थी। बिहार के बोधगया में महाबोधि मंदिर वास्तव में कुषाण काल में ईसा पश्चात दूसरी शताब्दी में ही बनाया गया था परंतु आठवीं से बाहरवीं शताब्दी के मध्य पाल और सेना शासकों ने व्यापक तौर पर इसका नवीनीकरण किया था। इसके बाद, वर्ष 1882 में म्यांमार के बौद्धों ने इसका नवीनीकरण का कार्य किया।

राजगीर मगध के राजाओं की प्राचीन राजधानी थी। राजगीर का अर्थ है- राजा का भवन। यह बौद्धों का महत्वपूर्ण स्थल है क्योंकि यहाँ भगवान बुद्ध ने अपने जीवन के 12 वर्ष बिताए थे।

मठ और विहार : हिमाचल प्रदेश में मैकलोडगंज में दलाई लामा के मंदिर को सुगलाखांग के नाम से जाना जाता है। यहाँ तीन महत्वूर्ण प्रतिमाएँ देखने को मिलती हैं। इसमें शाक्यमुनि यानि बुद्ध की तीन मीटर ऊँची सोने का पानी चढ़ा सुनहरी प्रतिमा भी शामिल है। तिब्बत के बाएं ओर अवलोकितेश्वर और पद्मासंभव या गुरु रिनपोचे की प्रतिमाएँ हैं। ये भारतीय विद्वान थे जिन्होंने आठवीं शताब्दी में तिब्बत के लोगों को बौद्ध धर्म और तंत्र-मंत्र की शिक्षा दी थी। स्पिति में 'की गोंपा' सर्वाधिक विशाल और प्राचीन गोंपा है। यह प्राचीन ठंगकाओं और भित्तिचित्रों के अपने अमूल्य संकलन के लिए प्रसिद्ध है।

कश्मीर घाटी से तिब्बत के पश्चिमी भाग के बीच व्यापार मार्ग पर आपको कई मठ (गोंपा) मिल जाएँगे। इनमें से प्रमुख हैं- लामागुरु स्पिति, "प्यांग, थिकसे, हेमिस आदि। ये तिब्बत और इसके उपनगरों में पाए जाते हैं। ये अधिकतर पहाड़ियों की तीव्र ढलानों पर स्थित हैं। ऐसा माना जाता है कि लद्दाखियों के जीवन में इन मठों का महत्वपूर्ण स्थान है। लेह में मनाए जाने वाले प्रत्येक त्योहार का धार्मिक महत्व है। यह सभी जातियों और धर्मों के लोगों को इनमें स्वतंत्र रूप से भाग लेने के लिए आकर्षित करता है।

तिब्बत के सीमावर्ती क्षेत्रों में हिमाचल के बौद्ध क्षेत्रों जैसे किन्नौर, लाहौल एवं स्पिति में बौद्ध धर्म के स्मरणीय मठ और विहार स्थित हैं।

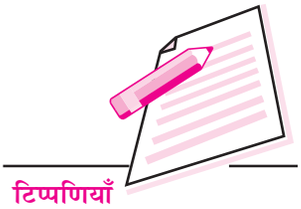

एक अत्यंत लोकप्रिय मठ जिसे पर्यटकों का आकर्षण केंद्र माना जाता है, वह है 'ताबो मठ' जिसे तिब्बती विद्वान और धार्मिक नेता रिन चान सांग पो ने स्पिति नदी के तट पर बनवाया था। एक हज़ार वर्ष से भी अधिक पुराने इस मठ का वातावरण बहुत ही धार्मिक और आध्यात्मिक है। जून 1996 में इसका हज़ारवाँ वर्ष मनाया गया था। पर्यटकों के लिए यहाँ देखने योग्य एक और स्थल है, साराहवी गाँव में बना भीमाकाली मंदिर। परंतु सबसे पुराना धार्मिक स्थल व्यास की गुफ़ा है। यह गुफ़ा जो मार्कंडेय मंदिर में भूमिगत मार्ग के रूप में बनी हुई है। यहाँ संत मार्कंडेय तपस्या करते थे।

सिक्किम में गंगटोक के पश्चिम में रूमटेक मठ में ऐसे देवी-देवताओं का निवास माना जाता है जो सांसारिक चक्र से सचेत करते हैं। चीनियों द्वारा नष्ट किए गए तिब्बती मठ की तरह 1960 के दशक में नया मठ का निर्माण किया गया।

दार्जिलिंग से कुछ ही मील दूर स्थित यिगा-चोएलिंग मठ में ताँबे की तुरही की ध्वनि सुनाई देती है। एक शताब्दी पहले स्थापित इस मठ में भावी बुद्ध यानी मैत्रेय की विशालकाय चमकदार प्रतिमा भी है, जो इस क्षेत्र के लोगों की आस्था को दर्शाती है।

वैशाली : बिहार में एक छोटा-सा शहर है। भारत में वैशाली एक प्रसिद्ध बौद्ध धार्मिक स्थल है। वैशाली का अर्थ है समृद्धि और यह स्थान अपने नाम की तरह ही समृद्ध है।

पाठगत प्रश्न 9.3

1. बौद्ध दर्शन के चार महान सत्यों का वर्णन कीजिए।
2. बौद्ध धर्म के अनुसार कोई व्यक्ति निर्वाण कैसे प्राप्त कर सकता है?

क्रियाकलाप 9.3

- भारत के मानचित्र पर भारत के प्रमुख बौद्ध धरोहरों को दर्शाइए और प्रत्येक के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखिए।
- बौद्ध धर्म से संबंधित जिलों, पर्यटक सर्किट और यात्री रेलों के नामों को ढूँढने का प्रयास कीजिए।

आपने क्या सीखा

- प्राचीन समय में भारत में तीन महत्वपूर्ण और लोकप्रिय धर्मों का उद्गम हुआ है। ये हैं - हिंदू धर्म (ब्राह्मण धर्म), जैन धर्म और बौद्ध धर्म।

- इसके बाद ब्राह्मणों ने वेदों और ब्राह्मण धर्म को बहुत ही जटिल बना दिया। उन्होंने अपने स्वार्थ लाभों के लिए कई रूढ़ि-रिवाज़ों का आरंभ किया।
- इसकी प्रतिक्रिया में नए धर्मों जैसे जैन और बौद्ध धर्म का उदय हुआ। वर्धमान महावीर को जैन धर्म का संस्थापक माना गया।
- जैन धर्म में लोगों को चार संकल्पों के बारे में समझाया। ये हैं- (i) जीवन को नुकसान न पहुँचाना (ii) झूठ न बोलना (iii) संपत्ति पर कब्ज़ा न करना (iv) चोरी न करना।
- महावीर ने त्रिमार्ग का उपदेश दिया। ये उचित आस्था, ज्ञान और सच्चा व्यवहार थे। जैनियों के अनुसार सिद्ध शिला सबसे उच्च लक्ष्य है।
- गौतम बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। बुद्ध के अनुसार इच्छा हर समस्या का कारण है।
- उन्होंने अष्टांग मार्ग का उपदेश दिया, जिसका अर्थ है उचित व्यवहार, वाणी, कर्म, जीविका का साधन, प्रयास, सचेतन, ध्यान, संकल्प और दृष्टिकोण।
- राम और कृष्ण सहित बुद्ध को दस अवतारों में से एक माना जाता है। आप हिंदू, जैन और बौद्ध धर्म के मुख्य धार्मिक तीर्थ स्थलों से परिचित हुए।

पाठांत अभ्यास

1. जैन और बौद्ध धर्म में प्रमुख अंतर को स्पष्ट कीजिए।
2. हिंदू संस्कृति के महत्वपूर्ण मूल्यों की व्याख्या कीजिए।
3. भारत के किन्हीं दस हिंदू धार्मिक धरोहर स्थलों के बारे में वर्णन कीजिए।
4. जैनियों की विभिन्न शिक्षाओं के बारे में चर्चा कीजिए।
5. भारत के मुख्य जैन धरोहर स्थलों पर प्रकाश डालिए।
6. बौद्ध संस्कृति की मुख्य विशेषताओं की चर्चा कीजिए।
7. भारत के दस सुप्रसिद्ध बौद्ध धरोहर स्थलों की सूची बनाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1

1. यह वह स्थान है जहाँ हिंदू मोक्ष प्राप्त करने के लिए मृत्यु को प्राप्त करना चाहते हैं। यह भगवान विश्वनाथ (शिव) के मंदिर तथा शिक्षा के केंद्र के रूप में जाना जाता है।

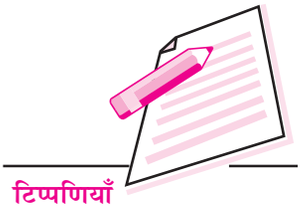

2. यह भगवान कृष्ण का जन्मस्थान है।

3. इन मठों की स्थापना आदि शंकराचार्य द्वारा किया गया।

9.2

1. जैनियों के दो संप्रदाय हैं- क. दिगंबर ख. श्वेतांबर

2. राणकपुर में ऋषभदेव की संगमरमर से बनी लोकप्रिय प्रतिमा है और गिरनार में अन्य तीर्थंकर नेमिनाथ की।

3. माउंट आबू, राजस्थान दिलावाड़ा के जैन मंदिर के लिए प्रसिद्ध हैं जो जैन वास्तुकला की उत्तम रचना हैं।

9.3

1. उचित आस्था, उचित व्यवहार, उचित वाणी और उचित ज्ञान।

2. अष्टांग मार्ग का अनुसरण करके कोई व्यक्ति मोक्ष प्राप्ति के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

टिप्पणियाँ

10

भारत में संस्कृति और धरोहर – II: सिख, इस्लाम और ईसाई धर्म

भारत में धर्म के संदर्भ में वैविध्य पाया जाता हैं- हिंदू, इस्लाम, सिख, जैन, बौद्ध और ईसाई धर्म। लोग अपने-अपने धर्म और संस्कृति का अनुसरण करते हैं तथा ईश्वर की पूजा अपने-अपने ढंग से करते हैं।

धर्म और अध्यात्म की यह संपदा पूरे देश में देखी और महसूस की जा सकती है। इसलिए यहाँ बहुत-सी यात्राएँ धर्म से जुड़ी होती हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि भारत में लोग अपने सांसारिक जीवन और अगले जन्म को अच्छा बनाने के लिए अपने इष्ट से संवाद में लगे रहते हैं।

इसलिए यहाँ अनगिनत मंदिर, मस्ज़िद, गुरुद्वारा, चर्च और तीर्थ-स्थलों का पाया जाना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है, जहाँ पर लोग महत्वपूर्ण अवसरों पर जाते हैं। ऐसा इसलिए है कि धर्म मानव जाति के लिए सर्वव्यापक एवं नैसर्गिक आकर्षण है और लोग विशेष रूप से अपने धर्म से जुड़े रहते हैं। इस पाठ में हम आपको यह जानकारी देंगे कि किस प्रकार पर्यटन उद्योग में धार्मिक स्थलों का उपयोग तीर्थयात्रा के लिए किया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- सिख धर्म और इसकी मूल शिक्षाओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- सिख तीर्थस्थलों के प्रमुख केंद्रों की सूची बना सकेंगे;
- इस्लाम और इसकी मूल शिक्षाओं पर चर्चा कर सकेंगे;
- प्रमुख मुस्लिम धार्मिक पर्यटन स्थलों; जैसे - सूफ़ी दरगाहों की सूची बना पाएँगे;
- ईसाई धर्म और इसकी मूल शिक्षाओं का वर्णन कर पाएँगे;
- प्रमुख ईसाई चर्चों को पर्यटकों के आर्कषण-केंद्रों के रूप में सूचीबद्ध कर पाएँगे।

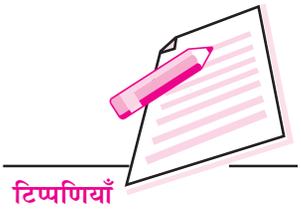

टिप्पणियाँ

10.1 सिख धर्म और इसकी मूल शिक्षाएँ

सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक का जन्म 1469 में पाकिस्तान में लाहौर के निकट तलवंडी में हुआ था। वे भक्ति आंदोलन के महानतम संतो में से एक थे। 'सिख' शब्द की व्युत्पति संस्कृत के 'शिष्य' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है 'अनुयायी'।

सिख अपने दस गुरुओं के अनुयायी हैं। गुरु नानक (1469–1539) इनके प्रथम और गुरु गोविंद सिंह (1666–1708) अंतिम गुरु थे। गुरु नानक ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत और फ़ारसी में प्राप्त की थी।

1496 में उन्हें असाधारण आध्यात्मिक अनुभव (ज्ञानोदय) हुआ। जिसके बाद उन्होंने प्यार और भाईचारे के संदेश को प्रसारित करने के लिए बड़े पैमाने पर यात्राएँ कीं। मुस्लिम संगीतकार मरदानाजी और हिंदू किसान भाई बाला उनके साथ थे। ये तीनों उपदेश देने के लिए गाँव–गाँव गए। गुरु नानक कीर्तनों, भजनों और रागों के माध्यम से उपदेश देते थे और उन्हें सुनने के लिए लोगों की भीड़ एकत्रित हो जाती थी। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष अपने परिवार के साथ करतार पुर गाँव में बिताए। उनके भजनों और गीतों को एक पुस्तक में संकलित किया गया था जिसका नाम 'आदि ग्रंथ' है। उन्होंने 'संगत' (लोगों का एक साथ बैठकर गुरु को सुनना) और 'पंगत' (लोगों का एक साथ बैठकर लंगर या नि:शुल्क भोजन करना) की स्थापना की।

? क्या आप जानते हैं

गुरु नानक का जन्म स्थान ननकाना साहिब के नाम से प्रसिद्ध है। गुरु नानक के नाम पर इसका नाम बदल कर ननकाना रखा गया। यहाँ पर स्थित कई धार्मिक स्थल गुरु नानक के बचपन और किशोरावस्था की स्मृति को समर्पित हैं। अपने निधन के कुछ दिन पहले, उन्होंने अपने अनुयायियों की एक सभा बुलाई और अपने शिष्य अंगद को अपना उत्तराधिकारी चुना। गुरु अंगद ने 'आदि ग्रंथ' का संकलन किया। क्रम में अन्य गुरु थे – गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरगोविंद, गुरु हर राय, गुरु हरकिशन, गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविंद सिंह। अंतिम गुरु ने सिखों को अनुशासित और खालसा कहलाई जाने वाली फौज के रूप में संगठित किया। उन्होंने सिख धर्म के पाँच चिह्न स्थापित किए – कंघा, केश (लंबे बाल) कड़ा (लोहे का कंगन) कच्छा (जांघिया) और कृपाण (तलवार या कटार)।

गुरु नानक की शिक्षाएँ

- ईश्वर एक है।
- ईश्वर निराकार है, हरि और गोविंद।
- जातिप्रथा और मूर्तिपूजा का खंडन करना चाहिए।
- अंधविश्वासों की निंदा होनी चाहिए।
- विनम्रता, दान, क्षमा, दया और सच्चाई के गुणों का संचार होना चाहिए।

क्या आप जानते हैं

गुरुद्वारा दमदमा साहिब, 'अस्थायी प्राधिकरण की गद्दी' वास्तव में सिखों के पूजनीय तख़्तों में से एक है। यह वह स्थान है जहाँ सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह भीषण राजनीतिक संकट के कारण कुछ समय के लिए ठहरे थे और उस समय उन्होंने शांत चित्त के साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में महत्वपूर्ण छंद जोड़ने का काम किया।

10.2 सिखों के सर्वाधिक पवित्र तीर्थस्थल और धरोहर

10.2.1 तख़्त

सिखों के पूजा स्थलों को 'तख़्त' के नाम से जाना जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'दिव्य शक्ति की गद्दी' और गुरुद्वारा का अर्थ है– 'गुरु का द्वार'। भारत में कई गुरुद्वारे हैं, परन्तु तख़्त केवल पाँच हैं। कुछ महत्वपूर्ण गुरुद्वारों और तख़्तों में स्वर्ण मंदिर, गुरुद्वारा रकाब गंज, श्री अकाल तख़्त, श्री पटना साहिब, श्री हजूर साहिब आदि सम्मिलित हैं। सिख धर्म के अनुयायी इन स्थानों पर पवित्र पुस्तक 'गुरु ग्रंथ साहिब' का आशीर्वाद प्राप्त करने आते हैं जो सिखों का आध्यात्मिक ग्रंथ है।

ऐसा कहा जाता है कि 'तख़्त' वे स्थान हैं जहाँ गुरुओं द्वारा अनेक सामाजिक और राजनीतिक समाधान किए जाते थे। पाँच तख़्तों में शामिल हैं–

1. गुरु हरगोबिंद सिंह द्वारा स्थापित श्री अकाल तख़्त।
2. तख़्त श्री केशगढ़ साहिब जहाँ खालसा पंथ का आरंभ हुआ।
3. तख़्त श्री दमदमा साहिब जहाँ गुरु गोविंद सिंह द्वारा 'गुरु ग्रंथ साहिब' का पूर्ण संस्करण लिखा गया था।
4. तख़्त श्री हजूर साहिब जहाँ गुरु गोविंद सिंह ने अपनी अंतिम साँस ली।
5. गंगा नदी के किनारे स्थित तख़्त श्री पटना साहिब।

सिखों के पंच तख़्तों में से एक तख़्त सचखंड श्री हजूर अबचलनगर साहिब, गोदावरी नदी के तट पर महाराष्ट्र के पवित्र नगर नांदेड़ में स्थित है।

10.2.2 गुरुद्वारा

तख़्तों के अलावा, भारत में कई गुरुद्वारे भी हैं जो ऐतिहासिक रूप से सिख तीर्थ स्थलों से संबंधित हैं इसलिए ये तीर्थ यात्रा के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। लाखों लोग विशेष रूप से सिख गुरुओं का स्मरण करने के लिए गुरुद्वारे जाते हैं। अत्यधिक प्रसिद्ध इमारतों में से पंजाब के अमृतसर में स्वर्ण मंदिर, दिल्ली में बंगला साहिब अत्यधिक विशिष्ट हैं। अमृतसर के स्वर्ण मंदिर गुरुद्वारे के शीर्ष पर सुसज्जित सोने के पानी चढ़े गुंबद के कारण इसे स्वर्ण मंदिर कहा जाता है। भारत की अत्यधिक प्रभावशाली और मनोहर इमारतों में से दिल्ली का बंगला साहिब गुरुद्वारा भी सिख धर्म

टिप्पणियाँ

के इतिहास से गहराई से जुड़ा हुआ है। यहाँ हम भारत में सिखों के कुछ और तीर्थ स्थलों के बारे में भी पढ़ेंगे जिनके बारे में आपको ज्ञान होना चाहिए। यह आपके लिए ज्ञानवर्धक होगा।

गुरुद्वारा पाओंटा साहिब जो गुरु गोविंद सिंह जी को समर्पित है। यह हिमाचल के सिरमोर में पाओंटा साहिब शहर में स्थित है। इस परम पूजनीय स्थल पर बड़ी मात्रा में श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। इसका स्थान का नाम पाओंता अर्थात 'पैर' है जो इस स्थान के महत्व को बखूबी दर्शाता है।

गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब सिखों के परम पूजनीय स्थलों में से एक है, जिसे सिखों के नौंवे गुरु, गुरु तेग बहादुर को श्रद्धांजलि देने के लिए बनवाया गया था।

गुरुद्वारा शीशगंज साहिब का निर्माण पुरानी दिल्ली के चाँदनी चौक क्षेत्र में हुआ था। यहाँ 24 नवम्बर 1675, बुधवार के दिन मुग़ल बादशाह औरंगजेब के आदेश पर सिखों के नौवें गुरु तेग बहादुर को यातनाएँ दी गई थीं। इस शहीदी की याद में गुरुद्वारे का निर्माण हुआ और यह शीशगंज साहिब के नाम से जाना जाने लगा।

हेमकुंड साहिब दुनिया के प्रमुख सिख तीर्थ स्थलों में से एक है। यह प्रसिद्ध तीर्थ स्थल समुद्र तल से 15200 फीट की ऊँचाई पर जिला चमोली, उत्तराखंड, भारत में स्थित है। यहाँ गोविंद घाट से पैदल पहुँचा जा सकता है। यह एक प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल है, इस दुर्गम स्थल तक पहुँचने के लिए लोग ऊँचे और बुलंद हिमालयं की यात्रा करते हैं।

पटना साहिब गुरुद्वारा सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह को समर्पित है। यह गंगा किनारे स्थित है। होली के दौरान मार्च में यह गुरुद्वारा असंख्य श्रद्धालुओ से भर जाता है। इस स्थान पर असंख्य श्रद्धालु यात्रा पर आते हैं।

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर सिखों का अत्यधिक पवित्र स्थल माना जाता है। इस नगर की स्थापना 1577 में सिखों के चौथे गुरु, गुरु रामदास ने अकबर द्वारा उपहार में दी गई भूमि पर की थी। पाँचवे गुरु अर्जुन देव ने गुरुद्वारे को पूर्ण करवाया। जब महाराजा रणजीत सिंह ने गुरुद्वारे के ऊपरी आधे भाग पर पहले ताँबे और फिर शुद्ध सोने का पानी चढ़वाया तबसे इसको स्वर्ण मंदिर के नाम से जाना जाने लगा।

चित्र 10.1: अमृतसर का स्वर्ण मंदिर

आनंदपुर साहिब भी एक महत्वपूर्ण गुरुद्वारा है। देश के सभी भागों से सिख इस गुरुद्वारे में दर्शन करने के लिए आते हैं। हर वर्ष होली के समय यहाँ होला मोहल्ला मेला लगता है।

अन्य महत्वपूर्ण गुरुद्वारे हैं–कीरतपुर साहिब, डेरा बाबा नानक, पटना साहिब, तरन तारन पर स्थित दरबार साहिब आदि।

पाठगत प्रश्न 10.1

1. सिखों के दस गुरुओं के नाम लिखिए।
2. 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' सिख धर्म से किस तरह संबंधित है?
3. तख़्त क्या हैं?
4. उन पाँच 'क' का वर्णन कीजिए जिन्हें सिख पुरुषों के लिए धारण करना आवश्यक माना गया है।
5. 'लंगर' की अवधारणा का वर्णन कीजिए।

क्रियाकलाप 10.1

भारत के मानचित्र में सिख धरोहर-स्थलों की पहचान कीजिए।

किसी गुरुद्वारे के दर्शन कीजिए और सिखों की धार्मिक गतिविधियों का अवलोकन कीजिए।

10.3 इस्लाम और इसकी मूल शिक्षाएँ

इस्लाम एकेश्वरवादी धर्म है। इस्लाम का शाब्दिक अर्थ है 'शांति और समर्पण'। धर्म के रूप में इस्लाम को हज़रत मोहम्मद द्वारा मक्का में सन् 570 में स्थापित किया गया था।

610 ईसवी में 40 वर्ष की उम्र में हज़रत मोहम्मद को पैग़ंबर (ईश्वर का संदेश लाने वाला) पद प्राप्त हुआ। पैग़ंबर मोहम्मद उस युग में जी रहे थे जब अरब के हर स्थान पर मूर्ति पूजा होती थी। उन्होंने मूर्ति पूजा का विरोध किया। अरब के लोगों ने उन्हें बहुत सताया। हज़रत मोहम्मद और उनके विरोधियों के बीच मूर्तिपूजा को लेकर 13 वर्षों तक विवाद चलता रहा। यहाँ उनको पहला इलहाम अर्थात दिव्य रहस्योद्घाटन हुआ। यह मानवता के लिए खुदा द्वारा दिखाया गया मार्ग है। लेकिन 622 ईसवीं में परिस्थितियों वश उन्हें मक्का से मदीना में प्रवास करना पड़ा। उनके प्रवास को 'हिज़रत' कहते हैं। इस घटना के बाद से हिज़री युग शुरु होता है। 632 ईसवीं में पैगंबर मोहम्मद का निधन हो गया।

नीचे दिए गए क्रम के अनुसार चार सबसे प्रख्यात साथी पैगंबर बने :

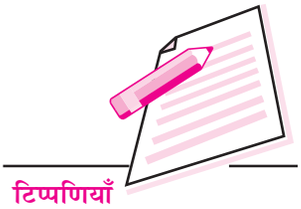

- हज़रत अबु बकर
- हज़रत उमर
- हज़रत उसमान
- हज़रत अली

मुसलमान प्रतिदिन पाँच बार मक्का की ओर मुख करके प्रार्थना करते हैं। एक मुआज़्ज़िन या व्यक्ति लोगों को मस्ज़िद में प्रार्थना करने के लिए बुलाता है। प्रार्थना में एक इमाम लोगों की अगवानी करता है। इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार जो व्यक्ति धनी होता है उसे गरीबों को दान (धन) ज़रूर करना चाहिए। पवित्र रमज़ान के महीने में वयस्क मुसलमान को सूर्य उदय से सूर्यास्त तक व्रत (बिना भोजन और पानी के) ज़रूर करना चाहिए। प्रत्येक मुसलमान को जीवन में एक बार हज या पवित्र शहर मक्का की यात्रा ज़रूर करनी चाहिए। मुसलमानों को नशीले पदार्थों, सुअर के माँस और जुए से दूर रहना होता है।

अरब के व्यापारियों द्वारा इस्लाम भारत में आया। इसके बाद तुर्की आए जिन्होंने भारत में अपनी सल्तनत (राज्य) स्थापित की। सन् 1526 में भारत में मुग़ल शासन की स्थापना हुई। अत: संक्षेप में इसी राजनीतिक प्रक्रिया ने भारतीय उपमहाद्वीप के प्रांतों में इस्लाम और भारत-इस्लामी संस्कृति के प्रसार का नया मार्ग खोला।

भारत में सूफ़ियों ने भारत-इस्लाम संस्कृति और धरोहरों का एक महत्वपूर्ण पहलू सामने लाने में भूमिका निभाई है। सूफ़ी सर्वत्र शांति और भाईचारे में विश्वास रखते थे। उनके रहने के स्थान को दरगाह और खानकाह के नाम से जाना जाता है। भिन्न-भिन्न प्रकार के यात्री उनकी खानकाह में ठहरा करते थे। खानकाह के लोग उनके आराम और सत्कार का ध्यान रखा करते थे। आज भी हज़ारों लोग, विशेषकर सूफ़ी शेख़ की पुण्यतिथि के अवसरों पर उनकी खानकाह में जाते हैं। यह घरेलू तीर्थस्थल पर्यटन का महत्वपूर्ण भाग है।

दरगाह कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी (दिल्ली) की दरगाह दिल्ली के गाँव महरौली में स्थित है। यहाँ पूरे वर्ष अलग-अलग धर्मों के श्रद्धालुओं की भीड़ रहती है। कुछ श्रद्धालु संत की कब्र के पास धागा बाँधते हैं और अपनी इच्छा पूरी होने पर ही उसे खोलते हैं। कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी का पवित्र स्थान शरद ऋतु में वार्षिक फूलवालों की सैर (फूल विक्रेताओं का उत्सव) का स्थान अब अनेक धर्मों के लोगों का आस्था का एक महत्वपूर्ण उत्सव बन चुका है और दिल्ली में अंग्रेज़ों के खिलाफ राष्ट्रीय आंदोलन का प्रतीक बन चुका है। सन् 1812 में इस उत्सव की शुरुआत तब हुई जब मुगल बादशाह अकबर -II (1808-1837) की पत्नी रानी मुमताज़ महल ने अपने बेटे मिर्ज़ा जहाँगीर, जिसे अंग्रेज़ों द्वारा निष्कासित करने पर इलाहाबाद भेज दिया गया था, के सुरक्षित लौटने पर फूलों की चादर और पंखा दरगाह तथा योगमाया मंदिर, महरौली में भेंट करने का संकल्प लिया था। यह माना जाता है कि दिल्ली के लोग जाति और संप्रदाय की परवाह किए बिना इस मेले में शामिल हुआ करते थे। हिंदू-मुस्लिम एकता को देखते हुए अंग्रेज़ी सरकार ने 1942 में इस उत्सव पर रोक लगा दी थी। परंतु 1961 में प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री जवाहर लाल नेहरू ने इसे पुन: शुरु किया।

हज़रत बल (कश्मीर) धार्मिक लोगों के साथ-साथ उन धर्मनिरपेक्ष पर्यटकों के लिए जो कि इमारतों का सुंदर वास्तुशिल्प देखने की इच्छा रखते हैं, हज़रत बल अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक इमारत

है। डल झील के किनारे स्थित होने से इसकी सुंदरता विशेष रूप से बढ़ गई है। कश्मीर में बल्बाकार गुम्बद वाली यह एकमात्र मस्ज़िद है। मुस्लिम लोगों के लिए यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ पैगम्बर मोहम्मद के पवित्र केश हैं। यह पवित्र स्थान कई नामों से जाना जाता है; जिनमें हज़रतबल, असर-ए-शरीफ़, मदीनात-उस सैनी और दरगाह शरीफ़ शामिल हैं। यह कश्मीर का बहुत बड़ा पर्यटक स्थल है।

चरार-ए-शरीफ़ (कश्मीर) शेख़ नुरूद्दीन ऋषि (14वीं शताब्दी) का मक़बरा है जो श्रीनगर से 32 कि. मी. दूर चरार में स्थित है। ऋषि एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है साधु। नुरूद्दीन के बाद ऋषि शब्द का जुड़ना हिंदू-मुस्लिम संस्कृति के समन्वय को बताता है। नुरूद्दीन ऋषि के साथ लल्ला या लल द्य एक शैव संत हिंदु-मुस्लिम परंपरा और रिवाज़ों के संकीर्ण बंधनों से स्वतंत्र थे और लोगों के फायदे के लिए पेड़ लगाने में विश्वास करते थे। वे इसे अपना धर्म मानते थे। ये लोग जनता में इतने प्रसिद्ध हुए कि कश्मीर की धरोहर शेख़ नुरूद्दीन और लल द्य के पदों में इस प्रकार प्रदर्शित हुई-

हम एक ही माता-पिता की संतान हैं,

तब क्यों हमें एक दूसरे से भिन्न होना चाहिए,

हिंदु और मुसलमानों (दोनों को एकसाथ मिलकर) को अकेले-अकेले ईश्वर से प्यार करने दो,

हम इस संसार में साझेदार की तरह आते हैं,

हमें अपने सुखों और दुखों को आपस में बाँटना चाहिए।

शेख़ गेसु दराज़ एक चिश्ती संत थे जिन्होंने 13वी शताब्दी में मैसूर के गुलबर्ग में ख़ानकाह की स्थापना की। गेसू दराज को 'ख्वाज़ा बंदा नवाज़' के नाम से भी जाना जाता है। 'बंदा नवाज़' की उपाधि शेख़ मोइनुद्दीन चिश्ती की उपाधि 'गरीब नवाज़' के समान है। उनकी दरगाह तीर्थयात्रा का प्रसिद्ध स्थान है और भारत-अरबी वास्तुशिल्प की शैली में बनाई गई है। इसकी दीवारों और गुम्बदों पर ईरानी और तुर्की चित्रकारी भी की गई है।

पाठगत प्रश्न 10.2

1. इस्लाम भारत में कैसे आया?
2. इस्लाम के पाँच स्तम्भ कौन से हैं?
3. मुसलमानों के मुख्य त्योहारों की सूची बनाओ?

क्रियाकलाप 10.2

किसी इस्लामी धरोहर स्थल पर जाइए और अपने अवलोकन के आधार पर रिपोर्ट लिखिए कि मस्ज़िद में प्रार्थना किस तरह की जाती है?

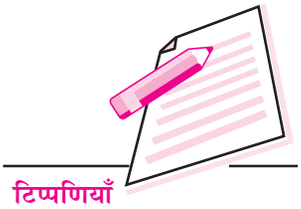

10.4 दरगाह – पर्यटकों का आकर्षण

दरगाह किसी प्रतिष्ठित धार्मिक व्यक्ति – प्राय: सूफ़ी संत या दरवेश की कब्र पर बनाया गया सूफ़ी तीर्थ होता है। मुस्लिम अपनी तीर्थयात्रा में इस पवित्र स्थान पर जाते हैं, जिसे ज़ियारत के नाम से जाना जाता है। दरगाहें अकसर सूफ़ी संतों के बैठने, रहने के स्थान से जुड़ी होती है, जिन्हें ख़ानकाह या आश्रम कहते हैं। इसमें मस्ज़िद, बैठक, इस्लामी धार्मिक विद्यालय (मदरसे) अध्यापक या प्रभारी के लिए निवास स्थान होते हैं। दरगाह फ़ारसी से लिया गया शब्द है, जिसका अर्थ 'प्रवेशमार्ग' या 'द्वार' है। कुछ सूफ़ियों और अन्य मुस्लिम लोगों का मानना है कि दरगाह वह द्वार है जिसके माध्यम से वे मृत संत के लिए हिमायत और आशीर्वाद (तसव्वुफ़) पाने के लिए आह्वान कर सकते हैं। कुछ अन्य लोग दरगाहों के लिए इतने ऊँचे विचार नहीं रखते हैं और इन दरगाहों पर केवल इसलिए जाते हैं कि वे एक धार्मिक व्यक्ति को श्रद्धांजलि दे सकें या इस जगह पर प्रार्थना करके कथित आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर सकें।

प्राय: उर्स के अवसर पर श्रद्धालुओं की उपस्थिति में इन धार्मिक स्थलों पर दरवेशों और शेख़ों के सामने संगीतमय प्रस्तुतियाँ होती हैं। इन्होंने कव्वाली और काफी जैसी शैलियों को प्रोत्साहित किया है, जिसमें सूफ़ी शायरी को संगीतबद्ध करके सूफ़ी आध्यात्मिक प्रशिक्षक–मुर्शिद के समक्ष पेश की जाती है।

इस प्रकार धर्म और संस्कृति की भिन्नताओं के बावजूद दरगाहें पर्यटकों के लिए आर्कषण की स्वाभाविक केंद्र बन जाती हैं।

संसार के हर भाग से लोग धर्म, जाति, पंथ की परवाह किए बिना दरगाहों पर आते हैं और संतों के आशीर्वाद से अपनी इच्छाओं की पूर्ति की प्रार्थना करते हैं। भारत हज़ारों दरगाहों का घर माना जाता है। इस पाठ में ऐसी दरगाहों का वर्णन किया गया है, जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है।

10.4.1 भारत की अत्यधिक प्रसिद्ध दरगाहें

पीर हाज़ी अली शाह बुखारी, मुंबई: हाज़ी अली दरगाह मुंबई के सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित स्थलों में से एक है जोकि अरब सागर के बीच में स्थित है।

चित्र 10.2: पीर हाज़ी अली शाह बुखारी दरगाह

पीर हाज़ी अली शाह बुखारी की उर्स (पुण्यतिथि) रबी-उल-आखिर की 16वीं रबी-उल-थानी की (17वीं शब) को मानी गई है। इसके उद्देश्यों के अनुसार सभी आवश्यक संस्कार इस्लामी परंपराओं के अनुरूप किए जाते हैं और नियाज़ (भोजन/मिठाई) को सभी श्रद्धालुओं, फ़कीरों और आगंतुकों में बाँटा जाता है।

पीर हाज़ी अली शाह बुखारी की उर्स की याद में नमाज-ए-ईशा (17 शब) के बाद हर इस्लामी महीने की सोहलवीं तिथि को एक विशेष कार्यक्रम 'मिलाद' और प्रार्थनाएँ की जाती हैं। ट्रस्ट सभी उपस्थित लोगों को नियाज़ बाँटती है।

हज़रत शेख़ अलाउद्दीन अली अहमद की दरगाह को साबीर दरगाह, कलीयार, रूड़की (उत्तराखंड) के नाम से जाना जाता है : हज़रत शेख़ अलाउद्दीन साबीर कलियारी की दरगाह रूड़की, हरिद्वार में स्थित है। वह हिंदू मुसलमान दोनों के लिए पूजनीय संत थे। लगभग 800 वर्षों से यह दरगाह अस्तित्व में है जहाँ हर वर्ष कलीयार में लाखों लोगों द्वारा उनका उर्स मनाया जाता है।

ख़्वाज़ा मोइन-उ-द्दीन चिश्ती अजमेर : दरगाह शरीफ़ अजमेर शहर के मध्य में स्थित है और देश के हर भाग से यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है। अक्टूबर से मार्च महीने के बीच इस दरगाह पर जाने का सबसे अच्छा समय माना जाता है जब राजस्थान में मौसम ठंडा होता है। दरगाह में वार्षिक उर्स मेला इस नगर का सबसे प्रसिद्ध उत्सव है जो संसार के कोने-कोने से हज़ारों तीर्थ यात्रियों को आकर्षित करता है। यह वह अवसर है जब दरगाह को सबसे सुंदर ढंग से सजाया जाता है और सारा वातावरण उत्सव में बदल जाता है।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया दरगाह, दिल्ली : यहाँ प्रत्येक वर्ष उस सूफ़ी संत का उर्स मनाया जाता है जिनका सूफ़ीवाद रहस्यवादी नहीं था। यही एक कारण है कि आम जनता उन्हें तबसे आज तक ईश्वर का प्रिय कहती है। शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा, प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो, प्रसिद्ध इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बरनी (14वीं शताब्दी) की कब्रें और सम्राट हुमायूँ और उनके पुत्र सम्राट अकबर के प्रिय इनायत ख़ान का मकबरा प्रसिद्ध मकबरे हैं।

चित्र 10.3: निज़ामुद्दीन दरगाह

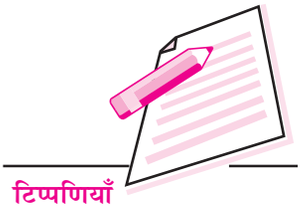

निज़ामुद्दीन दरगाह संध्या के समय, विशेष रूप से गुरुवार के दिन होने वाली नमाज़ के लिए प्रसिद्ध है। संगीतप्रेमी यहाँ कव्वालियों के लिए तथा ईद के उत्सव व हज़रत निज़ामुद्दीन के उर्स को मनाने के लिए एकत्रित होते हैं।

तमिलनाडु में नगोरे स्थित हज़रत सैयद हामिद क़ादिर वली की दरगाह विश्वभर में मुसलमानों का सुप्रसिद्ध केंद्र है।

चित्र 10.4: हज़रत सैयद हामिद क़ादिर वली की दरगाह

यह 500 वर्षों से भी अधिक प्राचीन है और इसके शीर्ष पर सोने का गुंबद है और इसके निकट पाँच मीनारें हैं। पाँच एकड़ की यह प्रसिद्ध दरगाह 16वीं सदी के संत नगोरे अंदावर को समर्पित है जो एक तीर्थकेंद्र के रूप में मानी जाती है। संत को समर्पित कंदूरी उर्स का 14वां दिन जिसे कंदूरी या कंधूरी उत्सव कहा जाता है, यहाँ हर वर्ष मनाया जाता है।

भारत में सुप्रसिद्ध दरगाहें

यहाँ कुछ प्रसिद्ध दरगाहों की सूची दी गई है । आप कुछ अन्य दरगाहों के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं–

1. कुतबुद्दीन बख़्तियार की दरगाह
2. सलीम चिश्ती का मक़बरा
3. इरवाड़ी दरगाह
4. शेख़ चिराग़ दिल्ली की दरगाह
5. करसेरी
6. कट्टूपल्ली
7. काज़ीमार बड़ी मस्जिद
8. मदुरै मक़बरा

9. मनामदुरै मक़बरा
10. मीसल किलावनेरी
11. मेहर अली शाह
12. मेलाक्कल दरगाह
13. मुथुपेट दरगाह
14. पल्लीचंदाई सिलाईमान
15. पीर मोहम्मद दरगाह
16. पिरन कलियार शरीफ़
17. सुंदरामुदायन
18. थाचूरानी
19. तिरुपराकंद्रम
20. तिरुवेदागम
21. वइप्पर
22. वलिनोक्कम
23. चरार-ए-शरीफ़

10.5 ईसाई धर्म और इसकी आधारभूत शिक्षाएँ

संसार के महान धर्मों में से एक धर्म ईसाई धर्म है। यह ईसा मसीह की शिक्षाओं पर आधारित है। लगभग 2000 वर्ष पूर्व ईसा मसीह भूमध्य सागर के पूर्वी छोर के फ़िलिस्तीन क्षेत्र (जो अब जोर्डन और इज़राइल का हिस्सा है) में रहते थे। उन्होंने अपना जीवन गरीबी और अपमान के साथ बिताया। ईसा मसीह ने पैदल यात्राएँ कर लोगों को उपदेश दिया कि मानव को ईश्वर से और एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। बहुत से लोगों ने उनकी शिक्षाओं को माना लेकिन कुछ अन्य ने उन्हें गलत समझा।

अपने अनुयायियों में से ईसा मसीह ने 12 लोगों को अपना प्रचारक चुना। उनके अनुसार ईसा मसीह अपने निधन के तीन दिन बाद दोबारा जीवित हुए थे। तब वह स्वर्ग जाने से पहले 40 दिन तक पृथ्वी पर ठहरे थे। उनके प्रचारकों ने उनकी शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए प्रस्थान किया। उनके प्रचारकों में से सबसे प्रसिद्ध संत पीटर और संत पॉल थे, जिन्होंने बहुत से ईसाई गिरजाघरों की स्थापना की। यीशू के जीवन के बारे में उनकी कहानियाँ बाइबल के न्यू टेस्टामेंट में लिखी गई हैं। प्रारंभिक ईसाई यहूदी थे लेकिन 381 ईसवी में ईसाई धर्म और यहूदी विभाजित हो गए।

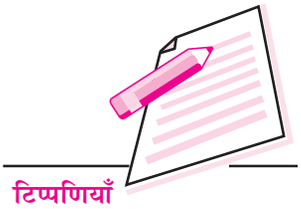

यीशू के अनुयायियों ने 'ग्रीको-रोमन भूभाग' के विभिन्न भागों में यात्राएँ कर बहुत से ईसाई गिरजाघरों की स्थापना की। यह माना जाता है कि यीशू के अनुयायियों में से एक संत थॉमस ने भारत की यात्रा की और मुज़िरिस (पश्चिमी तट) पहुँचे। उन्होंने गिरजाघरों की स्थापना की और भारत में उनके अनुयायी संत थॉमस ईसाई के नाम से जाने जाते हैं।

14वीं शताब्दी के दौरान पुर्तगालियों के भारत आगमन ने ईसाई धर्म के इतिहास में एक नया मार्ग खोला जिसके फलस्वरूप उन्होंने भारत के पश्चिमी तट पर गिरजाघरों की स्थापना की। यह वह समय था जब पुर्तगाली ईसाई मिशन के तहत एक कैथोलिक पादरी फ्रांसिस ज़ेवियर (1506-52) को भारत भेजा गया था। वह पश्चिमी तट पर बहुत से लोगों को ईसाई बनाने में सफल हुआ। बादशाह अकबर ने ईसाई मिशन को अपने गिरजाघर बनाने, अपने धर्म का प्रचार करने और अपने धार्मिक उत्सव मनाने की स्वतंत्रता दी थी।

10.5.1 भारत में ईसाई संस्कृति

ईसाइयों के पूजास्थल को गिरजाघर कहते हैं। ये प्राय: क्रास के आकार में बनाए जाते हैं जिनमें अल्तार (बलिवेदी) सूर्योदय के सामने पूर्व दिशा में होता है। ईसाई आध्यात्मिक नेताओं को पादरी या मिनिस्टर कहा जाता है। ईसाइयों का मानना है कि पादरियों का ईश्वर से विशेष संबंध होता है। बाइबल ईसाइयों की पवित्र पुस्तक है।

ईसाई परंपरा और उत्सव

'ईसाई उपदेशक इस बात को महत्व देते हैं कि मनुष्य की आत्मा का सार प्रेम है और प्रेम का स्रोत ईश्वर है।'

10.6 भारत में ईसाई धरोहर-स्थल

भारत में ईसाई धर्म की बहुत-सी धरोहरें स्थित हैं, जिनमें से आप कुछ प्रसिद्ध धरोहरों के बारे में यहाँ पढ़ेंगे।

सेंट थॉमस माउंट - चेन्नै के दक्षिण पश्चिम में पाँच किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहाँ संत थॉमस को दफनाया गया था। इस पहाड़ी को उनके नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि समतल मैदान से 100 मीटर ऊँची एक वीरान पहाड़ी पर थॉमस को मारा गया था। 1547 में पुर्तगालियों ने इसे प्राचीन नेस्टोरियन चर्च की जगह पर बनाया था, जहाँ माइलापोर कैथेड्रल की नींव रखी गई थी। यह माना जाता है कि पत्थर पर क्रॉस को संत थॉमस द्वारा तराशा गया था और इसी तरह के क्रॉस केरल में भी पाए जाते हैं जहाँ उनके सात धार्मिक स्थल बनाए गए, जो सभी आज शोभायमान हैं। परंपरानुसार क्रॉस को सबसे पहले सार्वजनिक रूप से 18 अगस्त, 1558 में निकाला गया फिर इसके बाद एक अंतराल तक इसे 1704 तक निकाला जाता रहा। यह ईसाइयों के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटक स्थल है।

टिप्पणियाँ

बेसिलिका ऑफ बॉम जीसस, प्राचीन गोवा भारत और विदेश से गोवा आने वाले पर्यटकों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध स्थान है। यह 1605 में बनाया गया था और अब इसे विश्व धरोहर घोषित कर दिया गया है। इस गिरजाघर में गोवा के संरक्षक संत, संत फ्रांसिस ज़ेवियर के पवित्र अवशेष रखे हुए हैं, जिनकी मृत्यु 2 दिसम्बर, 1552 में चीन जाते हुए एक समुद्री यात्रा के दौरान हुई थी। उनकी इच्छानुसार जब अगले वर्ष उनके शव को गोवा हस्तांतरित किया गया तो पाया कि संत का शव उतना ही निर्मल था जितना कि उस दिन जब उन्हें दफ़नाया गया था। यह चमत्कारी घटना हर स्थान के श्रद्धालुओं को निरंतर आकर्षित कर रही है और हर दस वर्षों में उनके शव के सार्वजनिक दर्शन के लिए विश्वभर से लाखों श्रद्धालु आते हैं।

सेंट कैथेड्रल, गोवा धार्मिक और धर्म निरपेक्ष पर्यटकों के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध स्थान है। उनके भक्त कैथेड्रल में रखे क्रॉस के चमत्कारों को सुनकर स्तब्ध रह जाते हैं। लोगों ने उस क्रॉस और चट्टान पर ईसा मसीह के दर्शन का अनुभव किया है, जहाँ पर इस गिरजाघर को पाया गया था।

सेंट फ्रांसिस ऑफ असीसी का बेहद सुंदर सफ़ेद चर्च आज एक पुरातत्व संग्रहालय का रूप ले चुका है। यहाँ आदिवासियों की ऐतिहासिक वस्तुओं को दर्शाया गया है। आरंभ के दिनों में इसे 'पर्ल ऑफ द ओरिएंट' या 'रोम ऑफ द ईस्ट' के नाम से भी जाना जाता था। यह भव्य चर्चों का केंद्र, प्रबल विजयी उपस्थिति का प्रतीक था जो अपने अंतिम उपनाम को सिद्ध करता है। वास्तव में, 1651 में इटली के वास्तुकार द्वारा निर्मित संत कजेतन के चर्च को संत पीटर के वास्लीकेन रोम में लघु रूप दिया गया था। आज यहाँ एक धार्मिक विद्यालय है।

प्रेसबेटेरियन चर्च (रॉस द्वीप, अंडमान) प्रोटैस्टेंट (ईसाई धर्म की एक शाखा) चर्च पत्थरों से निर्मित है और इसकी खिड़कियाँ बर्मा की सागोन लकड़ी से बनी हुई हैं। अल्तार (गिरजाघरों में वह रखी जाने वाला वह मेज़ जिस पर पूजा की सामग्री रखी जाती है) के पीछे इटली के रंगीन सुंदर ढंग से उकेरे हुए काँच लगे हैं। लकड़ी की गुणवत्ता इतनी अच्छी है कि यह सौ वर्षों से भी अधिक समय से हर प्रकार के मौसम में भी सुरक्षित बनी हुई है। चर्च के दक्षिण में पादरी के रहने के लिए एक एक छोटा सा स्थान बनाया गया है।

थॉमस चर्च कोदुन्गल्लूर केरल में स्थित भारत का पहला कैथोलिक गिरजाघर है। यह थॉमस द्वारा निर्मित 7 प्रमुख गिरजाघरों में से एक है और दक्षिण भारत में सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

सेन थॉमस बेसिलिका सोलहवीं शताब्दी का यह गिरजाघर चेन्नै सैन्थोम में स्थित है। इस भारतीय चर्च में चारों ओर लगा हुआ सुंदर रंगीन काँच संत थॉमस के जीवन के विभिन्न चरणों की महिमा और गौरव को प्रदर्शित करता है और यहाँ पर बनी मदर मेरी की प्रतिमा यहाँ की श्रेष्ठतम कृति मानी जाती है। **वेलनकन्नी** तमिलनाडु का सर्वाधिक प्रसिद्ध गिरजाघर है। पोप (रोम का बड़ा पादरी) ने स्वयं इस गिरजाघर को एक पवित्र नगर के रूप में माना है। यहाँ विश्व भर से सबसे अधिक संख्या में ईसाई दर्शन करने आते हैं।

होली क्राइस्ट चर्च उत्तर भारत के सबसे उल्लेखनीय गिरजाघरों में से एक है। यह सबसे प्रसिद्ध गिरजाघर है। यह पीले रंग का गिरजाघर शिमला में रिज़ मैदान पर स्थित है। यह भारतीय फ़िल्मों का प्रसिद्ध शूटिंग का स्थान भी माना जाता है।

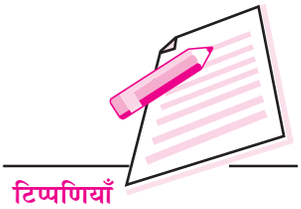

टिप्पणियाँ

सेंट जॉन चर्च उत्तर भारत का सबसे पुराना कैथेड्रल चर्च है। यह प्रसिद्ध 'मानसिक शांति स्थल' से पाँच किलोमीटर दूर मैकलॉडगंज में स्थित है। इसका निर्माण सन् 1852 के आसपास हुआ था। इस चर्च में आने से पूर्ण शुद्धता का एहसास होता है। इसके चारों ओर देवदार के पेड़ हैं और यह बहुत ही सुंदर प्राकृतिक वातावरण में बना हुआ है।

सेंट जेम्स चर्च या स्कीनर चर्च, दिल्ली – यह दिल्ली के प्राचीनतम गिरजाघरों में से एक है जिसे सन् 1836 में कर्नल जेम्स स्कीनर ने कश्मीरी गेट के पास निर्मित किया था। जेम्स स्कीनर के पिता हरक्यूलस भारतीय-ब्रिटिश सेना में थे। उन्होंने एक राजपूत महिला से विवाह किया था। स्कीनर युद्ध में बुरी तरह घायल हो गए परंतु उनकी जान बच गई। उन्हें गिरजाघर बनवाने के संकल्प के लिए जाना जाता है। इस चर्च की मूल बनावट पुनर्जागरण शैली से संबंधित है, जहाँ तीन बरामदे, सुंदर रंगीन काँच की खिड़कियाँ और मध्य में अष्टभुजाकार गुंबद निर्मित है।

सरधना चर्च मेरठ से 19 किलो मीटर दूर स्थित है। यह इसलिए प्रसिद्ध है, क्योंकि इसे बेगम समरू द्वारा निर्मित किया गया था। समरू जर्मन था, जो बंगाल के नवाब सिराजुनैला और रूहेलखंड के नज़फ खान का सेवक था। उसने एक भारतीय महिला जेबुन्निसा से विवाह किया था, जो बेगम समरु के नाम से लोकप्रिय थीं।उन्होंने रोमन कैथलिक धर्म को अपना लिया। अपने पति की मृत्यु के पश्चात उन्होंने यूरोपीय सेना दल का भली-भाँति नेतृत्व किया, जिसके चलते वे अंग्रेज़ों के संपर्क में आईं। वर्तमान समय में चाँदनी चौक स्थित लाला लाजपत राय बाज़ार उनका निवास स्थान था। सरधना में एक सुंदर चर्च का निर्माण करने के लिए भी इनको जाना जाता है। इस चर्च के वास्तु, सौंदर्य और बेहतरीन प्रबंधन के कारण यूनेस्को ने इसे धरोहर-स्थल की मान्यता प्रदान की है। वर्ष में दो बार मार्च और नवंबर माह में हज़ारों धार्मिक पर्यटक मदर मैरी और बेगम समरू को श्रद्धांजलि देने यहाँ आते हैं।

कोहरन थियांगलिम, आइजॉल (मिज़ोरम) उत्तर भारत में मिजोरम की राजधानी आइजॉल में एक समूह (जो स्वयं को 'कोहहरान थियांगलिम' कहता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'पवित्र गिरजाघर') ने एक भव्य संरचना का निर्माण किया जिसे 'सुलेमानी मंदिर' कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि डॉ. एल. बी. सालियो को इस धार्मिक स्थल का निर्माण करने के लिए किसी पवित्र आत्मा द्वारा कहा गया था। उन्होंने बिलकुल उसी तरह का निर्माण कराया, जैसा कि उनसे कहा गया था। इसकी सरंचना, माप, ऊँचाई, आकृति, दरवाज़ों और खिड़कियों की संख्या आदि का जो भी विवरण उस पवित्र आत्मा ने उन्हें दिया, वैसा ही इसे बनवाया गया। इस स्थान का क्षेत्रफल 32400 वर्ग मीटर है। इसे इस तरह निर्मित किया गया है कि यह आंधी और भूकंप आदि विपदाओं से सुरक्षित है। आकाश से देखने पर इसकी आकृति क्रॉस की तरह दिखाई देती है।

भारत में अन्य ईसाई धरोहर स्थल

उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद में स्थित सन् 1870 में बना एंगलीकन कैथेड्रल जो बाहर से लाल और सफ़ेद पत्थरों का बना है और जहाँ पर संगमरमर की सुंदर अल्तार (चर्च में रखा जाने वाला वह मेज़ जहाँ पूजा-सामग्री रखी जाती है।) है, एक अन्य दार्शनिक एवं आध्यात्मिक स्थल माना जाता है।

दिल्ली में देखने योग्य चर्चों में सम्मिलित हैं – सेकरेड हार्ट चर्च और केथेड्रल चर्च ऑफ रिडम्पशन। मुंबई का पहला एंगलीकन चर्च है-सेंट थॉमस का कैथेड्रल चर्च, जो कि धार्मिक पर्यटकों के लिए

एक महत्वपूर्ण स्थल है। **हिमाचल प्रदेश** में आए पर्यटकों के लिए देखने योग्य महत्वपूर्ण गिरजाघर हैं- क्राईस्ट चर्च और सेंट माइकल का कैथेड्रल, सेंट फ्रांसिस का कैथोलिक चर्च, सेंट जॉन चर्च-इन-वाइल्डरनेस और क्राईस्ट चर्च।

पाठगत प्रश्न 10.3

1 भारत में ईसाई धर्म कैसे आया?

2 भारत के दो प्रमुख गिरजाघरों के नाम लिखिए।

क्रियाकलाप 10.3

- किसी ईसाई धरोहर-स्थल पर जाएँ और उसका अवलोकन करने के बाद एक रिपोर्ट लिखिए।
- भारत के नक्शे पर ईसाई धरोहरों की पहचान कीजिए।
- किसी ईसाई परिवार से मिलिए और उनकी संस्कृति पर चर्चा कीजिए तथा उस पर एक रिपोर्ट लिखिए।

आपने क्या सीखा

- सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक का जन्म 146उत्तर9 में पाकिस्तान में लाहौर के निकट तलवंडी में हुआ था। वे भक्ति आंदोलन के महानतम संतों में से एक थे। 'सिख' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'शिष्य' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है अनुयायी।
- सिखों के पूजा के स्थान को 'तख़्त' के नाम से जाना जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'दिव्य शक्ति की गद्दी' और गुरुद्वारा का अर्थ है 'गुरु का द्वार'। भारत में कई गुरुद्वारे हैं परन्तु तख़्त केवल पाँच हैं।
- इस्लाम एकेश्वरवादी धर्म है। 'इस्लाम' का शाब्दिक अर्थ है- 'शांति एवं आत्मसमर्पण'। धर्म के रूप में इस्लाम, सन् 570 में मक्का में हज़रत मोहम्मद द्वारा स्थापित किया गया था।
- दरगाह वह सूफ़ी तीर्थ है, जिसे किसी धार्मिक व्यक्ति - प्राय: सूफ़ी संत या दरवेश की कब्र पर बनाया जाता है।
- ईसाई धर्म को विश्व के महान धर्मों में से एक माना जाता है। यह ईसा मसीह की शिक्षाओं पर आधारित है।

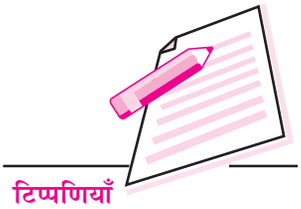

पाठांत अभ्यास

1. सिख धर्म की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।
2. सिख धरोहरों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
3. इस्लामी संस्कृति की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।
4. भारत में पर्यटकों के लिए देखने योग्य सर्वाधिक प्रसिद्ध इस्लामी धरोहरों का वर्णन कीजिए।
5. भारत में ईसाई संस्कृति और परंपराओं की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।
6. भारत की किन्हीं पाँच सुप्रसिद्ध और भव्य ईसाई धरोहरों का वर्णन कीजिए।

पाठगत के प्रश्नों के उत्तर

10.1

1. गुरु नानक देव, गुरु अंगद, गुरु राम दास, गुरु अर्जन देव, गुरु हरगोविंद, गुरु हर राय, गुरु हरकिशन, गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविंद सिंह।
2. 'गुरुग्रंथ साहिब' सिखों की पवित्र पुस्तक है।
3. तख़्तों को वहाँ स्थापित किया गया है जहाँ गुरुओं द्वारा विभिन्न सामाजिक और राजनैतिक समाधान किए गए थे।
4. कंघा, केश, कड़ा, कच्छा, कृपाण।
5. लंगर नि:शुल्क भोजन है।

10.2

1. भारत में इस्लाम अरब उपद्वीप के व्यापारियों द्वारा लाया गया था।
2. (क) पाँच बार नमाज़ (ख) जकात यानी गरीबों को दान करना (ग) रमज़ान के माह में रोज़े रखना (घ) मक्का की तीर्थयात्रा करना और एक निराकार ईश्वर में यानी अल्लाह पर आस्था रखना।
3. ईद-उल-फ़ितर, ईद-उल जुहा, मोहर्रम, ईद मिलाद उन-नबी।

10.3

1. व्यापारियों द्वारा।
2. (क) प्राचीन गोवा में ईसा मसीह की बेसिलिका।

   (ख) चेन्नै में सेंट थॉमस माउंट।

टिप्पणियाँ

11

भारत के सांस्कृतिक आकर्षण

भारतीय संस्कृति के आकर्षण लोगों की जीवन शैली के बारे में बताते हैं। ये उनकी भाषा, धर्म, नृत्य, संगीत, वास्तु, भोजन और रीति रिवाज हो सकते हैं। चूँकि भारत बहुत अधिक जनसंख्या वाला एक विशाल देश है इसलिए एक स्थान की संस्कृति दूसरे स्थान से भिन्न है। भारत बहुत से धर्मों का घर माना जाता है और यहाँ बहुत से उत्सव मनाए जाते हैं। वर्ष के किसी भी महीने में धार्मिक उत्सव होना निश्चित है। फिर चाहे, वह बैसाखी, होली, ईद, महावीर जयंती, बुद्ध पूर्णिमा, गुरु पर्व, दशहरा, दीपावली या क्रिसमस हो। उत्सव हमारे देश की संस्कृति का मुख्य हिस्सा हैं। इन उत्सवों को रंग, उत्साह, उमंग, प्रार्थनाओं और संस्कारों द्वारा वर्गीकृत किया जाता है। विदेशी पर्यटक अक्सर भारत में आयोजित होने वाले मेलों और त्योहारों की विविधता को देखकर प्रभावित होते हैं। इसलिए हमारे देश में सांस्कृतिक घटक पर्यटकों को आकर्षित करने में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

जब विदेशी पर्यटक भारत की यात्रा करते हैं अथवा घरेलू पर्यटक अपने शहर से दूसरे स्थान पर जाते हैं तो उन्हें उन विशेष शहरों और स्थानों पर आयोजित होने वाले मेलों और त्योहारों में अवश्य भाग लेना चाहिए। इस संदर्भ में एक रुचिकर उदाहरण दशहरे का त्योहार है जो कि मैसूर या हिमाचल प्रदेश के कुल्लू में मनाया जाता है। यदि वे दिल्ली में होते हैं तो भ्रमण करने के लिए 14 नवंबर से 27 नवंबर तक प्रगति मैदान में आयोजित होने वाला लोकप्रिय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला एक बहुत ही विशिष्ट स्थान है। यहाँ आप सभी राज्यों द्वारा प्रदर्शित संपूर्ण देश की विभिन्न पैदावारों, धरोहरों और उत्पादों के प्रत्यक्षदर्शी हो सकते हैं। उनके लिए एक अन्य देखने योग्य महत्वपूर्ण मेला प्रतिवर्ष 1 फरवरी से 15 फरवरी तक फरीदाबाद में सूरजकुंड में आयोजित 'सूरजकुंड शिल्प मेला' हो सकता है। इस प्रकार, इस अध्याय में हम भारत के कुछ मेलों और त्योहारों के विषय में अध्ययन करेंगे जिनका भ्रमण पर्यटकों द्वारा किया जाना चाहिए।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- भारत के विविध सांस्कृतिक पक्षों का वर्णन कर पाएँगे;

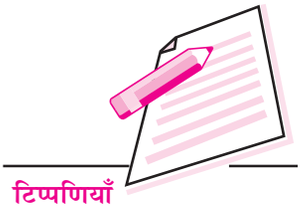

- भारत के प्रसिद्ध मेलों और उत्सवों को उनके प्रांत और महीने जिनमें ये आयोजित होते हैं, उनके सहित सूचीबद्ध कर पाएँगे;
- भारत के महत्वपूर्ण उत्सवों का वर्णन कर पाएँगे;
- पर्यटकों के आकर्षण केंद्र के रुप में मेलों और उत्सवों के महत्व का वर्णन कर पाएँगे;
- ऐसी घटनाओं का वर्णन कर पाएँगे जो हमारी संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा हैं और
- पर्यटकों में लोकप्रिय कुछ व्यंजनों की सूची बना पाएँगे।

11.1 संस्कृति के विभिन्न पक्ष

भारत देश के भीतर एक जगह से दूसरी जगह की भाषा, धर्म, नृत्य, संगीत, वास्तुकला, भोजन और रीति-रिवाज भिन्न हैं। पर्यटक 'गंतव्य स्थलों' की सांस्कृतिक विशेषताओं को जानना एवं उनकी एक झलक पाना चाहते हैं। मेलों और उत्सवों द्वारा हम अपनी संस्कृति का विस्तृत रूप देख सकते हैं। हमारे देश में दो मुख्य प्रकार के उत्सव होते हैं। एक वे जो हमारे देश की प्रमुख घटनाओं से सम्बंधित होते हैं और राष्ट्रीय त्योहार कहलाते हैं और दूसरे वे जो अन्य धर्म और प्रांतों से संबंधित होते हैं। इन दोनों ही कार्यक्रमों में हम अन्य सांस्कृतिक घटकों को जोड़कर इन कार्यक्रमों को जीवंतता और उत्साह प्रदान करते हैं। ये भोजन, खेल, नृत्य और संगीत हो सकते हैं। भारतीय नाचने- गाने या संगीत सुनने और नृत्य की घटनाओं का आनंद लेने का अवसर नही छोड़ते वहीं पर भोजन इन कार्यक्रमों का अत्यधिक महत्वपूर्ण घटक है।

भारत में समय-समय पर आयोजित होने वाले मेले पर्यटकों में उमंग और उत्साह का संचार करते हैं, जिनके कारण वे भारत -भ्रमण करना पसंद करते हैं।

मेले, जहाँ लोगों को एकत्रित कर व्यापार की वस्तुएँ या अन्य समान, जिसमें पशुओं की खरीद-बेच भी शामिल है, दिखाया जाता है। ये मेले अक्सर अस्थायी प्रकृति के होते हैं, जो केवल दोपहर तक या एक पखवाड़े तक समाप्त हो जाते हैं।

त्योहार धार्मिक घटनाओं से जुड़े होते हैं जो कि किसी सम्प्रदाय विशेष की धार्मिक घटनाओं पर केंद्रित होकर मनाये जाते हैं। इन उत्सवों से बहुत सी दिलचस्प कहानियाँ जुड़ी हो सकती हैं। आप कई कहानियों से परिचित होंगे, ऐसी ही एक दिलचस्प कहानी 'ईदगाह' है जो हमारे हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखी गई थी। लेखक एक युवा बच्चे की कहानी का वर्णन करता है जिसे ईद के अवसर पर ईदगाह पर खर्च करने के लिए कुछ पैसे मिलते है, जिनसे वह अपनी दादी के लिए एक चिमटा लाता है। जो यह दर्शाता है कि ईदगाह का बच्चे के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार यहाँ ऐसे स्थान है जहाँ लोग उत्सवों को मनाने के लिए एकत्रित होते हैं। उदाहरण के लिए इलाहाबाद में लगने वाला कुंभ मेला जहाँ भारी भीड़ के कारण बच्चे अपने माता-पिता से बिछुड़ जाते है। ये खोया-पाया की कहानियाँ हमारे भारतीय सिनेमा में भी लोकप्रिय विषय बन जाती हैं।

चूँकि भारत कई धर्मों का घर माना जाता है इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं है कि वर्ष का कोई भी महीना शायद ही ऐसा हो, जिसमें त्योहार न मनाया जाता हो। यदि त्योहारों को मनाया जाता

है तो क्या खुशियाँ और मनोरंजन से वंचित रहा जा सकता है! कुछ उत्सव नृत्य और संगीत के साथ मनाए जाते हैं। उदाहरणत: हमारे देश का लोकप्रिय उत्सव दशहरे पर हर वर्ष मंच पर सुप्रसिद्ध 'राम लीला' का आयोजन किया जाता है। दिल्ली में लाखों लोग इसे देखते हैं। हर वर्ष बड़े औद्योगिक घरानों द्वारा प्रायोजित कई प्रदर्शन होते हैं। रामलीला का मंचन प्रसिद्ध महाकाव्य 'रामायण' को उन भारतीयों में लोकप्रिय बनाने में सहायता करता है, जो इसके बारे में जानना चाहते हैं। इस पाठ में आप पर्यटकों के भ्रमण-योग्य स्थानों एवं उत्सवों के बारे में पढ़ेंगे। यह भी जानना दिलचस्प होगा कि ये उत्सव कब, कहाँ, कैसे और क्यों मनाए जाते हैं, जोकि पर्यटकों को उस स्थान के बारे में जानने एवं उससे जुड़ी घटनाओं को समझने में सहायक होगा।

? क्या आप जानते हैं?

- धर्म आस्था, संस्कृति और विश्व के विचारों का एक संगठित संग्रह है जो मानवता को आध्यात्मिकता से और कभी- कभी नैतिक मूल्यों से जोड़ता है।
- परम्परा एक आस्था या व्यवहार है जो समाज में अतीत में उत्पन्न हुए सांकेतिक अर्थों या विशेष बातों को समाज या समुदायों द्वारा भावी पीढ़ियों में प्रसारित किया जाता है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारे बहुत से त्योहार चंद्र कैलेंडर पर आधारित है। अधिकतर उत्सवों के दिन चंद्र कैलेंडर द्वारा पूर्व निर्धारित तिथियों से निश्चित नहीं किए जाते बल्कि चंद्रमा के घटने -बढ़ने पर आधारित होते हैं। इस्लामिक त्योहार मुस्लिम या हिजरी कैलेंडर के अनुसार मनाए जाते हैं।

मकर संक्राति एकमात्र उत्सव है जो सूर्य पर आधारित है, उत्सव सदा किसी धार्मिक घटना से जुड़े होते हैं जैसे दीपावली को राजा राम के अयोध्या लौटने से जोड़ा जाता है और इसके साथ-साथ अन्य कई घटनाओं के बारे में आप दीपावली के खंड में पढ़ेंगे।

गुरुपर्व, गुरु नानक जी के जन्म आदि एवं अन्य सिख गुरुओं से सम्बंधित है, ये उत्सव धार्मिक उत्साह, आस्था से भरपूर होते हैं, यह समय न केवल अपने ईष्ट की पूजा करने का होता है बल्कि खुशियाँ, आनन्द और उमंग का भी होता है। परिवार और मित्रगण मिलकर नए वस्त्रों, स्वादिष्ट भोजन के साथ एक दूसरे के घर जाकर शुभकामनाएँ देते हुए इन त्योहारों को मनाते हैं। यह भाग हमारे देश के कई उत्सवों व उनके समय, जिन महीनों में ये मनाये जाते है, के बारे में बताता है।

11.2 विभिन्न महीनों में आयोजित होने वाले मेलों और उत्सवों की सूची

जनवरी

- राजस्थान में बीकानेर उत्सव, गुरु गोविंद सिंह जी का जन्मदिवस।
- मदुरई तमिलनाडु में नौका उत्सव, कोवलम केरल का केरल ग्राम उत्सव, पंजाब में एवं उन स्थानों पर, जहाँ पंजाब से आए लोग रहते हैं, लोहड़ी।

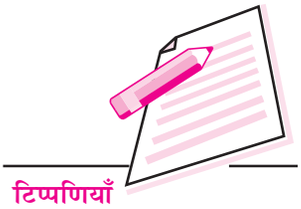

- महाराष्ट्र, कर्नाटक, बिहार, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश और भारत के उत्तरीय प्रांतो में मकर संक्रांति।
- मामलापुरम, तमिलनाडु का मामलापुरम नृत्य उत्सव, मोढेरा, गुजरात के सूर्य मंदिर का मोढेरा नृत्य उत्सव, राजस्थान का नागोर पशु उत्सव।
- अहमदाबाद, गुजरात का राष्ट्रीय पतंग उत्सव, कर्नाटक का पत्तदक्कल नूत्य उत्सव, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में पोंगल, पूरे देश मे मनाया जाने वाला गणतंत्र दिवस।
- उत्तर भारत में सरस्वती पूजा/वसंत पंचमी और पश्चिम बंगाल का जायॅदेव कंदुली मेला।

फरवरी

- बुंदेलखंड, मध्यप्रदेश का खजुराहो नृत्य उत्सव, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश का दक्कन उत्सव।
- जैसलमेर, राजस्थान का मरु उत्सव, ईद-मिलाद-उल-नबी।
- मुम्बई का हाथी उत्सव, गोवा का गोवा कार्निवल, महा शिवरात्रि।
- तिरुवंतपुरम, केरल का निशा गांधी नृत्य उत्सव, चंडीगढ़ में गुलाब उत्सव।
- हरियाणा में सूरज कुंड शिल्प मेला, आगरा, उत्तर प्रदेश का ताज महोत्सव, तमिलनाडु का थाई पूसम।
- उद्यान उत्सव, दिल्ली।
- अंतर्राष्ट्रीय योग सप्ताह, ऋषिकेश, उत्तराखंड।

मार्च

- चापचर कुट, मिजोरम।
- हाथी उत्सव, जयपुर, राजस्थान।
- गुडी पड़वा या उद्गी, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश और कर्नाटक, होली।
- होयसाल महोत्सव, बेलूर-हेलबिद, कर्नाटक, अंतर्राष्ट्रीय फूल महोत्सव, सिक्किम।
- मेवाड़ उत्सव, उदयपुर, राजस्थान, नाट्यांजलि उत्सव, चिदम्बरम, तमिलनाडु, ऐलोरा उत्सव महाराष्ट्र।

अप्रैल

- बैसाखी पंजाब में, असम में बीहू।
- गुड फ्राईडे, ईस्टर, महावीर जयंती, राम नवमी।
- केरल में विशु, बुद्ध पूर्णिमा।

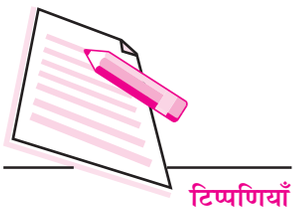

टिप्पणियाँ

मई

- गंगा दशहरा, उत्तर भारत।

जून

- हेमिस महोत्सव लद्दाख और जम्मू कश्मीर में, उड़ीसा में रथ यात्रा।
- लेह, लद्दाख और जम्मू कश्मीर में सिंधु दर्शन महोत्सव, अजमेर, राजस्थान में उर्स।

जुलाई

- आषाढ़ी एकादशी, पंधारपुर, अंतर्राष्ट्रीय आम उत्सव, दिल्ली, चम्पकफम नाव रेस, केरल, गुरु पूर्णिमा।
- नाग पंचमी, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और दक्षिण भारत।

अगस्त

- ईद-उल-फितर, स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी।
- नेहरु ट्राफी बोट रेस, केरल, ओनम, केरल।
- रक्षा बंधन, उत्तरी भारत, तीज, राजस्थान और उत्तर प्रदेश।

सितम्बर

- गणेश चतुर्थी, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और केरल में, तारनेतर मेला, सौराष्ट्र, गुजरात।
- पुणे उत्सव, महाराष्ट्र।

अक्टूबर

- दुर्गा पूजा पश्चिम बंगाल में, दशहरा, दीपावली।
- ईद-उल-जुहा (बकरा ईद)।
- जोधपुर, राजस्थान मे मारवाड़ उत्सव, महात्मा गांधी का जन्मदिवस।
- नवरात्रि पर्व।
- राजगीर नृत्य उत्सव, बिहार।

नवम्बर

- हंपी उत्सव कर्नाटक।

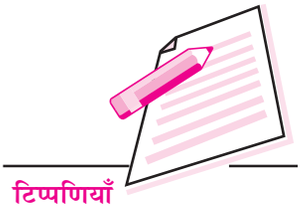

- का पॉमबलैंग नॉंगक्रेम, शिलांग, मेघालय।
- लखनऊ उत्सव, उत्तर प्रदेश, मुहर्रम, पुष्कर मेला, राजस्थान।
- सोनपुर मेला, बिहार, गुरुपर्व, पंजाब।

दिसम्बर

- कार्तिक एकादशी।
- कोणार्क नृत्य उत्सव, उड़ीसा।
- चेन्नई नृत्य और संगीत मेला, तमिलनाडु।
- कुरुक्षेत्र मेला, हरियाणा।
- द्वीप पर्यटन महोत्सव, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, शांति निकेतन, बंगाल मे पोश मेला।
- गंगा सागर मेला, बंगाल सागर मेला, बंगाल विष्णु पुर मेला।

11.3 भारत में त्योहार

भारत में त्योहारों और मेलों का मनाया जाना उत्सवों को अद्भुत एवं आनंदमयी श्रृंखला बनाता है। यह जन्म और मृत्यु के बीच संस्कारों के मार्ग को चिन्हित करता है। ऐसा कहा जाता है कि भारत में वर्ष के दिनों से भी ज्यादा यहाँ के उत्सवों की संख्या है। छोटे स्थानीय गाँव में प्रार्थना और आराधना की रीतियों को उतने ही उत्साह के किया जाता है, जैसे कोई बड़ा उत्सव हो। इन अवसरों पर किसी भी कार्यक्रम में लाखों या उससे भी अधिक लोगों की भीड़ भी आ सकती है। कभी-कभी मेले और त्योहार देवियों, देवताओं, गुरुओं, वीरों, विरांगनाओं, मोहम्मदों और संतों के जन्मदिवसों के स्मरणोत्सव और महान कर्मों के यादगार क्षण हो सकते हैं। इन अवसरों को लोग एक साथ मनाते हैं। भारत के प्रत्येक धार्मिक समुदायों-हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और अन्य में प्रायः ऐसे दिवस मनाए जाते हैं।

भारत के मुख्य धार्मिक-सांस्कृतिक और राष्ट्रीय त्योहार हैं - मकर संक्रांति, बैसाखी, दीपावली, दुर्गा पूजा, दशहरा, ओणम, होली, जन्माष्टमी, करवा चौथ, महा शिवरात्रि, नाग पंचमी, गणेश चतुर्थी, नवरात्रि, पोंगल, रक्षा बंधन, गुरु नानक जयंती, लोहड़ी, ईद-उल-फितर, मोहर्रम, राम नवमी, क्रिसमस, गुड फ्राईडे, महावीर जयंती, कुंभ मेला, बाल दिवस, जमशीद नवरोज़, बुध पूर्णिमा, हेमिस गोमपा आदि। और कई उत्सव हैं, जिनके बारे में आप पहले ही पढ़ चुके हैं।

राष्ट्रीय उत्सवों में गांधी जयंती, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस शामिल हैं। अब हम भारत के इनमें से कुछ उत्सवों के बारे में थोड़ा और विस्तार से पढ़ेंगे।

चित्र 11.1: पर्यटक आकर्षक भारतीय त्योहार

दशहरा

दशहरा सबसे लोकप्रिय भारतीय त्योहारों में से एक है जो हिंदू मास अश्विन (सितम्बर या अक्टूबर) में मनाया जाता है। इस दिन महान हिंदू ग्रंथ 'रामायण' के नायक, भगवान राम ने लंका के दस सिर वाले दुष्ट राक्षस- लंका नरेश रावण, जिसने भगवान राम की पत्नी सीता जी का अपहरण किया था, को परास्त किया था। यह उत्सव कम से कम दस दिनों तक चलता है। लोग बड़े उत्साह के साथ जगह-जगह पर आयोजित रामलीलाओं को देखने जाते हैं। दसवें दिन अर्थात दशहरे पर रावण और उसके भाई कुम्भकरण और पुत्र मेघनाथ के पुतले जलाए जाते हैं। लोग भगवान राम द्वारा बुराई पर विजय प्राप्त करने पर खुशियाँ मनाते हैं। हिमाचल में कुल्लू और मैसूर में दशहरा पर्यटकों में लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध आकर्षण स्थल हैं। ऐसे अवसरों पर कठपुतली का कार्यक्रम, नृत्य, संगीत, झूले, खेल, भोजन की दुकानों पर खरीद-बेच करते लोग, गुब्बारे वाला, चाट वाला ये सब देखे जा सकते हैं।

दुर्गा पूजा

नीले आकाश में सफेद बादलों और शीतल हवा में चुभन, हेमंत ऋतु का आगमन दर्शा रही हो तो समझो कि बंगाल की प्रसिद्ध दुर्गा पूजा का समय आ गया है। भूमण्डलीकरण और व्यावसायीकरण के कारण कई बंगाली लोग देश के विभिन्न भागों में स्थानांतरित हो चुके हैं इसलिए आप प्रमुख केंद्रों पर देवी दुर्गा की पूजा के कई पंडाल देख सकते हैं। वास्तव में यह उत्सव वर्ष में दो बार मनाया जाता है-एक बार मार्च या अप्रैल (वसंत) के महीने में और दोबारा सितम्बर या अक्टूबर मास (अश्विन), चाँदनी पखवाड़े में। दोनों ही अवसरों पर नौ दिनों की पूजा होती है, जिसका संयोगवश अंतिम दिन क्रमशः राम नवमी और दशहरा होता है। प्रथम आयोजन भगवान राम के जन्म से संबंधित होता है और दूसरा रावण, कुम्भकरण और मेघनाथ के भगवान राम द्वारा मारे

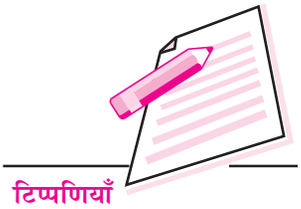

टिप्पणियाँ

जाने से संबंध रखता है। पूरे भारत में देवी माँ कई रुपों में पूजनीय है यद्यपि बंगालियों में सबसे अधिक लोकप्रिय हैं।

दीपावली

दीपावली या रोशनी का उत्सव भारत के सभी हिंदू उत्सवों में से संभवत: सर्वाधिक लोकप्रिय त्योहार है। यह दशहरा के बीस दिन बाद आता है। यह एक आनंदमय उत्सव है, जो भगवान राम द्वारा रावण को मारने के बाद वनवास से वापस लौटने पर मनाया जाता है। लोग अपने घरों को सजाते हैं। भारत का यह उत्सव धार्मिक उत्साह, उमंग और आनंद का प्रदर्शन करता है। दीपावली का यह पर्व देश के कई भागों में समान उत्साह और जोश के साथ मनाया जाता है। ज्यादातर त्योहारों की तरह, यह त्योहार भी भारत में आने वाले पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है।

होली

होली जो सभी हिन्दू त्योहारों में से सबसे अधिक उत्साहपूर्ण उत्सव है, पूरे उत्तर भारत में मनाया जाता है। यह शीत ऋतु के समाप्त होने एवं वसंत ऋतु के आरम्भ होने की जैसे घोषणा करता है और जीवन की जीवंतता को पुनर्जीवित करने का संकेत देता है। यह एक आनंदमय उत्सव है, जब लोग सारे बैर-भाव मिटा कर एक दूसरे को क्षमा कर देते हैं। लोग एक दूसरे पर गुलाल और पानी डाल कर खुशियाँ मनाते हैं। नृत्य और गान इस अवसर के उत्साह में चार-चाँद लगा देता है। मथुरा और ब्रज भूमि के छोटे- छोटे नगरों में जहाँ श्री कृष्ण का स्थान है, वहाँ होली उत्सव का भव्य प्रदर्शन होता है। वर्ष के इस समय पर बहुत से पर्यटक होली उत्सव का आनंद लेने के लिए यहाँ आते हैं।

ईद-उल-फितर

ईद-उल-फितर भारत का सबसे बड़ा मुस्लिम उत्सव है। यह उत्सव जितना अपने समय के लिए महत्वपूर्ण है, उतना ही अपने धार्मिक आशयों के लिए भी है।यह त्योहार शव्वल (हिजरी वर्ष (मुस्लिम वर्ष) का एक मास) के पहले दिन पर, रमजान (उपवास माह और मुस्लिम वर्ष का नवाँ मास) के महीने के बाद मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि रमजान माह में कुरान पैगम्बर मोहम्मद के समक्ष प्रकट हुई थी। रमजान के पूरे मास में उपवास रखा जाता है जोकि हर दिन सूर्यास्त के बाद ही खोला जाता है। बाजारों में खाने-पीने, कपड़ों और उपहारों के लुभावने सामानों की जैसे बाढ़ सी आ जाती है। ईद के अवसर पर लोग नमाज़ अदा करने मस्ज़िद जाते हैं।

मुसलमानों के अन्य मुख्य त्योहार ईद-उल-जुहा और मिलाद-उल-नबी हैं। मोहर्रम, पैगम्बर के पोतों इमाम हसन और हुसैन की शहादत की याद में मनाया जाने वाला शोक समारोह है।

बैसाखी उत्सव

भारत के सबसे उत्साहवर्धक त्योहारों में से एक है- बैसाखी, जिसका उद्गम पंजाब के उत्तरी राज्य से माना जाता है, जिसके लिए कहा जाता है कि देश के सबसे निर्भीक और उल्लास-प्रेमी लोग यहीं रहते हैं। बैसाखी का यह उत्सव वर्ष की पहली फ़सल (रबी फ़सल) के उत्पादन में की गई कड़ी मेहनत का प्रतीक माना जाता है।

महावीर जयंती

जैन पंथ के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्मदिन प्रदर्शनों के बजाय प्रार्थनाओं में समय बिता कर मनाया जाता है। ऐसे स्थान जहाँ जैन लोग बड़ी मात्रा में हैं, जैसे पुरानी दिल्ली और गुजरात, इस अवसर पर वहाँ शांतिपूर्ण जुलूस आयोजित किए जाते हैं, जिनमें बच्चे छोटे-छोटे नाटकों में भगवान महावीर के जीवन के अलग-अलग चरणों का चित्रण करते हैं। इस दिन को नए काम शुरू करने या अन्य सामाजिक गतिविधियों को आयोजित करने के लिए शुभ माना जाता है।

क्रिसमस

क्रिसमस, ईसाइयों का यह उत्सव, ईसा मसीह के जन्म से सम्बंधित है। क्रिसमस हर वर्ष 25 दिसम्बर को मनाया जाता है, इस दिन ईसाई लोग चर्च जाकर भजन एवं प्रार्थनाएँ करते हैं। लोग दूर स्थित अपने मित्रों और सगे सम्बंधियों को शुभकामनाएँ भेजते हैं। लोग अपने घरों को क्रिसमस के पेड़, जिस पर चमकदार लाल सजावटी बल्ब, घंटियाँ, तोरण, सिक्के और उपहार को मोज़ों में डालकर लटकाते हैं, इस तरह से वे पेड़ को सजाते हैं।

क्रिसमस के कुछ दिनों पहले से ही बाजारों में भारी भीड़ जमा हो जाती है। लोग नए वस्त्र, उपहार और सजावट का समान (अपने परिवार के लिए) खरीदते हैं।

केरल और तमिलनाडू में लोग विभिन्न मापों और रंगो वाले तारों जैसी आकृति के कागज़ से बने सुंदर दीयों को अपने घरों के बाहर लटकाते हैं। केरल में तारे की आकृति वाले दीयों पर कटवर्क डिज़ाइन या तरह-तरह के पैटर्न बने होते हैं।

क्रिसमस से एक सप्ताह पहले चर्च, क्लब और विद्यालयों की गायन- मंडली आस-पास के क्षेत्रों में जाना आरम्भ कर देती हैं और लोग उनका स्वागत केक और अन्य खाने-पीने की वस्तुओं से करते हैं। पूरे देश में क्रिसमस के गीत कई स्थानीय भाषाओं में गाए जाते हैं। क्रिसमस का सप्रेम गाया जाने वाला एक प्रसिद्ध गीत है - साईलेंट नाइट, होली नाइट, ऑल इज़ कम, ऑल इज़ ब्राइट। यहाँ हॉली - माँ और पुत्र को कहा गया है अर्थात् ईसा मसीह और उनकी माँ। यह बताना आवश्यक नहीं है कि सभी धार्मिक उत्सवों पर छुट्टी होती है। लोग इन त्योहारों को अपने परिवार के साथ मनाने के लिए अपने घर जाते हैं, जिस कारण भी देश में पर्यटकों की गतिविधियाँ बढ़ती हैं।

गुरुपर्व

गुरुपर्व सिख गुरुओं के जीवन से सम्बंधित होते हैं, ये सिख जीवन शैली के महत्वपूर्ण घटक हैं।

इस उत्सव के दौरान घरों में, गुरुद्वारों में गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ किया जाता है। यह पाठ निरंतर 48 घंटों तक किया जाता है। ऐसी धारणा है कि ग्रंथ साहिब का व्याख्यान जिसे अखंड पाठ कहते हैं, बिना रुकावट के पूर्ण होना चाहिए। वास्तव में इस पाठ को पढ़ने वाले बारी-बारी से पाठ पढ़ते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि पाठ में कोई विघ्न उत्पन्न न हो सके।

गुरुद्वारों में विशेष सभाएँ होती हैं और गुरुओं के जीवन एवं शिक्षाओं पर प्रवचन दिए जाते हैं। आप कस्बों और नगरों के जुलूसों में सिखों को पवित्र शब्दों को गाते हुए देख सकते हैं। प्रतिभागियों

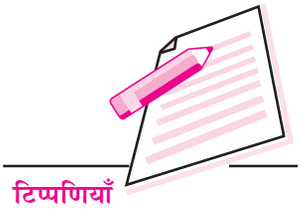

के लिए सामुदायिक भोजन या विशेष लंगरों का आयोजन किया जाता है। इन अवसरों पर आयोजित लंगरों का हिस्सा होना सौभाग्य का सूचक माना जाता है। सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। घर और गुरुद्वारों को रोशनी और दीप मालाओं से प्रकाशित किया जाता है। मित्र और परिवारगण एक दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं।

11.3.1 भारत के राष्ट्रीय उत्सव

राष्ट्रीय उत्सव किसी राष्ट्रीय महत्व की ऐतिहासिक घटना के घटित होने की याद में मनाए जाते हैं। ऐसे उत्सव भारतीय लोगों के मन में मजबूत देशभक्ति की भावना को प्रवाहित करते हैं। भारत में तीन राष्ट्रीय उत्सव मनाता है जिसके बारे में आप यहाँ पढ़ेंगे।

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त 1947): 15 अगस्त के दिन का स्मरण करते हुए, जब भारत को आज़ादी प्राप्त हुई थी, स्वतंत्रता दिवस राज्य की राजधानियों, जिला मुख्यालयों, नगरों और गाँवों खास तौर पर लगभग प्रत्येक विद्यालय में झंडा फहरा कर और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को आयोजित कर मनाया जाता है। दिल्ली में लाल किले पर प्रधानमंत्री का भाषण इस उत्सव का मुख्य आकर्षण है। इस दिन दिल्ली का आकाश हज़ारों पतंगों से अंकित किए हुए बिंदुओं के समान प्रतीत होता है।

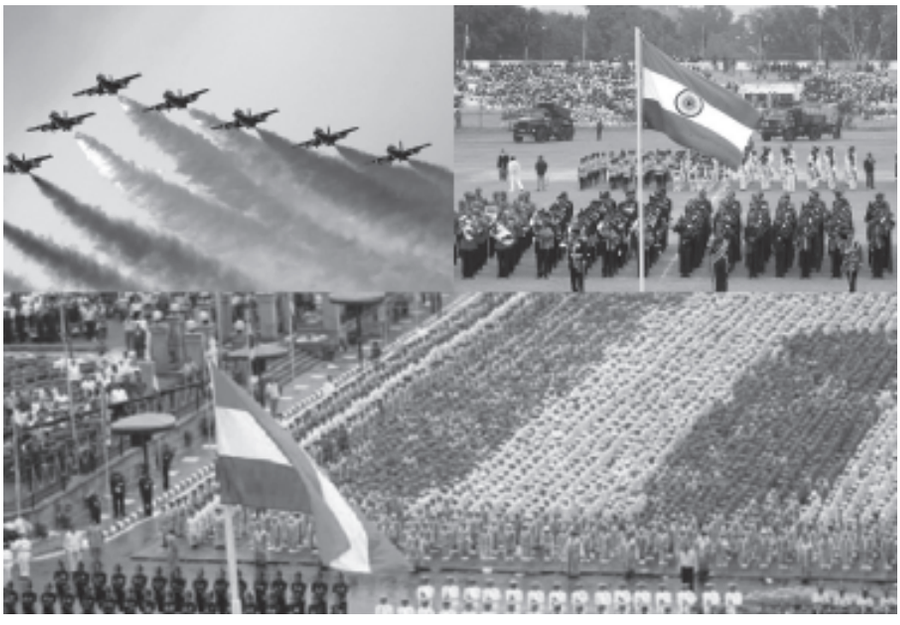

चित्र 11.2: पर्यटक आकर्षक राष्ट्रीय त्योहार

गणतंत्र दिवस – उस दिन को स्मरण करते हुए, जब भारत 26 जनवरी 1950 में गणतंत्र राज्य घोषित हुआ था। प्रत्येक वर्ष, इन कार्यक्रमों में सैनिक एकजुट होकर मार्च करते हैं उसके पश्चात् लोक नर्तक, स्कूल के बच्चे और विभिन्न राज्यों की झांकियाँ प्रदर्शित होती हैं। 29 जनवरी को दिल्ली के विजय चौक पर सैनिकों की वादक मंडली समापन समारोह (बिटिंग रिट्रीट) में वापसी का उद्घोष कर इस उत्सव की समाप्ति को अंकित करती है।

गांधी जयंती: राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिवस की वर्षगांठ, जिनका जन्म 2 अक्टूबर सन् 1869 में हुआ था।

राष्ट्रीय उत्सवों का भव्य आयोजन देश की राजनीतिक एवं सामाजिक-संस्कृतियों के परिदृश्यों का प्रदर्शन करता है। ये पर्यटकों को आकर्षित करता है।

11.3.2 अन्य उत्सव

हेमिस उत्सव, लद्दाख, जम्मू-कश्मीर

यह एक धार्मिक उत्सव है और भारत के बौद्ध मठों के लिए शुभ अवसरों में से एक है। हेमिस गोम्पा का आंगन लद्दाख का सबसे बड़ा बौद्ध मठ है, यह प्रसिद्ध हेमिस उत्सव का स्थान है, जहाँ गुरु पद्मसम्भव के जन्मदिवस का उत्सव मनाया जाता है। स्थानीय लोग इस अवसर पर अपनी परम्परागत पोशाक पहनते हैं। लामा जिन्हे 'छाम' कहा जाता है, झांझ, ड्रम और लम्बे सींगों के साथ आकर्षक मुखौटे लगाकर नृत्य एवं पवित्र नाटक करते हैं। मुख्य लामा कार्यक्रम की अध्यक्षता करता है। यह उत्सव तिब्बती वर्ष के अनुसार प्रत्येक 12 साल में मंगल रुख करता है, जब दो मंजिल ऊँचा 'थंका' पद्मसम्भव के चित्र को प्रदर्शित करता है।

चन्द्रभागा मेला

चन्द्रभागा मेला, जिसे 'मघा सप्तम मेला' के नाम से भी जाना जाता है, फरवरी के आस-पास खंडगिरि, भुवनेश्वर, उड़ीसा में आयोजित होने वाला विशाल मेला है। प्रत्येक वर्ष पूर्णिमा के दौरान पवित्र चंद्रभागा नदी पर प्रमुख मेले और उत्सव का आयोजन किया जाता है। सात दिवसीय मेले के दौरान हजारों श्रद्धालु पवित्र नदी चंद्रभागा में स्नान के लिए एकत्रित होते हैं।

कुंभ मेला

माघ मेला, कुभ मेला, अर्ध कुंभ मेला, गंगा दशहरा, त्रिवेणी महोत्सव आदि सामूहिक तीर्थाटन है, इन अवसरों पर हिंदू गंगा और गोदावरी नदी पर एकत्रित होते है, जहाँ पाप से मुक्ति पाने के लिए स्नान करना पवित्र धार्मिक नियम माना जाता है। 'पाप मुक्त शाश्वत जीवन' यह संकल्प कुंभ मेले के विशाल उत्सव से जुड़ा है। यह ऐसा संकल्प है जिससे लाखों लोग जुड़ना चाहते हैं। इस संकल्प के कारण ही कुंभ मेला आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

कुंभ मेले के साथ एक रोचक कहानी जुड़ी हुई है। ऐसी मान्यता है कि पौराणिक समय में देवताओं एवं राक्षसों ने अमृत भरा कुंभ पाने के लिए समुद्र का मंथन किया था। धनवंतरी, एक वैद्य, अमृत से भरा कलश अपने हाथों में लेकर प्रकट हुए थे, कलश को हथियाने के लिए देवताओं और राक्षसों में भयंकर युद्ध हुआ। भयंकर युद्ध के दौरान आकाश से अमृत की कुछ बूँदें चार अलग-अलग स्थानों, हरिद्वार, नासिक, प्रयाग, उज्जैन में गिर गईं। यह माना जाता है कि ये बूँदें इन स्थानों को कोई रहस्यमयी शक्ति प्रदान करती हैं। यह कुंभ मेला स्वयं को उन शक्तियों को प्राप्त कराने के लिए इन चारों स्थानों में से प्रत्येक पर चिरकाल से आयोजित किया जाता है।

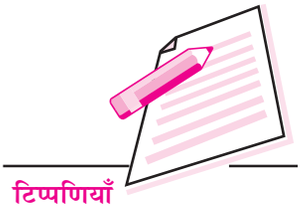

चित्र 11.3 : कुंभ मेला

कच्छ उत्सव

जब गुजरात में शिवरात्रि मनाई जाती है, तब यह उत्सव कच्छ में मनाया जाता है। यहाँ रंग-बिरंगी पोशाकों में नर्तक, संगीत कार्यक्रम, सिंधी भजन कार्यक्रम होते हैं। लांगा मरु संगीत और दुकानों पर बेचे जाने वाले कढ़ाईदार वस्त्र और आभूषण पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

मेवाड़ उत्सव, उदयपुर, राजस्थान

यह वसंत ऋतु के आगमन को स्मरण कर राजस्थानी गीत, नृत्य, भक्ति संगीत, जुलूस और आतिशबाजी का प्रदर्शन कर मनाया जाता है। यह गंगौर उत्सव के दौरान मनाया जाता है। इस उत्सव में रंग बिरंगे वस्त्र पहन कर, माँ गौरी का चित्र लिए महिलाएँ एक जुलूस के रुप में उदयपुर की पिचोला झील की ओर जाती हैं। पर्यटक झील पर नौकाओं का एक असामान्य जुलूस भी देखते हैं।

पूरम त्रिशूर, केरल

केरल के मंदिर में होने वाले उत्सवों में से सर्वाधिक मनोहर उत्सव पूरम माना जाता है। आमतौर पर यह उत्सव अप्रैल में त्रिशूर के भगवान शिव को समर्पित वडक्कमनाथन मंदिर में मनाया जाता है। इस उत्सव में आतिशबाजी का भव्य प्रदर्शन, छतरी प्रदर्शन प्रतियोगिता और भव्य गज जुलूस शामिल है। केरल के कई मंदिरों से राज्य के सर्वश्रेष्ठ हाथी पूरम उत्सव में भाग लेने के लिए त्रिशूर भेजे जाते हैं। हर स्थान से, विशेषकर केरल जिसे देवताओं की भूमि कहा जाता है, में लोगों का इस उत्सव में शामिल होना आश्चर्यजनक नहीं है।

ओणम

केरल का एक अन्य उत्सव ओणम है जो फसल के मौसम का आगमन दर्शाता है। ओणम का उत्सव 10 दिनों तक चलता है। लोग नए वस्त्र पहनते हैं और मंदिरों में जाकर प्रार्थनाएँ करते हैं। लड़कियाँ पीतल के दीपक के चारों ओर नाचते हुए खुले में कलकोटिकलि नृत्य का प्रदर्शन करती हैं। इसका मुख्य आकर्षण चम्पकुलम, अरनमूला और कोट्टयम के अप्रवाही पानी में प्रसिद्ध 'सांप नौका दौड़' है। प्रत्येक नाव में सैकड़ों मल्लाह इस बड़ी और सुशोभित सर्प नौका को नगाड़ों और झांझ की ताल पर महाबली शासन की प्रशंसा करते हुए गीतों को गाते हुए खेते हैं। पूरे राज्य में अलग-अलग जगहों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।

गंगा दशहरा, उत्तर भारत

इस माह के दस दिन माँ और देवी के रूप में पूजी जाने वाली गंगा नदी के पूजन हेतु हिंदुओं द्वारा समर्पित किए जाते हैं। इस अवसर पर नदियों के तट पर स्थित स्थान, जैसे ऋषिकेश, हरिद्वार, गढ़ मुक्तेश्वर, प्रयाग, वाराणसी आदि विशेष महत्व रखते हैं। श्रद्धालुओं की टोलियाँ इन स्थानों की पवित्र नदी में स्नान करने के लिए आती हैं। हरिद्वार में देश के कई भागों से भारी संख्या में श्रद्धालु संध्या समय पर की जाने वाली आरतियों का दर्शन करने एवं नदी किनारे ध्यान लगाने आते हैं।

अमरनाथ यात्रा

तीर्थयात्री कश्मीर में हिमाचल की ऊँची पहाड़ियों के बीच, इस स्थान पर, जहाँ भगवान शिव ने अपनी पत्नी पार्वती को मुक्ति का रहस्य समझाया था, की यात्रा करते हैं। यह बहुत ही दुर्गम क्षेत्र है। केवल पूरी तरह से स्वस्थ लोग ही इस स्थान की यात्रा कर सकते हैं।

खजुराहो नृत्य उत्सव, बुंदेलखंड, मध्यप्रदेश

खजुराहो अपने भव्य मंदिरों के लिए जाना जाता है। आमतौर पर 25 फरवरी से 2 मार्च तक यहाँ शास्त्रीय नृत्य का खजुराहो उत्सव आयोजित किया जाता है। नर्तक, सूर्य देव को समर्पित चित्रगुप्त मंदिर और भगवान शिव को समर्पित विश्वनाथ मंदिर के प्राय: सामने स्थित खुले रंगभवन में प्रदर्शन करते हैं। स्थानीय शिल्पकार खुले बाज़ार में अपना शिल्प प्रदर्शित करते हैं।

बीहू, असम

बीहू या बोहाग बीहू असम के लोगों का सबसे महत्वपूर्ण उत्सव है। यह मध्य अप्रैल में वसंत के स्वागत के लिए मनाया जाता है। प्रथम दिवस पर पशु उत्सव मनाया जाता है। दूसरे दिन, विशेष बीहू व्यंजन के साथ पूर्वजों, सगे-सम्बंधियों और मित्रगणों का आदर-सत्कार किया जाता है। तीसरा दिन अन्य धार्मिक सेवाओं के लिए निश्चित किया जाता है। खेल-कूद, बीहू विशेष नृत्य और

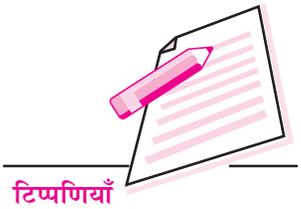

संगीत, मेले आदि बीहू उत्सव के मुख्य भाग हैं। असम के लोग भी जनवरी में माघ बीहू और अक्टूबर में कटी बीहू मनाते हैं।

रथ यात्रा, उड़ीसा

यह अदभुत रथ उत्सव पुरी के प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर में 8 दिनों तक मनाया जाता है। भगवान जगन्नाथ, उनकी बहन सुभद्रा और भाई बलभद्र के चित्र तीन विशाल रथों में रखकर एक जुलूस में ले जाए जाते हैं। हजारों श्रद्धालु इन रथों को खींचकर 3 किलोमीटर दूर गुंड़ीचा मंदिर तक ले जाते हैं। एक सप्ताह बाद, देवताओं की प्रतिमाएँ वैसे ही जुलूस में मुख्य मंदिर की ओर लौट जाती हैं। इसमें प्रयोग होने वाले रथों का निर्माण अप्रैल में ही आरम्भ हो जाता है।

क्रियाकलाप 11.1

अपने अनुसार किसी धर्म का चयन करें। इस धर्म के लोग अपने त्योहारों को मनाने के लिए क्या-क्या करते हैं, जैसे कौन-से रीति-रिवाज़ अपनाते हैं? क्या व्यंजन बनाते हैं? इन सभी की सूची तैयार करें।

पाठगत प्रश्न 11.1

क. सही विकल्प का चुनाव करें-

1. ऐसा कार्यक्रम, जो आमतौर पर स्थानीय समुदायों द्वारा आयोजित किया जाता हो, जो उस समुदाय के किसी विशिष्ट पहलू पर केंद्रित होकर मनाया जाता है, उस उत्सव को कहा जाता है :

   क. परंपरा ख. त्योहार ग. संस्कृति घ. मेला

2. लोगों का समूह जो किसी वस्तु का व्यापार करने अथवा प्रदर्शन करने, पशुओं का जुलूस अथवा प्रदर्शन करने के लिए एकत्रित हो और इससे आमतौर पर मनोरंजन जुड़ा हुआ हो, इसे कहेंगे-

   क. मेला ख. भोज ग. परंपरा घ. त्योहार

3. कौन-सा त्योहार धर्म उत्सव, मनोरम, खुशी और उल्लास से भरपूर गतिविधियों का मिश्रण है?

   क. गुरुपर्व ख. बैसाखी ग. क्रिस्मस घ. रक्षा बंधन

4. उस राज्य का नाम बताइए जहाँ निम्नलिखित त्योहार मनाए जाते हैं?

   क. बीहु ख. बैसाखी ग. रथ यात्रा घ. कच्छ

11.4 मेले: पर्यटक आकर्षण

भारत एक व्यापक और बहुसांस्कृतिक देश है। यह अनेक मेलों का भी देश कहा जाता है जो भारतीय व अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करता है। मेले पर्यटक आकर्षण का महत्पूर्ण स्रोत माने जाते हैं क्योंकि यहाँ उत्सव, मनोरंजन, उत्साह, दर्शनीय कार्यक्रमों के रूप में स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक आकर्षणों का प्रदर्शन किया जाता है। हम यहाँ कुछ मुख्य अंतर्राष्ट्रीय मेलों के बारे में पढ़ेंगे जो प्रत्येक वर्ष दर्शकों की भारी भीड़ को आकर्षित करते हैं।

ये मेले न केवल आनंद और आमोद-प्रमोद का कारण बनते हैं वरन् देश की अर्थव्यवस्था में भी मदद करते हैं। अत: पर्यटक इन मेलों के आसपास हों तो उन्हें देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

भारत में बहुत से मेले धार्मिक होते हैं या ऋतुओं के परिवर्तन पर लगाए जाते हैं। महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों पर कई बड़े मेले लगते हैं। कुंभ का मेला विश्व के सभी धार्मिक मेलों में से सबसे बड़ा मेला है जो भारत के चार तीर्थस्थानों पर आयोजित किया जाता है। भारत में अन्य बड़े धार्मिक मेले हैं- पुष्कर मेला, बानेश्वर मेला, गंगासागर मेला, तरणेतर मेला, चैत्र चौदस मेला, नागुर मेला , अन्य मानसून त्योहार व मेले। कलकत्ता वार्षिक पुस्तक मेला पुस्तकों का तीसरा बड़ा तथा विश्व का सबसे बड़ा गैर-व्यापार पुस्तक मेला है। पटना के पास लगने वाला लोकप्रिय पशु मेला एशिया और विश्व का सबसे बड़ा पशु मेला है।

पुष्कर मेला

यह राजस्थान के प्राचीनतम शहर पुष्कर में अक्तूबर-नवंबर के मध्य लगने वाले विश्व के सबसे बड़े ऊँट मेलों में से एक है। यह विश्व भर से दर्शकों को आकर्षित करता है, विशेष रूप से इज़राइल के पर्यटकों को। यहाँ कई मज़ेदार प्रतियोगिताएँ होती हैं, जैसे- मटका फोड़ प्रतियोगिता, लंबी मूंछ प्रदर्शन की प्रतियोगिता। हॉट एयर बैलून जैसे अनुभवों का मज़ा भी पर्यटक लेते हैं। लोग यहाँ ऊँटों की दौड़ देखने, तंबू लगाने और अन्य कार्यक्रमों के लिए भी एकत्रित होते हैं।

चित्र 11.4 : ऊँट मेला

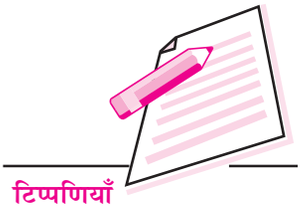

रेगिस्तानी त्योहार

जैसलमेर और नागौर के रेगिस्तानी त्योहार अन्य लोकप्रिय त्योहार हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। जैसलमेर में तीन दिन तक इस उत्सव को रंगों, संगीत और उत्साह के माहौल में मनाया जाता है। यहाँ आने वाले पर्यटक पारंपरिक गीतों पर गैर व अग्नि नृत्यों, ऊँट की सवारी व ऊँट का नृत्य देखने का आनंद लेते हैं। यहाँ पगड़ी बाँधने की प्रतियोगिता भी होती है। बहुत से लोक नर्तक यहाँ अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। यहाँ सपेरे, कठपुतली का नृत्य दिखाने वाले तथा नट भारतीय व अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों का मनोरंजन करते हैं।

सोनपुर मेला

सोनपुर मेला विश्व का एकमात्र ऐसा मेला है। यहाँ लगने वाला हाथी बाज़ार यहाँ का मुख्य आकर्षण केंद्र है, जहाँ हाथियों का व्यापार किया जाता है। इसके अलावा यहाँ भैंसों, गधों, खच्चरों और पक्षियों का भी व्यापार होता है। यह भारत का सबसे बड़ा पशु मेला है जो एशिया के सभी लोगों को आकर्षित करता है।

अंबुवासी मेला

यह तीन-दिवसीय पारंपरिक मेला हर वर्ष मानसून के समय असम में गुवाहाटी स्थित कामाख्या मंदिर में लगता है। देश के विभिन्न स्थानों से श्रद्धालु इस मेले में भाग लेने के लिए आते हैं।

बानेश्वर मेला

फरवरी माह में राजस्थान के डुंगरपुर जिले का आदिवासियों का प्रसिद्ध मेला है। यह एक धार्मिक मेला है जहाँ सादे व पारंपरिक रीति-रिवाज़ों से शिव की साधना की जाती है। यह मेला पड़ोसी राज्यों के बड़ी संख्या के आदिवासियों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यह बहुत लोकप्रिय पर्यटक स्थल बनता जा रहा है। इसको मनाने का आदिवासी तरीका अन्यों से बहुत अलग है और यह देखने योग्य है।

गोआ कार्निवल

गोआ घूमने के लिए दिसंबर, जनवरी और फरवरी का महीना सबसे अच्छा रहता है। यह एक सुंदर राज्य है और बड़ी संख्या में ईसाई रहते हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि क्रिसमस यहाँ बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। गोआ कार्निवल यहाँ का महत्वपूर्ण मेला माना जाता है। मौज-मस्ती, रचनात्मकता, संगीत, नृत्य और अच्छा भोजन इस कार्निवल का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बैंड-बाजों, नृत्यों, गिटार पर संगीत व भरपूर ज़ोर-शोर से पूरे राज्य में एक परेड निकाली जाती है। निश्चय ही यह पर्यटकों के लिए बहुत लोकप्रिय है। इसमें सर्कस के तत्व, मुखौटे और सार्वजनिक खुली पार्टियाँ की जाती हैं। आमतौर पर लोग इस उत्सव के दौरान मुखौटे लगाते हैं। इस कार्निवल में भारत व विश्व-भर से पर्यटक आते हैं।

टिप्पणियाँ

सूरजकुंड क्राफ्ट मेला

यह देश का मुख्य पर्यटक आकर्षण है। यह हरियाणा राज्य के फरीदाबाद जिले के सूरज कुंड में प्रत्येक वर्ष 1 से 15 फरवरी तक आयोजित किया जाता है। यहाँ भारत-भर के प्रतिभावान कालाकारों की कलाकृतियों का प्रदर्शन किया जाता है। यहाँ अधिकतर वस्तुएँ खरीदने लायक और सस्ती होती हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि लाखों दर्शक इस मेले का हिस्सा बनते हैं।

ताज महोत्सव, आगरा, उत्तर प्रदेश

दस दिवसीय, ताज महोत्सव भारतीय शिल्प कलाओं और सांस्कृतिक विविधताओं को एक साथ प्रदर्शित करने का एक जीवंत माध्यम है। प्रत्येक वर्ष शिल्पग्राम में होने वाला 18 फरवरी से शुरू होने वाले इस महोत्सव का बेसब्री से इंतज़ार किया जाता है। यहाँ भारत की व्यापक कलाएँ, शिल्प कलाओं व संस्कृतियों का प्रदर्शन किया जाता है। लोक संगीत, शायरी और शास्त्रीय नृत्य कलाओं के साथ-साथ हाथी और ऊँट की सवारी, खेल और भोजन उत्सव जैसे सभी प्रकार के उत्सव इसका भाग हैं।

अंतर्राष्ट्रीय योग सप्ताह, ऋषिकेश, उत्तरांचल

योग का शाब्दिक अर्थ है- एकता- श्वास और शरीर की, मस्तिष्क और मांसपेशियों की और सर्वप्रमुख आत्म की परमात्मा से एकता। योग के प्राचीन विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए गंगा नदी के तट पर फरवरी-मार्च के माह के दौरान ऋषिकेश के पर्यटन विभाग द्वारा एक सप्ताह लंबे कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। विस्तृत व्याख्यान, योग के अनेक महत्वपूर्ण आसनों का प्रदर्शन इस योग सप्ताह के मुख्य आकर्षण हैं। विश्व में योग की बढ़ती लोकप्रियता के चलते बहुत से पर्यटकों का इसमें भाग लेने और योग सीखने के लिए आना आश्चर्यजनक बात नहीं।

हाथी महोत्सव, जयपुर, राजस्थान

प्रत्येक वर्ष होली से एक दिन पहले, हाथी महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस उत्सव में गहनों और मखमली कार्य वाले वस्त्रों से सजे-धजे व रंगे हाथियों, ऊँटों और घोड़ों का जुलूस निकाला जाता है जिसमें इनकी सवारियों के पीछे लोक नर्तक नाचते हुए जाते हैं। ये सजे-धजे हाथी विशेषज्ञों के आने से और सर्वश्रेष्ठ-सज्जित हाथी के चयन से पहले दर्शकों का स्वागत करते हैं, अतिथियों को फूल-मालाएँ देते हैं और रैंप पर चलते हैं। हाथी दौड़ और हाथियों का पोलो मैच विशेष आकर्षण होते हैं। इस उत्सव का सबसे रोमांचक आकर्षण है- व्यक्ति और हाथी में होने वाला युद्ध।

सिंधु दर्शन उत्सव, लेह, लद्दाख, जम्मू और कश्मीर

सिंधु दर्शन उत्सव सिंधु नदी के उत्सव के रूप में मनाया जाता है, जिसका उद्गम तिब्बत स्थित मानसरोवर झील से हुआ। इस उत्सव में भारत के विभिन्न राज्यों से लोग देश की पवित्र नदियों से मिट्टी के बर्तन में जल लाते हैं और एकत्रित जल को सिंधु नदी में विसर्जित करते हैं। इससे इस नदी का जल अन्य स्थानों से आए जल से मिल जाता है।

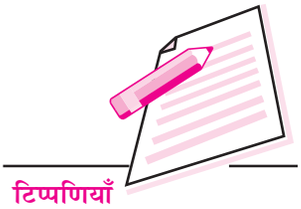

राष्ट्रीय पतंग महोत्सव, अहमदाबाद, गुजरात

मकर सक्रांति के दिन, अहमदाबाद में आसमान में रंग-बिरंगी व विभिन्न आकारों वाली पतंगें उड़ती दिखाई देती हैं। रात के समय उड़ाई जाने वाली कुछ विशेष प्रकार की पतंगों के अंदर दीया जला दिया जाता है जो रात्रि में आसमान को उज्ज्वलित करता है। गुजरातियों के विशेष पकवान, हस्तकलाओं का प्रदर्शन, लोक कला इस उत्सव में चार-चाँद लगा देते हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

चंपाकुलम नौका दौड़, केरल

चंपाकुलम नौका दौड़ से केरल में नौका-दौड़ का मौसम शुरू होता है। चंपाकुलम के सीरिन गाँव में पंबा नदी पर यह नौका दौड़ आयोजित होती है। इस क्षेत्र में आयोजित सर्प नौका दौड़ में धैर्य, फुर्ती और योग्यता की कठिन परीक्षा होती है। प्रत्येक नाव में 90-100 नाव खेने वाले होते हैं जो इस दौड़ में भाग लेने से पहले कई दिनों का कठिन प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

भारत में अन्य लोकप्रिय मेले

रासमेला (बिलासिपारा, असम) ब्रह्मोत्सव (तिरूपति, आंध्र प्रदेश), सोनपुर मेला (सोनपुर, बिहार), सोमनाथ मेला (पटना, गुजरात), गंगोर मेला (सिरसा, हरियाणा), सूरजकुंड मेला (सूरजकुंड, हरियाणा), किसान मेला (करनाल, हरियाणा), देहाती मेला (लदाना, हरियाणा), मिंजार मेला (चंबा, हिमाचल प्रदेश), दशहरा (कुल्लु, हिमाचल प्रदेश), झिरी मेला (झिरी, जम्मू और कश्मीर), कुंडा मेला (परातापुर, झारखंड), दसारा (मैसूर, कर्नाटक), गोडाची मेला (गोडाची, कर्नाटक), हंपी उत्सव (हंपी, कर्नाटक), पूरम उत्सव (त्रिचूर, केरल), मक्कर विलाकु (मालाप्पुरम, केरल), चिरप्पू (कोट्टायम, केरल), ओमाल्लोर मेला (ओमाल्लोर केरल), मगर ज्योति (सबरीमाला, केरल), श्री सुंदरेश्वर (कन्नौर, केरल), उत्सवम (मल्लापुरम, केरल), अरणमुल्ला वालमकली (अरणमुला, केरल), केरल गाँव मेला (कोव्वलम, केरल), कार्तिक मेला (उज्जैन, मध्य प्रदेश), कदम मेला (खड़गपुर, मध्य प्रदेश), ग्वालियर व्यापार मेला (ग्वालियर, मध्य प्रदेश), मकर सक्रांति (उज्जैन, मध्य प्रदेश), निमर उत्सव (महेश्वर, मध्य प्रदेश), कुंभ मेला (नासिक, महाराष्ट्र), शारदा उत्सव (नागपुर, महाराष्ट्र), गणेश महोत्सव (सांगली, महाराष्ट्र), रथ यात्रा (पुरी, ओडिशा), जोरंडा मेला (जोरंडा, ओडिशा), धनु जत्र (बरघर, ओडिशा), बलि यात्रा (कटक, ओडिशा), छत्र यात्रा (कालाहांडी, ओडिशा), ग्रामीण औलंपिक्स (किला रायपुर, पंजाब), होला मोहल्ला (आनंद पुर साहिब), बैसाखी (तलवंडी साहिब, पंजाब), मगही मेला (मुक्तसर, पंजाब), रमतीर्थ मेला (कलेर, पंजाब), शहीदी जोड़ मेला (फतेहगृह साहिब, पंजाब), सोडल मेला (जलंधर, पंजाब), छप्पर मेला (छप्पर, पंजाब), खाटू श्यामजी (सीकर, राजस्थान), गंगौर महोत्सव (जयपुर), उर्स (अजमेर, राजस्थान), पुष्कर मेला (पुष्कर, राजस्थान), रामदेवर (रामदेवर, राजस्थान), दशहरा मेला (कोटा, राजस्थान), बनेश्वर मेला (डंगरपुर, राजस्थान), चंद्रभग मेला (झालावार, राजस्थान), खेतलाजी मेला (बुंदी, राजस्थान), रानीसती मेला (झुनझुनु, राजस्थान), कालिया देवी मेला (करौली, राजस्थान), कालाजी का मेला (बंस्वारा, राजस्थान), मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर, राजस्थान), पेरिया कीर्थगल (तिरूपरंकुंदरम, तमिलनाडु), पानीमाया मथा महोत्सव (टूटीकोरिण तमिल नाडु), बेमोली कटरा मेला (बेमोली कटरा, उत्तर प्रदेश), कैलाश मेला (आगरा, उत्तर प्रदेश), मकर सक्रांति (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश), कुंभ मेला (हरिद्वार उत्तर प्रदेश), बारबंकी मेला (देव बारबंकी उत्तर प्रदेश), राम नवमी मेला (अयोध्या, उत्तर प्रदेश), श्रावण झूला (फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश), नौचंदी

मेला (मेरठ उत्तर प्रदेश), चित्रकूट रामलीला (चित्रकूट, उत्तर प्रदेश), रामबारात (आगरा, उत्तर प्रदेश), पशु मेला (दादरी, उत्तर प्रदेश), गोकुलानंद मेला (गोकुलपुर, पश्चिम बंगाल), सक्रांति मेला (गंगानगर, पश्चिम बंगाल), फूल वालों की सैर, पुस्तक और व्यापार मेले दिल्ली आदि।

क्रियाकलाप 11.2

किसी भी प्रमुख मेले का चयन करें जहाँ आप गए हों। उन चीज़ों की सूची बनाइए जो आपने वहाँ देखी। उनमें से आपके अनुसार पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण की चीज़ें कौन सी होंगी?

पाठगत प्रश्न 11.2

1. सही विकल्प पर निशान लगाइए-

(i) सोनपुर मेला किस रूप में लोकप्रिय है-

क. पशु मेला ख. पुस्तक मेला ग. ऊँट मेला घ. आम मेला

(ii) भारत में सबसे बड़ा धार्मिक मेला है-

क. गोआ कार्निवल ख. पुष्कर मेला ग. कुंभ मेला घ. मकर सक्रांति

2. मेलों को पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र क्यों माना जाता है?

3. पर्यटकों के लिए कुंभ का महत्व बताइए।

4. गोआ कार्निवल अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आकर्षण क्यों माना जाता है?

11.5 पर्यटक आकर्षण के रूप में कार्यक्रम

नृत्य और संगीत सदैव पर्यटकों द्वारा सबसे अधिक पसंद किया जाता है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि देश भर में वर्ष भर नृत्य महोत्सव होते रहते हैं। भारतीय नृत्य सभी जगह बहुत लोकप्रिय हैं। ऐसा इसलिए भी हो सकता है कि जो भारतीय विदेश जाकर बस गए हैं उन्होंने इसे विश्व भर में लोकप्रिय बना दिया हो। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारतीय और विदेशी पर्यटक नृत्य महोत्सव का हिस्सा बनते हैं। कुछ लोकप्रिय नृत्य और संगीत उत्सव हैं- ओड़िसा का कोणार्क नृत्य उत्सव, मध्य प्रदेश का खुजराहो नृत्य उत्सव और चेन्नई नृत्य और संगीत महोत्सव।

शास्त्रीय और क्षेत्रीय नृत्य जैसे भरतनाट्यम (तमिल नाडु), कथक (राजस्थान, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश), कथकली (केरल), कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश), मणिपुरी (मणिपुर), मोहिनीअट्टम (केरल), ओडिसी (ओडिशा), सत्रिया (असम), गरबा और डांडिया (गुजरात) और भांगड़ा (पंजाब) आदि भारत के पर्यटक आकर्षणों में महत्वपूर्ण हैं।

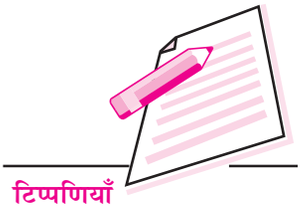

11.5.1 भारत के लोकप्रिय नृत्य रूप

भारत अपनी संस्कृति, परंपरा और भाषा की विविधताओं के कारण जाना जाता है। भारत की प्राचीन संस्कृति में शास्त्रीय नृत्य रूपों का 2000 वर्षों का एक लंबा इतिहास है। अधिकतर नृत्य मंदिरों में प्रतिमाओं के सामने किए जाते थे, कभी-कभी राजा के दरबार में आए अतिथियों के सामने भी नृत्य किए जाते थे। उदाहरणस्वरूप कथक मुगल राजदरबार में किया जाने वाला प्रचलित नृत्य था।

भारत के अधिकतर शास्त्रीय नृत्य दूसरी और तीसरी सदी में विकसित हुए। भारत में, शास्त्रीय नृत्यों के आठ प्रमुख नृत्य बहुत लोकप्रिय हैं जिन्हें अधिक मात्रा में जनता द्वारा देखा जाता था। वे हैं- भरतनाट्यम, कथक, कथकली, कुच्चीपुड़ी, मणिपुरी, मोहिनीअट्टम, ओडिसी और सत्रिया।

भरतनाट्यम

इस शास्त्रीय नृत्य का उद्गम भारत के तमिलनाडु में 18वीं सदी के अंत तथा 19वीं सदी के आरंभ में हुआ।

भरतनाट्यम को व्यापक रूप से सराहना मिली और एक अच्छा भरतनाट्यम नर्तक वही बन सकता था जो बिना किसी शर्त के व अविभाज्य होकर इसके प्रति समर्पित हो जाए।

आरंभ के दिनों में इसे 'दासीयत्तम' कहा जाता था, क्योंकि तब तमिलनाडू के मंदिरों में देवदासियाँ इसे किया करती थीं। भरतनाट्यम की उत्पत्ति तीन मूलभूत विषयों भाव, राग और ताल से हुई है। इसे करते समय जो संगीत बजाया जाता है वह कर्नाटकी शास्त्रीय संगीत पर आधारित है। इस नृत्य को करते समय मुख्य रूप से मृदंगम, वीणा, बाँसुरी और सारंगी वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

चित्र 11.5: भरतनाट्यम

कथक

इस शास्त्रीय नृत्य को आरंभ में उत्तर भारत के मंदिरों में एक रीति की तरह किया जाता था परंतु बाद में यह मुगल और फ़ारसियों के प्रभाव में आकर राज-दरबार में मनोरंजन के लिए किया जाने लगा।

कथक शब्द की व्युत्पत्ति कथा (कहानी सुनाना) शब्द से हुई है। यह नृत्य शैली प्राचीन समय में कथा सुनाने की प्रक्रिया के ईद-गिर्द घूमती है और इस नृत्य में कलाकार अपने चेहरे के हाव-भाव व हाथों की क्रियाओं पर मुख्य रूप से ध्यान देता है। इस नृत्य के प्रदर्शन में आत्मीय संगीत व पारंपरिक वाद्य यंत्र भी बजाए जाते हैं।

चित्र 11.6 : कथक

कथकली

यह केरल की अद्भुत नृत्य शैली है, जिसका प्रदर्शन मंदिरों में हिंदू ग्रंथों, जैसे रामायण, महाभारत और पुराणों की कथाओं पर किया जाता है।

नर्तक इसे करते समय बड़े-बड़े मुखौटे पहनते हैं, काफी शृंगार करते हैं और विशेष प्रकार की वेशभूषा पहनते हैं। नर्तक इसमें रंगबिरंगा घाघरा और शिरोभूषण पहनते हैं। कथकली में कलाकारों के तीन समूह भाग लेते हैं- नर्तक, गायक और तालवादक। नर्तक नृत्य करते समय विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ निभाता है जैसे राजा, ईश्वर, असुर, पशु, पुजारी आदि।

अपनी बात दर्शकों से कहने के लिए नर्तक चेहरे के हाव-भाव, हाथों की मुद्राओं और नैनों के हाव-भाव से व्यक्त करता है। कथकली के नर्तक तीन अलग-अलग नगाड़ों- सीना, इडक्क, मद्दलम पर नृत्य करते हैं। इन तीनों से अलग-अलग प्रकार की ध्वनि निकलती है।

चित्र 11.7: कथकली

कुचिपुड़ी

यह नृत्य आंध्र प्रदेश से उत्पन्न हुआ है। आरंभ में इसे ब्राह्मण पुरुषों जिन्हें भगवथालु कहा जाता है, द्वारा मंदिरों में किया जाता था। इस नृत्य शैली को रात के समय खुली हवा में या तात्कालिक मंच पर किया जाता है। नर्तक रंगबिरंगी पोशाकें पहनते हैं, श्रृंगार करते हैं और भारी आभूषण पहनते हैं। इस नृत्य के दौरान शास्त्रीय संगीत कर्नाटक बजाया जाता है। इस नृत्य के दौरान मुख्य वाद्य यंत्रों के रूप में मृदंगम, सारंगी और शहनाई को बजाया जाता है।

चित्र 11.7: कुचिपुड़ी

मणिपुरी

मणिपुरी नृत्य मणिपुर का शास्त्रीय नृत्य है। यह भारत की प्राचीनतम शास्त्रीय नृत्य शैली है। और अभिलेखों से पता चलता है कि यह 100 ईसवीं पुरानी शैली है। अन्य शास्त्रीय नृत्यों की तुलना में मणिपुरी नृत्यों की मुद्राएँ धीमी और शोभित हैं। हाथों व पैरों की सौम्य मुद्राएँ इस शैली को

अन्य शास्त्रीय नृत्यों से भिन्न करती है। मणिपुरी नृत्य में प्रयोग में लाया जाने वाला वाद्ययंत्र मणिपुरी ढोलक है।

चित्र 11.9: मणिपुरी

मोहिनीअट्टम

यह नृत्य केरल का है। मोहिनीअट्टम का अर्थ है मोहिनी का नृत्य। भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, असुर भस्मासुर का वध करने के लिए भगवान विष्णु ने सुंदर स्त्री के रूप में मोहिनी का अवतार लिया था।

चित्र 11.10: मोहिनीत्तम

ओडिसी

ओडिसी नृत्य शैली का उद्गम ओडिशा से हुआ। यह विश्व में प्राचीनतम नृत्य शैलियों में से वर्तमान में जीवित शैलियों में से एक माना जाता है। प्राचीन समय में यह ओडिशा के मंदिरों में किया जाता था। हावभाव और मुद्राओं के संबंध में यह काफी हद तक भरतनाट्यम से मिलता जुलता है। यह नृत्य संस्कृत नाटक गीत गोविंद पर आधारित है जिसमें श्री कृष्ण के प्रति प्रेम और समर्पण दिखाया गया है।

चित्र 11.11: ओडिसी

सत्रिया

यह असम का शास्त्रीय नृत्य है। इसकी शुरुआत असम के महान वैष्णव संत और सुधारक महापुरुष शंकरदेव द्वारा की गईं। सत्रिया नृत्य परंपरा में हस्तमुद्राओं, पैरों की मुद्राओं तथा संगीत आदि के सिद्धांतों पर सख्ती से ध्यान दिया जाता है। नर्तक की पोशाक असम पट रेशम की बनती है और पारंपरिक असमी आभूषण ग्रहण किए जाते हैं। इस नृत्य में बोरगट नामक शास्त्रीय संगीत राग बजाया जाता है।

चित्र 11.12: सत्रिया

11.5.2 संगीत: पर्यटक आकर्षण

नृत्य की भाँति, भारतीय संगीत भी किसी स्थान या कार्यक्रम में पर्यटकों को प्रभावशाली ढंग से आकर्षित करते हैं, वास्तव में ऐसे स्थानों पर जाने वाले पर्यटकों को संगीत और नृत्य कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

20वीं शताब्दी तक भारतीय संगीत को पारंपरिक रूप से मौखिक पद्तियों द्वारा पढ़ाया जाता रहा। प्रारंभिक माध्यमों के रूप में अनुदेशों, समझ और प्रसारण के संकेत नहीं दिए जाते थे। भारतीय संगीत और रचना को स्वयं गुरु द्वारा शिष्यों को समझाया जाता था। बहुत से भारतीय संगीत विद्यालय संकेतों और वर्गीकरण का अनुसरण किया करते थे।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत

हिंदुस्तानी संगीत मुख्य रूप से उत्तर भारत में पाया जाता है। इसकी दो मुख्य शैलियाँ हैं- ख्याल और ध्रुपद, परंतु इसकी कई अन्य शास्त्रीय और अर्ध-शास्त्रीय शैलियाँ भी हैं। हिंदुस्तानी संगीत पर फ़ारसियों का बहुत प्रभाव है, यह प्रभाव वाद्य यंत्रों, प्रदर्शन के तरीकों, रागों जैसे हिजाज़ भैरव, भैरवी, बहार और यमन के संदर्भ में है। हिंदुस्तानी संगीत में बहुत से लोक राग, जैसे लोक धुनों पर आधारित काफ़ी और जयजयवंती, तबला वादक, नगाड़े का एक प्रकार, जो कि आमतौर पर एक सुर में बजाया जाता है, हिंदुस्तानी संगीत में समय का संकेत सम्मिलित हैं।

अन्य आमतौर पाया जाने वाला यंत्र है, तारवाला तानपुरा, जो कि रागों के प्रदर्शन के समय एक स्थिर धुन बजाता है, जो संगतीकार को और संगीत की पृष्ठभूमि दोनों को संदर्भ प्रदान करता है। तानपुरा बजाने का कार्य परंपरागत रूप से वादक के विद्यार्थी द्वारा किया जाता है। इसके साथ अन्य वाद्य यंत्र जैसे सारंगी और हारमोनियम भी बजाया जाता है। यह देश में होने वाले किसी भी संगीत महोत्सव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कर्नाटक संगीत (दक्षिणी भारतीय संगीत)

दक्षिणी भारत का कर्नाटक संगीत, हिंदुस्तानी संगीत से अधिक लयपूर्ण और संरचना बद्ध होता है। उदाहरणस्वरूप ठाट में रागों के तर्कपूर्ण वर्गीकरण हैं और स्थायी रचनाएँ पश्चिमी और शास्त्रीय संगीत से मिलती-जुलती हैं। कर्नाटक रागों की गति हिंदुस्तानी संगीत की तुलना में अधिक तेज़ होती है। इसके अतिरिक्त, हिंदुस्तानी संगीत गोष्ठियों की तुलना में कर्नाटक गोष्ठियों में उपवादकों की भूमिका अधिक बड़ी होती है।

प्राथमिक विषयों में पूजा करना, मंदिरों का विवरण देना, दर्शनशास्त्र और नायक-नायिका जैसे विषय सम्मिलित हैं।

पाठगत प्रश्न 11.3

1. **सही विकल्प पर निशान लगाइए-**

   (i) भरतनाट्यम का आरंभ कहाँ हुआ-

   क. कर्नाटक ख. महाराष्ट्र ग. ओडिशा घ. तमिलनाडु

   (ii) भारतीय नृत्य निर्भर हैं-

   क. रागों पर ख. भावों पर ग. मुद्राओं पर घ. भावों और मुद्राओं पर

   (iii) कौन सा नृत्य महाकाव्यों और धर्मग्रथों की कहानियों को दर्शाता है-

   क. कथकली ख. भरतनाट्यम ग. कथक घ. ओडिसी

   (iv) दक्षिण भारतीय संगीत जाना जाता है-

   क. कर्नाटक संगीत ख. दक्षिणी संगीत

   ग. कन्नड़ संगीत घ. हिंदुस्तानी संगीत

2. नृत्य और संगीत पर्यटन आकर्षणों के सम्मिलित अंग क्यों हैं?

3. किन्हीं पाँच लोकप्रिय संगीत वाद्य यंत्रों को सूचीबद्ध कीजिए।

क्रियाकलाप 11.3

भारतीय नृत्य और संगीत की विभिन्न शैलियों की जानकारी और चित्रों को एकत्रित कीजिए और अपनी स्क्रैप बुक में चिपकाइए।

11.6 खाद्य पदार्थ: पर्यटक आकर्षणों के रूप में

लोगों में ऐसे व्यंजनों को चखने की इच्छा होती है, जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं खाया हो। यही कारण है कि भोजन और पेय-पदार्थ किसी पर्यटन स्थल का मुख्य आकर्षण बन जाते हैं। मेलों और त्योहारों में बहुत से व्यंजन बनाए जाते हैं। सेवयियाँ, ऐसी ही एक मिठाई है जो ईद-उल-फितर पर बनाई जाती है, जो सेवयियाँ वाली ईद के नाम से लोकप्रिय है।

समान रूप से, गुजिया नाम की मिठाई होली पर बनाई जाती है और बहुत से व्यंजन प्रसाद के रूप में किसी विशेष अवसर पर ही बनाए जाते हैं, जो केवल उन्हीं दिनों में उपलब्ध होते हैं। जैसा कि पहले बताया गया है कि, भारत एक बहुसांस्कृतिक देश है, जिसके कारण यहाँ व्यंजनों और पेय-पदार्थों के अनेक प्रकार मिलते हैं, जो कि त्योहारों के दिनों में या उन पर्यटकों द्वारा बड़े

टिप्पणियाँ

चाव से खाए जाते हैं जिन्हें भोजन पसंद हैं। नीचे दिए गए कुछ व्यंजन भारत के लोकप्रिय व्यंजनों में से हैं जिन्हें पर्यटक खाना पसंद करते हैं और अपने घर भी ले जाते हैं जैसे गुजरात और राजस्थान की नमकीन, गुरुग्राम का ढोडा, आगरा का पेठा और मथुरा का पेड़ा, केरल के केले के चिप्स, कोलकता की मिष्टी दही और रसोगुल्ला, वहीं कश्मीर का केसर और वाज़वान और कुल्लू के सेब।

भारत में पर्यटकों के लिए उपलब्ध व्यंजन हैं

1. रोगन जोश (क्रीमवाला गोश्त), गुश्तबा (दही में मसालेदार मीट के गोले) और स्वादिष्ट बिरयानी (चिकन या संतरी रंग वाले चावलों में गोश्त, ऊपर से डाली गई चीनी और गुलाब जल)
2. तंदूरी पकवान (हर्बस में मेरिनेट किया हुआ या क्ले ऑवन में सेंका हुआ चिकन, मांस या मछली) और कबाब भी उत्तरी व्यंजन हैं।
3. भुजिया (सब्ज़ियों की तरकारी), डोसा, इडली और सांभर (चावल के पैनकेक, अचार के साथ गुलगुले और सब्जियाँ, तरकारी) और रायता (कद्दुकस किए खीरे और पुदीने को दही में मिला कर तैयार किया हुआ)।
4. बोंबे डक (तरकारी या फ्राई की हुई मछली), पोमफ्रट।
5. पारसी धन सक (तरकारी के साथ पका हुआ चिकन या गोश्त) तथा विंडालू विनेगर मारिंड।
6. बंगाली मछली के रूप में दही माछ दही में (करीड मछली जिसमें हल्दी और अदरक का छौंक लगा हो।) मलाई प्रॉन नारियल सहित करीड प्रॉन।
7. पूड़ियाँ, चपाती, मक्की, बाजरा, रोटी–सरसों का साग तथा नान आदि। भारत भर में समान्यत: मिलने वाली दालें (विभिन्न सब्ज़ियों वाली तरकारी) और दही या छाछ।

मिठाइयाँ

आमतौर पर खाई जाने वाली भारतीय मिठाइयों में शामिल हैं–

1. बरफी– सूखे दूध से बनी इस मिठाई में काजू और पिस्ते भी डाले जाते हैं जिस पर आमतौर पर चाँदी का वर्क भी लगाया जाता है।
2. चिक्की– मूँगफलियों और गुड़ से बनी मिठाई।
3. गुलाब जामुन– भूने हुए दूध से बने गोलों को चाशनी जैसे– गुलाब की चाशनी या शहद से बनी चाशनी में डाल कर इस मिठाई को बनाया जाता है।
4. जलेबी– आटे को गोल–गोल आकार में गूँथ कर चाशनी में तला जाता है। इसे आमतौर पर दूध, चाय, दही या लस्सी के साथ परोसा जाता है।
5. कुल्फी– यह एक भारतीय आइस्क्रीम है, जिसे कई फ्लेवर्स में बनाया जा सकता है जैसे – आम, केसर या इलायची।

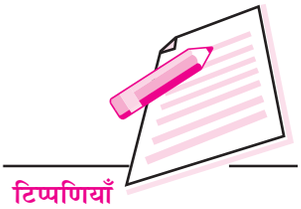

6. खीर- चावलों और दूध से मिल कर बनाई जाती है।
7. मालपुआ- गेहूँ या चावल के आटे से बनी रोटी जिसे चाशनी में अच्छी तरह तला जाता है।
8. रसोगुल्ला- यह एक लोकप्रिय मिठाई है, जिसे पनीर के छोटे-छोटे गोलों को चाशनी में डाल कर बनाया जाता है।
9. संदेस- पनीर से बनी एक ऐसी मिठाई जिसमें चीनी और गुड़ मिलाया जाता है।
10. श्रीखंड- दही को मथ कर निकाली गई क्रीम से बनी इस मिठाई में आमतौर पर सूखे फल जैसे सूखे आम मिलाए जाते हैं।
11. काजू कतली- इसे बनाने का तरीका बरफी जैसा है, मुख्य रूप से इसमें काजू का चूरा, घी, इलायची पाउडर और चीनी मिलाई जाती है।
12. रबड़ी- रबड़ी को बनाने के लिए दूध को धीमी आँच पर हल्का गुलाबी होने तक बहुत देर तक पकाया जाता है, इसमें स्वादिष्ट बनाने के लिए चीनी, मसाले और बादाम मिलाए जाते हैं।

पेय- पदार्थ

अल्कोहल रहित वाले पेय-पदार्थ

1. मसाला चाय
2. पश्चिमी भारत में लोकप्रिय भारतीय फ़िल्टर कॉफी
3. लस्सी
4. सत्तू
5. छाछ, शरबत और नींबू पानी
6. बादाम दूध और नारियल पानी
7. पनीर सोडा या घोली सोडा

पाठगत प्रश्न 11.4

1. भारत में पर्यटक आकर्षण के रूप में व्यंजनों का महत्व क्यों हैं?
2. पर्यटकों के लिए उपलब्ध भारत के किन्हीं पाँच खाद्य पदार्थों के नाम बताइए।

क्रियाकलाप 11.4

भारतीय व्यंजनों, मिठाइयों, पेय पदार्थों की क्षेत्रानुसार सूची बनाइए और इनके बारे में चित्रों सहित जानकारी एकत्रित कीजिए।

आपने क्या सीखा

- किसी भी समाज के सांस्कृतिक घटक उसके धर्म, त्योहार, कार्यक्रमों पर आधारित होते हैं।
- आपने देश भर में आयोजित होने वाले विभिन्न उत्सवों के बारे में जानकारी प्राप्त की और उनसे संबंधित समुदायों और उन महीनों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की जिनमें ये मनाए जाते हैं।
- आपने देशभर में अनेक क्षेत्रों में होने वाले अनेक मेलों के बारे में जाना। उनसे संबंधित घटनाओं, व्यंजनों और कार्यक्रमों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की।

पाठांत अभ्यास

1. उत्सवों और मेलों में अंतर स्पष्ट करें।
2. संस्कृति, त्योहार और मेले पर्यटकों का आकर्षण क्यों माने जाते हैं?
3. हिंदुओं के तीन मुख्य त्योहारों का उल्लेख करें। ये कैसे पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बने, यह भी समझाइए।
4. मुस्लिमों के किन्हीं दो मुख्य त्योहारों का उल्लेख करें। पर्यटक आकर्षण के रूप में इनकी भूमिका भी समझाइए।
5. जैनियों और बौद्धों के मुख्य त्योहारों के नाम बताइए और पर्यटक आकर्षण के रूप में उनके महत्व के बारे में भी लिखिए।
6. सिखों और ईसाइयों के मुख्य त्योहारों की सूची बनाइए, जो पर्यटकों का आकर्षण केंद्र हैं।
7. विभिन्न स्थानों पर पर्यटकों को आकर्षित करने वाले राष्ट्रीय त्योहारों के महत्व का वर्णन कीजिए।
8. पर्यटक आकर्षण के रूप में भारत में लगने वाले पाँच प्रमुख मेलों पर प्रकाश डालिए।
9. पर्यटक आकर्षण के रूप में भारतीय नृत्यों पर टिप्पणी कीजिए।
10. किन्हीं तीन भारतीय नृत्यों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए जो पर्यटकों के लिए मुख्य रूप से आकर्षण के केंद्र हों।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1

1. ग
2. क

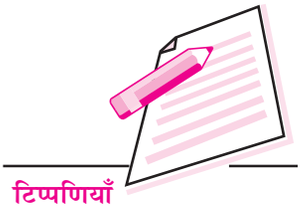

3. ग

4. क. असम ख. पंजाब ग. ओडिशा घ गुजरात

11.2

1. (i) क

   (ii) ग

2. यहाँ कई ऐसे कार्यक्रम होते हैं जो लोगों को आकर्षित करते हैं जैसे गोआ कार्निवल या कुंभ का मेला।

3. ये कार्यक्रम प्रत्येक 12 वर्षों में होते हैं और हिंदू गंगा नदी में स्नान करना एक पवित्र कर्म मानते हैं।

4. गोआ कार्निवल एक वार्षिक महोत्सव है जो गोआ में हर वर्ष आयोजित किया जाता है। यह उत्सव मौज-मस्ती, उल्लास और आनंद से भरपूर होता है। इस उत्सव में भाग लेने के लिए दर्शकों की भारी भीड़ जमा रहती है।

11.3

1. (i) घ

   (ii) घ

   (iii) क

   (iv) क

2. विशेष रूप से विदेशी पर्यटकों द्वारा नृत्य और संगीत को बहुत पसंद किया जाता है क्योंकि ये उत्सव उनके द्वारा लोकप्रिय बनाए गए हैं जो भारतीय विदेशों में जाकर बस गए हैं।

3. मृदंग, सारंगी, तबला, बाँसुरी, हारमोनियम, सितार, वीणा, ढोलक, सरोद।

11.4

1. देश के त्योहारों, उत्सवों या मेलों में होने वाले किसी भी सांस्कृतिक कार्यक्रम में व्यंजन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

2. मुगलई, औधी, राजस्थानी, दक्षिण भारत, पंजाबी, गुजराती, मराठी व्यंजन।

माड्यूल-4: पर्यटन आकर्षण के रूप में प्राकृतिक विविधता

12. भारत में पर्यटन के प्राकृतिक आकर्षण
13. भारत में पर्यटन की प्रगति और प्रतिरूप
14. विश्व में पर्यटन का विकास और स्वरूप

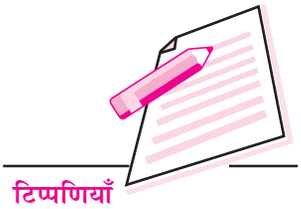

टिप्पणियाँ

12

भारत में पर्यटन के प्राकृतिक आकर्षण

भारत भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता से भरपूर एक विशाल देश है। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में समुद्री तट तक तथा पश्चिम में थार के रेगिस्तान से लेकर पूर्वोत्तर के नम जंगलों तक इसकी विविधता फैली हुई है। यहाँ तक कि दक्षिण में भूमध्यरेखीय जलवायु से लेकर उत्तर में उच्च ढ़लानों पर ध्रुवीय जलवायु तक की विविधता भी देखी जाती है। यह समृद्ध विविधता इन स्थानों को देखने वाले पर्यटकों के लिए अनेक स्वाभाविक आकर्षण का कार्य करती हैं। मैदानी और दक्षिण भारत के लोग गर्मियों में ठण्डे मौसम की तलाश में हिमालय के पर्वतीय स्थलों पर जाना चाहेंगे। इसी प्रकार उत्तर भारत के लोग तटीय क्षेत्रों को देखना चाहेंगे। यह विविधता देश में पर्यटन को बढ़ावा देने में बड़ी भूमिका निभाती है। प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र की अपनी सुन्दरता है। आज जीवन बहुत व्यस्त और मशीनी हो गया है। लोग अब अपने आप को तरोताजा करने के लिए प्रकृति की ओर लौटना चाहते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य की मांग अब न केवल घरेलू पर्यटकों में अपितु अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों में भी है। इस पाठ में हम भारत की भौगोलिक विशेषताओं के बारे में पढ़ेंगे तथा देखेंगे कि इसके पास पर्यटकों को देखने, सराहने और आन्नद लेने के लिए क्या-क्या हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- भारत की भौतिक विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत में पर्यटन स्थलों के वितरण की चर्चा कर सकेंगे;
- वन्य जीवों के कारण लोकप्रिय पर्यटन स्थलों के प्राकृतिक आकर्षण की पहचान कर सकेंगे;
- भारत में विभिन्न पक्षी विहारों का वर्णन कर सकेंगे; और
- भारत में विभिन्न पर्वतीय स्थलों को दर्शा सकेंगे।

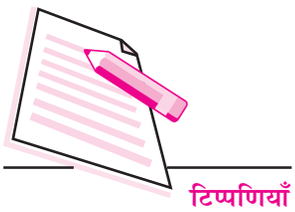

टिप्पणियाँ

12.1 भारत का भौतिक स्वरूप

भारत की भौतिक विशेषताओं का सम्बन्ध देश के भौतिक स्वरूप जैसे ऊंचाई, भौगर्भिक इतिहास, उत्पत्ति और भौगोलिक लक्षणों से है। इन मापदंडों के आधार पर भारत को चार प्रमुख भागों में बांट सकते हैं (चित्र 12.1)।

1. उत्तरी पर्वतीय क्षेत्र
2. विशाल उत्तरी मैदान
3. प्रायद्वीपीय पठार
4. तटीय मैदान और द्वीप समूह

12.1.1 उत्तरी पर्वतमाला

देश की उत्तरी सीमा हिमालय की पर्वत श्रेणियों से बनी हुई है। यह उत्तर-पश्चिम में जम्मू-कश्मीर से लेकर पूर्व में पूर्वांचल की पर्वतीय श्रेणियों तक फैली हुई है। हिमालय (हिम + आलय) का शाब्दिक अर्थ है हिम का घर। यह विश्व की सबसे नई पर्वतमालाओं में से एक है। यह समुद्र तल से 8000 मीटर से भी अधिक ऊंची है। विश्व की सबसे ऊंची पर्वतमाला होने के कारण इसमें विश्व का सबसे ऊंचा शिखर भी है।

हिमालय को पश्चिम से पूर्व (दिशा) तीन समानान्तर श्रेणियों में बांटा जा सकता है।

(अ) महान हिमालय अथवा हिमाद्रि

(ब) निम्न हिमालय अथवा हिमाचल

(स) बाहरी हिमालय अथवा शिवालिक

महान हिमालय अथवा हिमाद्री: यह सबसे उत्तरी भाग में स्थित शृंखला है जिसकी समुद्र तल से औसत ऊंचाई 6000 मीटर है। इसकी चौड़ाई 90 से 120 किलोमीटर तक है। विश्व की सबसे ऊंची चोटी माऊन्ट एवरेस्ट इसी शृंखला में स्थित है। यह नेपाल में है जिसकी ऊंचाई 8848 मीटर है। भारतीय क्षेत्र की ऊंची चोटियों में कंचनजंगा (8598 मीटर), मकालू (8481 मीटर), धौलागिरी (8172 मीटर), मनसुलु (8156 मीटर), नन्दा देवी (7817 मीटर) इत्यादि हैं। बहुत से ऊंचे पर्वत दर्रे जैसे बारा लच्छा ला, शिपकिला, थंगला ला, नाथूला और जोजिला इत्यादि हिमालय की इसी शृंखला में स्थित हैं। यह क्षेत्र साहसिक पर्यटन गतिविधियों, जैसे पर्वतारोहण, ट्रैकिंग और क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य को निहारने के लिए काफी लोकप्रिय है।

निम्न हिमालय अथवा हिमाचल: यह शृंखला हिमाद्रि के दक्षिण में लगभग समानान्तर स्थित है। इसकी ऊंचाई 1800 से 3000 मीटर के बीच है और इसकी चौड़ाई 60 से 80 किलोमीटर तक है। इस वर्ग/क्षेत्र में धौलाधर, पीरपंजाल, महाभारत श्रेणी और मसूरी शृंखला शामिल हैं। यह उपजाऊ घाटियों और पर्वतों से घिरा एक जटिल चित्र प्रस्तुत करता है। यहां पर कई पर्वतीय स्थल

जैसे शिमला, कुल्लू, मनाली, धर्मशाला, चैल, चकराता, मसूरी, नैनीताल, अल्मोड़ा, रानीखेत और दार्जीलिंग हैं। इन पर्वतीय स्थलों के अतिरिक्त भी अनेक स्थल इस क्षेत्र में स्थित हैं।

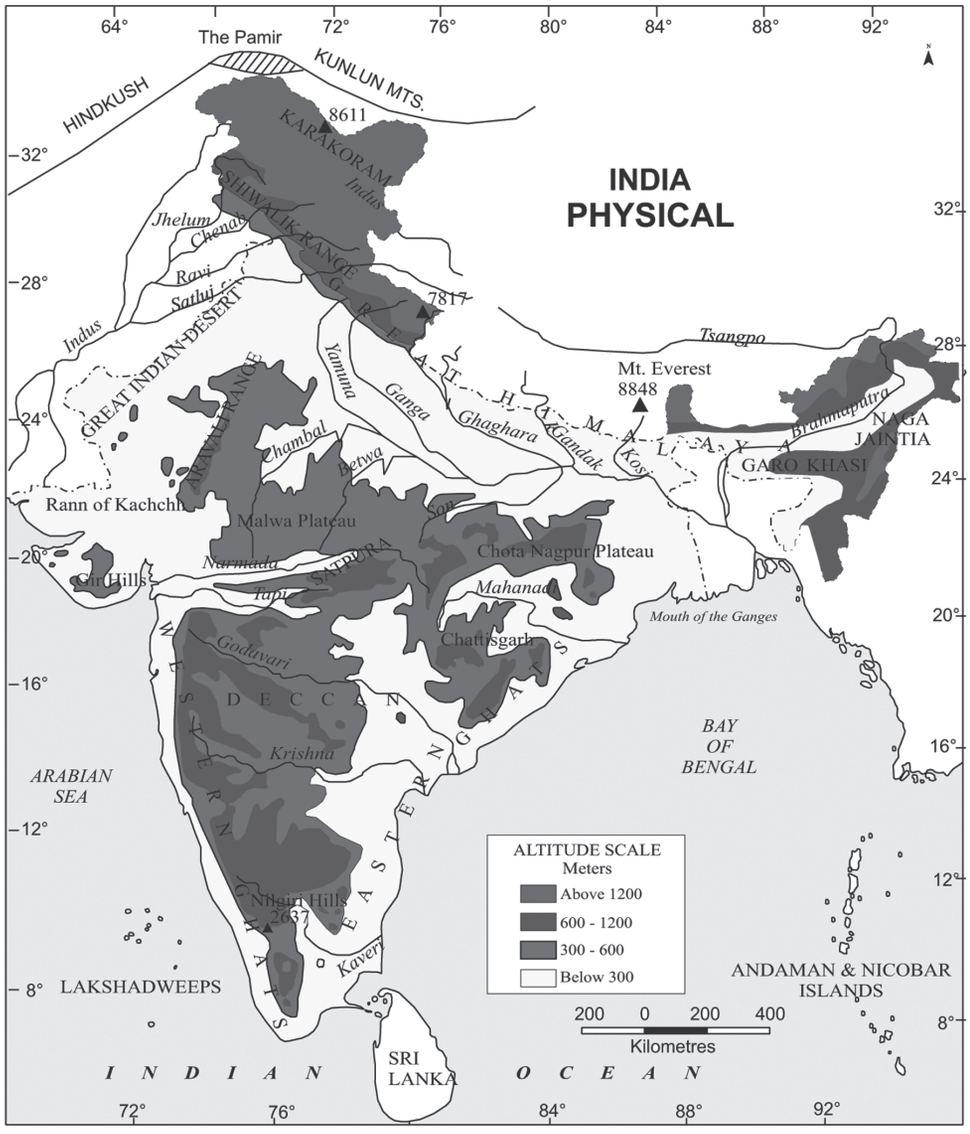

चित्र 12.1: भारत की भौतिक विशेषताएँ

अंग्रेजों ने ग्रीष्म ऋतु की गर्मी से बचने के लिए यहां पर स्थित कुछ पर्वत स्थलों को विकसित किया। विशेषत: देश के मैदानी और प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र के लोगों के बीच तपती गर्मी से राहत पाने के लिए यह पर्वतीय क्षेत्र आज भी काफी लोकप्रिय है।

बाहरी हिमालय अथवा शिवालिक: यह मुख्यत: पर्वतीय शृंखला की सबसे दक्षिण में स्थित शृंखला है जिसे सामान्यतया हिमालय का गिरिपद क्षेत्र कहा जाता है। इसकी ऊंचाई 900 से 1500 मीटर तक है और चौड़ाई 15 से 50 किलोमीटर तक है। यह हिमालय की नव निर्मित पर्वत श्रेणी

टिप्पणियाँ

है। इस श्रेणी के दक्षिण में उत्तर भारत का मैदानी क्षेत्र है। मैदानी और पर्वतीय भागों के बीच के निकट की भूमि को तराई क्षेत्र कहा जाता है। इसमें बहुत घनी पतझड़ किस्म की वनस्पति पायी जाती है। यहां कई लम्बी तथा समतल घाटियां हैं जिन्हें दून कहा जाता है, जैसे देहरादून।

12.1.2 उत्तरी मैदान

भारत का विशाल उत्तरी मैदान उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार तक फैला हुआ है। यह देश की पश्चिमी सीमा पंजाब और राजस्थान से लेकर पूर्व में गंगा डेल्टा और ब्रह्मपुत्र के मैदान तक विस्तृत है। इसके अंतर्गत तीन मुख्य नदियाँ हैं- सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी। यह पश्चिम से पूर्व लगभग 500 किलोमीटर लम्बा है। इसकी चौड़ाई बिहार में 200 किलोमीटर से पंजाब तथा राजस्थान में 500 किलोमीटर है। उत्तरी मैदान की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें अनेकों धर्मों का उदय हुआ और अनंत काल से संस्कृति का केन्द्र रहा है। हिन्दू, सिक्ख, बौद्ध और जैन धर्मों का उदय इसी क्षेत्र से हुआ है। मैदानी क्षेत्र में अनेक सांस्कृतिक और धार्मिक केन्द्रों का उद्‌भव हुआ है जो घरेलू और विदेशी पर्यटकों के लिए पर्यटन का केन्द्र बन गए हैं। लगभग यह पूरा क्षेत्र ही पर्यटकों के लिए विभिन्न प्रकार के आकर्षणों के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ विविध धार्मिक स्थलों, विरासतों एवं ऐतिहासिक स्मारकों के स्थल हैं जिनके बारे में आप पर्यटन के इस कोर्स के विभिन्न पाठों में पढ़ेंगे। वस्तुत: ये सब देश के मैदानी भागों में बढ़ते पर्यटन के प्रेरक शक्ति हैं।

12.1.3 प्रायद्वीपीय पठार

विशाल उत्तरी मैदान के दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार स्थित हैं। यह तीन ओर से समुद्रों से घिरा हुआ है। यह विश्व की सबसे पुरानी भू-आकृति है। नर्मदा नदी इस पठार को दो भागों में बांटती हैं। नर्मदा नदी के उत्तर में मध्यवर्ती उच्चभूमि और दक्षिण में दक्खन का पठार है।

मध्यवर्ती उच्चभूमि: यह खनिजों तथा जीवाश्म ईंधन जैसे कोयले की उपलब्धता के लिए महत्वपूर्ण है। अनेक प्रकार के खनिज जैसे लौह-अयस्क, बाक्साईट, तांबा, मैंगनीज, सीसा, जिंक, कोयला, अभ्रक, निकल इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह ख़निज औद्योगिक विकास के लिए रीढ़ की हड्डी हैं। इनमें से अनेक मूलभूत संरचनात्मक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह क्षेत्र पर्यटन तथा बहुत से लोगों को रोजगार का अवसर प्रदान करता है।

दक्षिण का पठार: इसका क्षेत्रफल लगभग 7 लाख वर्ग किलोमीटर है। इसकी उत्तरी सीमा सतपुड़ा शृंखला, महादेव एवं राजमहल पहाड़ियों के साथ-साथ हैं। यह उत्तरी भाग दक्षिण के पठार का त्रिकोणीय आकार का आधार है। इसके दो किनारे पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट के साथ-साथ चलते हैं और प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर मिलते हैं। इसका फैलाव मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल तक हैं। पूर्व की ओर बहने वाली अनेक नदियां पश्चिमी घाट से निकलती हैं और पूर्व की ओर बहती है क्योंकि ढ़लान पूर्व दिशा की ओर है। पठार को तीन स्पष्ट वर्गों में बांटा जा सकता है- दक्षिण ट्रैप जिसे काली मृदा भी कहते हैं, पश्चिमी घाट तथा पूर्वी घाट।

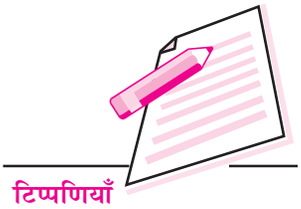

पश्चिमी घाट विश्व के दस बड़े जैव विविधता हॉटस्पॉट स्थलों में से एक है। हॉटस्पॉट में अनेक राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीव अभ्यारण्य, जीवमंडल रिज़र्व और आरक्षित वन स्थित हैं। उनमें से अनेक को हैरिटेज स्थल का नाम दिया गया है। पर्वतीय स्थल और हैरिटेज स्थल पर्यटकों में काफी लोकप्रिय हैं। रास्ते में अनेक सुरंगें भी आती हैं। वे अनेक जल प्रपातों के साथ सुन्दर दृश्यावली प्रस्तुत करती हैं। वे सड़क एवं रेलवे से जुड़े हुए हैं। ये आवागमन के साधन पर्यटकों के समय, दूरी और पैसे की बचत कर पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पूर्वी घाट भारत के पूर्वी तट के साथ-साथ एक विच्छिन्न पर्वत श्रृंखला है। ओडिशा के कोरापुट में निमाईगिरी पहाड़ियां तथा गंजाम जिले में महेन्द्रगिरी पहाड़ियों की ऊंचाई लगभग 1500 मीटर हैं। यह पहाड़ियां घने जंगलों से ढ़की हुई हैं। नीलगिरी पहाड़ियों में स्थित उदगमण्डलम (ऊंटी) दक्षिण भारत का एक लोकप्रिय पहाड़ी क्षेत्र है। इस विच्छिन्न पर्वत श्रृंखला के दक्षिणी भाग की ऊंचाई कम है। इसका दक्षिणी भाग पश्चिमी और पूर्वी घाट के मिलने से एक संधि-स्थल के रूप में दिखता है।

12.1.4 तटीय मैदान और द्वीप

भारत के तटीय मैदान पूर्वी और पश्चिमी, दोनों तटों पर पाए जाते हैं। पश्चिमी तटीय मैदान पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच स्थित है। यह उत्तर में गुजरात के रण-ऑफ कच्छ से शुरू होकर दक्षिण में कन्या कुमारी तक है। यहां अनेक सुन्दर सोपानी जलप्रपात देखे जा सकते हैं जो विभिन्न क्षेत्रों के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इस मैदान को मूलत: तीन भागों में विभाजित करते हैं।

उत्तरी मैदान को कोंकण मैदान, मध्य भाग को कन्नड़ मैदान तथा दक्षिणतम भाग को मालाबार मैदान के नाम से जाना जाता है। वहां कई लम्बे और तंग लैगून तथा पश्चजल हैं। जैसे वेबनाद-जो केरल में बहुत प्रसिद्ध है।

पूर्वी तटीय घाट पूर्वी घाटों और बंगाल की खाड़ी के बीच स्थित है जो गंगा डेल्टा के दक्षिणी भाग से शुरू होकर कन्याकुमारी तक जाते हैं। कन्याकुमारी के निकट दोनों मैदान - पश्चिमी और पूर्वी मिलकर एक मैदान बन जाते हैं। यह मैदान लगभग 120 किलोमीटर चौड़ा है। ये मैदान उपजाऊ मिट्टी के रूप में बहुत सम्पन्न हैं और यहां चावल का बहुत उत्पादन होता है। इस मैदान में बहुत सी नदियां प्रवाहित होती हैं जो अपने मुहानों पर डेल्टा बनाती हैं। इस तट के साथ बहुत से लैगून बनते हैं जो पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र हैं। चिल्का, पुलिकट और कोलुसु झीलें काफी प्रसिद्ध हैं जो पर्यटकों को बड़ी संख्या में आकर्षित करती हैं।

भारत के द्वीपों के दो समूह हैं। भारत के पास कुल मिलाकर 247 द्वीप हैं। ये दो समूहों में बिखरे हुए हैं। एक अण्डमान निकोबार तथा दूसरा लक्षद्वीप समूह है। बंगाल की खाड़ी में 222 द्वीप हैं तथा बाकी 25 अरब सागर में हैं। दोनों द्वीप समूह अपने बनावट के आधार पर बिल्कुल भिन्न हैं।

अरब सागर के द्वीप अधिकांशत: छोटे प्रवाल भित्तियों के जमावों से बने हैं। अत: उन्हें प्रवाल द्वीप कहा जाता है। बंगाल की खाड़ी के द्वीप मुख्यत: प्लेट विवर्तनीकी (टेक्टॉनिक) गतिविधियों

के कारण बने हैं। अगर उत्तर-पूर्व राज्यों से हिमालय के विस्तार को दक्षिण की ओर बंगाल की खाड़ी में देखें तो यह हिमालय की ही व्युत्पत्ति प्रतीत होता है। पर्यटन की दृष्टि से द्वीपों का विशेष महत्व हैं।

क्रियाकलाप 12.1

भारत का एक रैखिक मानचित्र लीजिए और उस पर देश के विभिन्न भौतिक प्रदेशों को दर्शाइए। उस मानचित्र पर अपनी स्थिति अंकित कीजिए। भौतिक स्वरूप के आधार पर अपने निवास क्षेत्र की विशेषताएँ लिखिए। अपने क्षेत्र की पर्यटन गतिविधियों का ब्यौरा लिखिए। यदि आपके क्षेत्र में पर्यटन की कोई गतिविधि नहीं है तो इसके कारणों की एक सूची बनाइए।

पाठगत प्रश्न 12.1

1. दक्षिण (दक्कन) के पठार की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।
2. भारत का कौन-सा घाट जैव विविधता हॉटस्पॉट के कारण लोकप्रिय है?
3. अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप द्वीप समूह के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

12.2 भारत में पर्यटन स्थलों का वितरण

लगभग पूरे भारत में पर्यटकों के लिए प्राकृतिक और सांस्कृतिक आकर्षण के कई स्थल हैं। इसलिए पूरे देश में पर्यटन केन्द्रों का विस्तार है। ये आकर्षण देश के भौतिक स्वरूपों से विशेष रूप से जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए पर्वतीय स्थल पहाड़ियों और पर्वतों पर स्थित हैं जो ठण्डे मौसम की स्थिति प्रदान करते हैं। पर्वतीय क्षेत्र विविध प्रकार के साहसी पर्यटन का मार्ग प्रशस्त करते हैं, जैसे रॉक क्लाइम्बिंग, ट्रैकिंग, एंगलिंग, पैराशूटिंग, राफ्टिंग इत्यादि के अवसर प्रदान करते हैं। हिमालय की नदियों में गंगा, अलकनन्दा, चिनाब, व्यास इत्यादि में 'व्हाईट वाटर राफ्टिंग' के आधार और अवसर प्रदान करती हैं। समुद्री तटों के किनारे 'बीच' पाए जाते हैं। समुद्र, रेत और सूर्य का मेल पर्यटकों के लिए बहुत आकर्षक हैं। जैसे केरल की विश्वविख्यात कोवलम बीच। देश के कई भाग जंगल से भरे पड़े हैं। यहां अनेक राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीव अभ्यारण्य, संरक्षित वन हैं जो कुछ पर्यटकों के लिए मनमोहक हैं। अनेक पर्यटकों के लिए लोगों की धार्मिक आस्था भी आकर्षण का कारण है। इसलिए ऐसे स्थानों की पर्यटकों को तलाश रहती हैं। पर्यटकों के लिए कुछ महत्वपूर्ण स्थानों को नीचे (चित्र 12.2) में दिखाया गया है।

चित्र 12.2: भारत के पर्यटन के प्रमुख गंतव्य स्थल

12.2.1 प्रमुख पर्यटन सर्किट

भारत में अनेक पर्यटन स्थल हैं परन्तु उनमें से कुछ स्थानों की अन्य के मुकाबले अधिक मांग हैं। अत: पर्यटकों को इन स्थानों पर बिना कठिनाई के जाने के लिए विशेष प्रबन्ध किए गए हैं। यह भी ध्यान रखा जाता है कि यहां आने-जाने में सुविधा और सस्ता होने के साथ सहज और तीव्र होना चाहिए। इसलिए पर्यटकों की मांग के अनुसार टूरिस्ट आपरेटरों ने अनेक टूरिस्ट सर्किट रूट तैयार किए हैं। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं:

1. दिल्ली–आगरा–फतेहपुर सीकरी–जयपुर–दिल्ली

2. ग्वालियर–खजुराहो–भोपाल–ग्वालियर

3. सारनाथ–कुशीनगर–बोधगया–सारनाथ

4. भुवनेश्वर–कोणार्क–पुरी–चिल्का–भुवनेश्वर

इनके अतिरिक्त भी अन्य कई रूट हैं। चित्र संख्या 12.3 से ऐसे रूटों के स्थान और मार्गों की जानकारी ले सकते हैं।

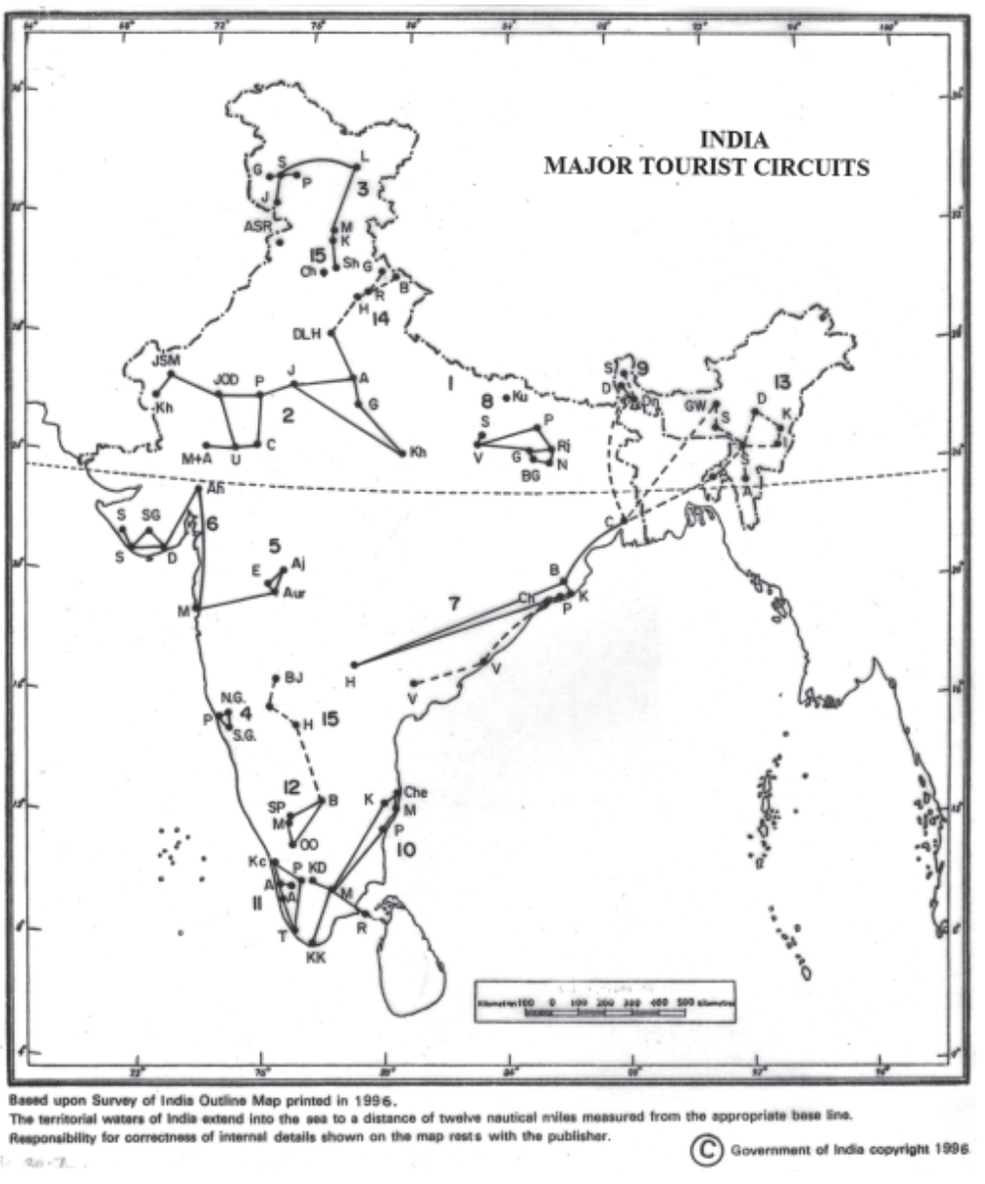

चित्र 12.3: भारत के प्रमुख टूरिस्ट सर्किट

12.3.2 पर्वतीय स्थल

पर्वतीय स्थल पहाड़ियों और पर्वतीय ढ़लानों पर स्थित होते हैं (चित्र 12.4)। ये स्थल गर्मियों के मौसम में भी ठण्डे होते हैं। ऐसा ऊंचाई के कारण होता है। 165 मीटर की ऊंचाई बढ़ने के साथ तापमान 1°C कम हो जाता है। ऐसा ऊंचाई पर वायु के विरल होने के कारण होता है। सूर्य का विकिरण सबसे पहले धरती पर पहुंचता है। पृथ्वी का धरातल गर्म होने पर दीर्घ तरंगों के रूप में ताप का विकिरण करता है। इस प्रकार वायु गर्म होती है। वायु के विरल होने के कारण सूर्य के ताप का प्रभाव कम होता है। इसी कारण से पहाड़ियां और पर्वतीय ढलानें गर्मी में भी ठण्डी होती हैं। इस प्रकार का मौसम बहुत सुविधाजनक और आन्नददायी होता है। जब मैदानी और पठारी भागों में तेज गर्मी होती है तो देश के विभिन्न भागों से लोग कुछ दिन पर्वतीय स्थलों में गुजारना चाहते हैं।

चित्र 12.4: भारत में प्रमुख पर्वतीय स्थल

12.3.3 साहसिक पर्यटन

साहसिक पर्यटन उसको कहते हैं जिसमें पर्यटक कम परिचित वाले क्षेत्रों और स्थानों का खासकर प्रतिकूल परिस्थितियों में किसी प्रकार की खोज में शामिल होते हैं। इसमें उनके शरीर को कुछ हद तक खतरा अथवा नुकसान हो सकता है। साहसिक पर्यटन तीन प्रकार के हैं: (i) हवाई साहसिक पर्यटन (ii) जल साहसिक पर्यटन (iii) भू-साहसिक पर्यटन।

हवाई साहसिक पर्यटन में मुख्यत: पैराशूटिंग और पैराग्लाईडिंग; जल साहसिक पर्यटन में राफ्टिंग और वाटर स्कीइंग शामिल होते हैं। भारत में भू-साहसिक पर्यटन बहुत लोकप्रिय है जिनमें पर्वतारोहण, एंगलिंग, माऊन्टेनरिंग, ट्रेकिंग, पहाड़ों में साइकिल चलाना, स्कीईंग इत्यादि होते हैं। इस प्रकार का पर्यटन बीहड़ पर्वतीय क्षेत्रों में ही अधिक होता है। भारत में यह हिमालय तथा पठारी क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय है।

तालिक 12.1: भारत में मुख्य पर्वतीय मार्गों का विवरण

पर्वतीय मार्ग का नाम	ऊंचाई (मीटर में)	दिन	कठिनाई का स्तर	ट्रेकिंग के लिए उपयुक्त समय
मंत्रमुग्ध करने वाली मारखा घाटी	5150	12-15	सामान्य	जून से अक्तूबर
लद्दाख का जमी हुई नदी का मार्ग	3850	17-21	बहुत कठिन	जनवरी से मार्च
स्ट्राइकिंग स्टाक कांगरी	6153	11-13	आसान	जून से अक्तूबर
ग्लोरियस गोयचा ला	4940	12-15	सामान्य	मार्च से मई
होली किन्नर कैलाश सर्किट	6500	12-16	सामान्य से कठिन	जुलाई से अक्तूबर
पिन पार्वती वैली (देवताओं की)	5319	13-17	सामान्य से कठिन	जून से अक्तूबर
हेमकुण्ड और फुलों की घाटी	3853	9-13	आसान	मई से अक्तूबर
गंगोत्री-गौमुख-तपोवन	4463	9-13	सामान्य	मई से अक्तूबर
बाऊन्डलेस नन्दा देवी	4268	10-13	सामान्य	जून से अक्तूबर
डोडीताल-पोराणिक झील	4150	6-8	सामान्य	मई से अक्तूबर
मैजेस्टिक खाटलिंग ग्लेशियर	4200	12-14	सामान्य	मई से अक्तूबर
अकथनीय रूपकुण्ड झील	5029	7-9	सामान्य	मई से अक्तूबर
गढ़वाल पर्वतीय कौरी दर्रा	4575	9-12	सामान्य	अप्रैल से मध्य जून और अगस्त से सितम्बर
परफेक्ट पंचचोली बेस कैम्प	4260	7-10	सामान्य	मई से अक्तूबर
मनोरंजक मिलान ग्लेशियर - कुमांऊ	4150	13-15	सामान्य से कठिन	जून से अक्तूबर
पिंडारी ग्लेशियर का साफ्ट एडवेंचर	3990	11-13	आसान	मई से अक्तूबर
काफनी ग्लेशियर - हिडन जेम	3892	9-11	आसान	मई से अक्तूबर
पदम - दारचा - हिम गृह	4950	9-12	आसान	जून से अक्तूबर
हेमिस - निमालिंग हाईकिंग	5270	8-10	सामान्य	जून से अक्तूबर

तालिका 12.1 हिमालय क्षेत्र के ट्रैकिंग मार्गों को दर्शाती है। इनके अतिरिक्त भी हिमालय तथा पठारी क्षेत्रों में अनेक ट्रैकिंग मार्ग हैं।

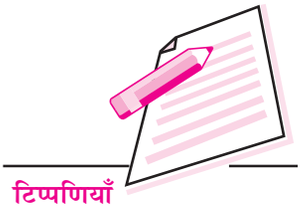

पिछले कुछ समय से साहसिक पर्यटन काफी लोकप्रिय हो रहा है। ऐसे अनेक कार्यक्रम पहले ही तैयार किए जा चुके हैं जबकि नेशनल ज्योग्राफिक, नेशनल ज्योग्राफिक वाईल्ड, एनीमल प्लेनेट, डिस्कवरी, डिस्कवरी साइन्स इत्यादि इन्हें लोकप्रिय बनाने में जुटे हुए हैं।

12.3.4 वन्यजीव अभयवन और राष्ट्रीय उद्यान पर्यटन

वन्यजीव अभयवन विशेष रूप से ऐसा क्षेत्र है जहां किसी भी प्रकार का मानवीय हस्तक्षेप वर्जित होता है। उस क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति किसी जानवर का शिकार नहीं कर सकता है। अत: यह संरक्षित क्षेत्र होता है और निकटवर्ती क्षेत्र को मूल रूप से रखने का प्रयास किया जाता है। राष्ट्रीय उद्यान ऐसे क्षेत्र हैं जहां वहां के पौधों और जानवरों तथा उनके आश्रय स्थलों, प्राकृतिक सौन्दर्य के स्थानों, ऐतिहासिक धरोहरों और मौलिक संस्कृति को बनाए रखा जाता है। अत: दोनों वन्यजीव अभयवन और राष्ट्रीय उद्यान का विशेष महत्व है, खासकर प्राकृतिक परिवेश को बचाए रखने एवं जागरुकता पैदा करने के लिए।

पर्यटन गतिविधियों को वन्य जीव विहारों और राष्ट्रीय उद्यानों में संचालित किया जाता है। इससे हमें अपने जीवन में उनके महत्व का पता चलता है। यद्यपि आरम्भिक स्थानों पर पर्यटन आयोजित करने से इर्द-गिर्द के क्षेत्र पर बुरा प्रभाव डालता है, परन्तु फिर भी इनसे उनके महत्व के बारे में जागरुकता पैदा होती है।

वन्यजीव अभयवन और राष्ट्रीय उद्यान प्राय: बीहड़ क्षेत्रों से जुड़े होते हैं जहां वन क्षेत्र अधिक होता हैं। ये दोनों मिलकर कुल भौगोलिक क्षेत्र का 4.5 प्रतिशत हैं। इस क्षेत्र की इसलिए भी जरूरत कम होती है क्योंकि इस क्षेत्र का धरातल उबड़-खाबड़ है और वहां कृषि गतिविधियां बहुत विकसित नहीं हो सकती है। पूरे देश में कुल 442 वन्य जीव अभयवन हैं। उनमें से 41 बाघ संरक्षित वन हैं। कुछ वन्य जीव अभयवनों को विशेष उद्देश्य के लिए विकसित किया जाता है जैसे पक्षी विहार। राष्ट्रीय उद्यानों का राष्ट्रीय स्तर पर बहुत महत्व है। वर्तमान में 39,919 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर 102 राष्ट्रीय उद्यान हैं और कई अन्य अभी राष्ट्रीय पहचान की प्रक्रिया में हैं। मानस, कान्हा, रणथम्बोर, दुधवा, बांधवगढ़, जिम कार्बेट, राजाजी, काजीरंगा सभी पर्यटकों के पसन्दीदा स्थान हैं।

12.3.5 'बीच' पर्यटन (समुद्री तट पर पर्यटन)

'बीच' ऐसी भूआकृति को कहा जाता है जो किसी समुद्र तट के साथ-साथ पाया जाता है। यह प्राय: रेत, कंकर, और बजरी से निर्मित होता है जो लहरों से शैलों के कटाव व जमाव से बनता है। इसलिए 'बीच' ऐसे क्षेत्रों में विशेष रूप से विकसित होते हैं जहाँ लहरों की क्रिया से कटी हुई सामग्री जम जाती है। भारत का समुद्री तट लगभग 7000 किमी लम्बा है। इतना लम्बा समुद्री किनारा खुबसूरत 'बीच' शांतिदायक एवं शोकहारी पर्यावरण के साथ-साथ हरियाली, पूर्णतया विश्राम एवं तरोजाजा होने के लिए पर्याप्त है। ये पर्यटकों के दिल और दिमाग को नई स्फूर्ति प्रदान करते हैं। पानी से भरी गीली रेत पर समुद्र के नीले जल के साथ-साथ चलना एक अजीब रोमांच पैदा करता है। समुद्री जल का अनंत दृश्य मायावी चिन्ताओं से दूर होने का अनुभव प्रदान करता है। 'बीच' से सूर्योदय और 'सूर्यास्त' को देखना वास्तव में अति सुन्दर होता है। समुद्र, रेत और सूरज की धूप सभी चिन्ताओं का संहार करती हैं। 'बीच' की अवस्थिति का सौन्दर्य अनेक घरेलू और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

भारत के महत्वपूर्ण 'बीचों' को चित्र 12.5 में देखा जा सकता है।

चित्र 12.5: भारत में प्रमुख 'बीच'

क्रियाकलाप 12.2

भारत के दो रेखा मानचित्र लीजिए। एक मानचित्र पर भारत के पर्वतीय स्थलों को दर्शाइए। तैयार किए हुए इस मानचित्र के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास कीजिए।

(अ) मानचित्र पर आप किस प्रकार का प्रतिरूप पाते हैं?

(ब) अधिकांश पर्वतीय स्थल कहां पर स्थित हैं?

(स) हिमालय क्षेत्र में पर्वतीय स्थलों के अधिक होने के क्या कारण हैं?

दूसरे मानचित्र पर देश के 'बीचों' को दर्शाइए। 'बीचों' पर पर्यटन की बढ़ती लोकप्रियता के मुख्य कारण क्या हैं?

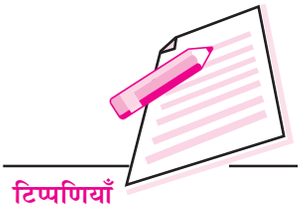

पाठगत प्रश्न 12.2

1. भारत के प्रमुख पर्यटन सर्किटों का वर्णन कीजिए।
2. उत्तरी भारत के प्रमुख पर्वतीय स्थलों के नाम लिखिए।
3. तीन प्रकार के साहसिक पर्यटन की व्याख्या कीजिए।

12.4 भारत में अति लोकप्रिय वन्य जीव अभयवन

- **रणथम्बोर वन्य जीव अभयवन:** जयपुर से 130 किमी. की दूरी पर 392 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ राजस्थान में रणथम्बोर वन्य जीव अभयवन है। रणथम्बोर के पर्णपाती वन बाध देखने के अवसर प्रदान करता है। साम्बर, चीतल और पैंथर जैसे जानवरों को पर्यटक देख सकते हैं। प्रात: और दोपहर बाद के सफारी पर्यटकों को ऐसे सम्भावित स्थलों पर ले जाते हैं जहां बाधों के बच्चे उनके रास्ते में दिख सकें।

- भारत के प्राकृतिक वास में जंगली जानवरों को देखने का सबसे प्रमुख स्थान **कार्बेट नेशनल पार्क** है जो उत्तराखण्ड में हिमालय की तलहटी में स्थित है। दुर्लभ वनस्पति और वन्य जीवों के कारण यह भारत का वन्यजीव केन्द्र बन चुका है। कार्बेट पार्क जंगली जानवरों के साथ मिलने की अनंत संभावनाएँ प्रदान करता है। अत: यहाँ पर्यटक आते हैं और यहां बड़े विचित्र जानवरों और प्रकृति के साथ अपने अनूठे संबंध को आत्मसात कर पाते हैं।

- मध्य प्रदेश की विध्यांचलशृंखला में अवस्थित **बांधवगढ राष्ट्रीय उद्यान** बेशकीमती सफेद बाघों का मौलिक वास था, जहां रेवा में उन्हें पहली बार देखा गया था। वन्य जीवों का यह हरा भरा स्वर्ग लगभग 437 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। वन्य जीवों के प्रेमी यहां बहुत कुछ देख सकते हैं। यहां आसानी से दिख जाने वाले जानवरों में नीलगाय, चिंकारा, और जंगली सुअर शामिल हैं। लोमड़ी भी अचानक दिख सकती है। यहाँ पार्क में बाघों की अच्छी-खासी संख्या है, अत: उन्हें देख पाने की अच्छी संभावना होती है।

- ईश्वर के अपने घर केरल के पश्चिमी घाटों की ऊंची चोटी पर सुरम्य **पेरियार राष्ट्रीय उद्यान** तथा बाघ रिजर्व अवस्थित है। यह उद्यान कॉर्डमॉम पहाड़ियों के घने जंगलों में पेरियार नदी के निकट बसे हाथियों के बड़े-बड़े झुण्डों के लिए प्रसिद्ध है।

- असम में **काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान** वन्य जीवों के लिए स्वर्ग है। यह एक सींग वाले गैंडा, जंगली हाथी एवं पानी वाले भैंसों के लिए स्वर्ग है। यह एक प्रमुख बाघ रिजर्व तथा वैश्विक धरोहर स्थल भी है। हांग हिरण, सुस्त भालू, टोपी वाले लंगूर और विश्व के कुछ बड़े अजगर यहां पाए जाते हैं। जब नदियां उफान पर होती हैं तो कदाचित विशाल डोल्फिन्स को भी देखा जा सकता है।

- बंगाल के दक्षिणी दलदली मैंग्रोब स्थित **सुन्दर बन राष्ट्रीय उद्यान** रॉयल बंगाल टाइगर्स का साम्राज्य है। यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर सुन्दरवन 4264 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला

हुआ है। इसके दक्षिणी भाग में धीरे-धीरे समुद्र का प्रसार हो जाता है। चिलचिलाती धूप से बचने के लिए दलदल में आराम फरमाते अनेक जंगली जानवरों को मैंग्रोव के नदी मुहानों पर देखा जा सकता है। पर्यटक यहां पर सांप, मगरमच्छ, मछली पकड़ने वाली बिल्लियों तथा अन्य समुद्री जीवों को भी देख सकते हैं।

- भारत के प्रसिद्ध टाइगर्स रिज़र्वों में से एक **'कान्हा' राष्ट्रीय उद्यान** मध्य प्रदेश में बंजर और हेलों घाटी में स्थित है। विश्व के सभी कोनों से वन्य जीवों को पसंद करने वाले पर्यटक कान्हा रिज़र्व में आते हैं और इसमें पाये जाने वाले बाधों, धब्बेदार हिरणों और भेड़ियों को देखा जा सकता है। वामनी दादर की चोटी का सूर्यास्त और बारहसिंगों अथवा दलदली हिरणों के साथ फोटोग्राफी चोटी का क्षण भी सामान्यतया यात्रा पैकेज में जोड़ा जाता है। यहां का दृश्य बड़ा ही मनोहारी होता है।
- **मुदुमलाई राष्ट्रीय उद्यान** नीलगिरि के उत्तर-पश्चिम में तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक के मिलन क्षेत्र पर स्थित पड़ोसी वन्यजीव रिजर्व में जाने का रास्ता प्रदान करता है। इसमें विविध प्रकार के वन्य जीव तथा सदाबहार उष्ण कटिबंधीय वनस्पतियाँ एक ओर हैं तो दूसरी ओर पर्णपाती वन हैं। पर्यटक मुदुमलाई में सफारी का आनन्द ले सकते हैं। यहां पर पाए जाने वाले जानवरों में साम्भर, चीतल, जंगली सूअर, प्राइमेट और हाथियों के साथ-साथ बाघों को भी देखा जा सकता है।
- एशियाई शेर के अंतिम संरक्षण के रूप में प्रायद्वीपीय गुजरात के दक्षिण-पश्चिम भाग पर **गिर वन्यजीव अभयवन** स्थित है। यहाँ पर पश्चिमी भाग में पर्णपाती वन पाये जाते हैं। भारत के बड़े वन्य जीव आकर्षणों में से एक 'गिर अभयवन' है जो बिल्ली प्रजाति के बड़े जानवरों का एक प्रसिद्ध केन्द्र है जिनमें शेर और चीते भी शामिल हैं। वस्तुत: गिरवन में देश के सर्वाधिक चीते हैं। इस अभयवन के पानी में अनेक मगरमच्छ पाए जाते हैं।
- **केवलादेव** राजस्थान में स्थित है और यहां कई प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं। पूर्व में यह महाराजाओं का बतख शिकार स्थल अब प्रवासी पक्षियों का सबसे बड़ा क्षेत्र बन गया है। पर्यटक प्रसिद्ध सायबेरियन क्रेन बैबलर्स, रोड काईट, वल्चर और लैपविंग को देख सकते हैं। हरी-भरी भूमि और सुन्दर झीलें पर्यटकों को देखने एवं आनन्द लेने के लिए किसी त्योहार से कम नहीं होता है।

12.4.1 भारत के प्रसिद्ध पक्षी विहार: 1200 प्रजातियों से अधिक पक्षियों के घर

भारत स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों की अनेक प्रजातियों का घर है। भारत के पक्षी विहार पक्षी-प्रेमियों में बहुत लोकप्रिय हैं। स्थानीय सुन्दर पक्षियों मे मोर, विशाल भारतीय बस्टर्ड, हार्नबिल, किंगफिशर और हिन्दुओं में पवित्र माने वाले वाले गरूड़ इत्यादि कुछ प्रसिद्ध नाम हैं। ग्रेट इन्डियन हार्न बिल भारत के जंगलों में पाए जाने वाले सभी हार्न बिल में सबसे बड़ा पक्षी है। कुलिक (रायगंज) पक्षी विहार एशिया में सबसे बड़ा पक्षी विहार है। भारत में पक्षियों को देखने और ट्विचिंग की दृष्टि से नवाबगंज का पक्षी विहार पर्यटकों के लिए आदर्श पर्यटन स्थल है। ट्विचिंग शब्द का सन्दर्भ ऐसे पर्यटकों से है जो दुर्लभ पक्षियों को निहारने के लिए बहुत दूरी तय करके आते हैं।

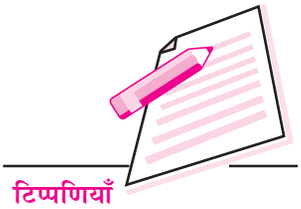

- **भरतपुर पक्षी विहार:** यह पक्षी विहार राजस्थान के भरतपुर में स्थित भारत का एक प्रसिद्ध पक्षी विहार है। इसको केवलादेव घना राष्ट्रीय उद्यान भी कहते हैं। सर्दी के मौसम में यहां हजारों दुर्लभ और संकटग्रस्त प्रजाति के पक्षियों का आगमन होता है। सर्दी के मौसम में पक्षी प्रेमियों का यह सबसे चहेता स्थल बन जाता है जहां पक्षी प्रेमी विश्व के सबसे आकर्षक पक्षियों को देखने के लिए आते हैं।

- **सुलतानपुर पक्षी विहार:** हिमालय से उत्तर की ओर से आने वाले रंगीन पंखों वाले प्रवासी पक्षियों की अनेक प्रजातियों का घर है।

- **सलीम अली पक्षी विहार:** गोवा में माण्डवी नदी के साथ स्थित 'चोराव' (Chorao) द्वीप पर स्थित है जो अनेक दुर्लभ प्रकार के घरेलू तथा प्रवासी पक्षियों के प्रजातियों का घर है।

- **कुमारकम पक्षी विहार** केरल में अवस्थित है जिसे वेमबनाद पक्षी विहार भी कहते हैं। यह बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षियों जैसे फ्लाई कैचर, टील, साईवेरियाई सारस, क्रेन, तोते तथा कठफोड़वे इत्यादि को आश्रय प्रदान करता है। केरल में पक्षियों को देखने का सबसे अच्छा तरीका नौका विहार है। केरल में अन्य पक्षी विहार मंगलावनम तथा थाक्कड़ पक्षी विहार है जो परियार नदी के तट पर स्थित है। यह कुछ दुर्लभ पक्षी प्रजातियों तथा अद्वितीय प्राणी जगत के लिए प्रसिद्ध है।

- **रंगानाथिटु पक्षी विहार** कर्नाटक के कावेरी नदी के तट पर स्थित है। सुन्दर-आकर्षक प्रवासी पक्षियों जैसे लाईट इबिस (सारस), इगरेट, बगुला, तीतर, हीरोन (क्रोंच), दरियाई पूंछ वाली चिड़िया, स्केन बर्ड तथा स्टोन प्लाबर पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। यह कृष्णराज सागर बांध के निकट स्थित प्रसिद्ध वृन्दावन गार्डन से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

- **वेदानथंगल पक्षी विहार** तमिलनाडु में स्थित भारत का सबसे पुरातन पक्षी विहार है। वेदानथंगल झील का क्षेत्र अनेक प्रकार के पक्षियों जैसे पिनटेल, गार्गने, ग्रे-वैगटेल, नीले पंखों वाली टील, सैन्ड पाइपर जैसे अनेक पक्षियों को आकर्षित करता है। तमिलनाडु का 1/6 भाग वनों से ढ़ँका हुआ है जो पशु और पक्षी प्रेमियों का स्वर्ग है। आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु की सीमा पर स्थित पुलिकट झील पक्षी विहार, कुन्थकुलम पक्षी विहार भी पक्षी प्रेमियों में प्रसिद्ध है।

- **कौंडिया पक्षी विहार** आन्ध्र प्रदेश में चितूर के निकट स्थित भारत के सर्वश्रेष्ठ पक्षी विहारों में से एक है। इस क्षेत्र में उबड़-खाबड़ सतह तथा गहरी घाटियां हैं। कैगल और कौंडिया दो प्रमुख सरिताएँ हैं। ये सरिताएँ इस पक्षी विहार से होते हुए बहती है। कौंडिया पक्षी विहार भारत में सर्वश्रेष्ठ वन्य जीव और पक्षी दर्शन स्थल प्रस्तुत करता है। कोलेरू झील मीठे पानी की झील है और यहाँ पर स्थित कोलेरू झील पक्षी विहार भी अनेक प्रकार के प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करता है।

- **चिल्का झील पक्षी विहार** ओडिशा में पुरी के निकट स्थित है और पर्यटकों में बहुत लोकप्रिय है। यह एशिया में खारे पानी की सबसे सुन्दर झील है और अनेक प्रकार के पक्षियों से समृद्ध होने के कारण प्रसिद्ध है। चिल्का झील पक्षी विहार के रूप में काम करती है तथा भारत में सर्दियों में प्रवासी पक्षियों के लिए आकर्षक स्थल है। यह भारत में पक्षी प्रेमियों के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थानों में से एक है।

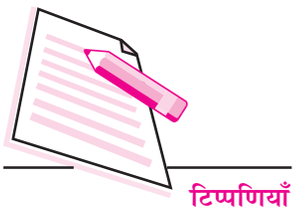

टिप्पणियाँ

- महाराष्ट्र में **मयानी पक्षी विहार** अनेक प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करता है जैसे साइबेरिया से फ्लेमिंगो बहुत बड़ी संख्या में आते हैं। यह भारत में सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रमुख पक्षी विहारों में से एक है।

- **नल सरोवर पक्षी विहार** एक बड़ी झील और व्यापक दलदली जमीन से बना विहार गुजरात के अहमदाबाद में स्थित है। यह भारत का सबसे बड़ा दलदली पक्षी विहार है। वहां फ्लैमिंगो, पेलिकन्स, स्पूनबिल्स, एवोकेट्स, कूट्स, पिनटेल्स, छोटे कोरमोरेन्ट्स, छोटे ग्रेब्स और शोवलेर्स देखे जा सकते हैं। यह भारत में सबसे व्यस्त पर्यटक स्थलों में से एक है।

12.5 पर्वतीय स्थल: पर्यटकों के लिए प्राकृतिक आकर्षण

भारत में लोकप्रिय पर्वतीय स्थल

- **शिमला :** गर्मियों में अंगेजों की राजधानी होती थी जब वे भारत पर शासन करते थे। आज यह हिमाचल प्रदेश की राजधानी है। यह ठंढ़ा और एक आकर्षक शहर है जो ओक, पाईन (चीड), और रोडोडेंड्रोन के जंगलों से घिरा हुआ है। यह औपनिवेशिक प्रकार के भवनों तथा ऐतिहासिक रेलवे के कारण प्रसिद्ध है। इस शहर के मुख्य पहचान बिन्दुओं में यहां का पुराना चर्च है जिसकी सुन्दर कांच की खिड़कियां हैं, स्कैन्डल प्वाइंट से दिखते सम्मोहक दृश्य तथा वाईसराय की लॉज है। ऑवजरवेटरी हिल से सूर्योदय एवं सूर्यास्त को देखना भी अति रोचक है।

- **मनाली :** हिमालय की शान्त पृष्ठभूमि में बसा मनाली मदहोशी और साहस का ऐसा मेल प्रस्तुत करता है जिसने इसको उत्तरी भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय स्थल बना दिया है। हिमाचल प्रदेश की कुल्लू घाटी में अवस्थित यह जादुई स्थान ठण्डे देवदार के जंगलों तथा कलकल करती व्यास नदी से घिरा हुआ है।

- **दार्जिलिंग :** पश्चिम बंगाल में अवस्थित यह स्थान अपने हरे भरे चाय बगानों तथा विश्व की तीसरी ऊंची कंचनजंगा की चोटी के अचम्भित करने वाले दृश्य के कारण भी प्रसिद्ध है। इस शहर में जगह जगह मठ, वनस्पतियों के बाग और एक चिड़ियाघर है। दार्जीलिंग घूमने, चाय बगानों, गांवों तथा बाजारों को देखने का एक अदभुत स्थान है।

- उत्तराखंड के कुमायूँ क्षेत्र में बसा पर्वतीय स्थल **नैनीताल** गर्मियों के लिए एक लोकप्रिय स्थल है। यहां मणि सी चमकती सुन्दर नैनी झील तथा अनेक जंगल हैं। जंगलों में लम्बी सैर करना तथा नैनी झील में नौकायान करना यहां के मुख्य आकर्षण हैं।

- उत्तराखंड में देहरादून के निकट **मसूरी** उत्तर भारतीयों के लिए सप्ताहान्त का लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। यहां विशेषरूप से पर्यटकों के लिए अनेक सुविधाएँ हैं। गन हिल तक केवल कार की सवारी, केमल बैक रोड पर लम्बी सैर करना, कैम्पटी जलप्रपात, लाल टिब्बा तक घुड़सवारी आदि खुबसूरत आनन्ददायी क्रियाएँ हैं। लाल टिब्बा मसूरी की सबसे ऊँची व सुन्दर चोटी है। यहां से विशाल हिमालय के दर्शन भी किए जा सकते हैं।

- **श्रीनगर:** जम्मू और कश्मीर की ग्रीष्म राजधानी श्रीनगर में प्यारी झीलें, सुन्दर शिकारे और हाऊस बोट्स हैं। यहां के बागों में मुगल प्रभाव देखा जा सकता है क्योंकि इन्हें मुगल राजाओं ने बनवाया था। श्रीनगर में एशिया का सबसे बड़ा ट्यूलिप गार्डन भी है जबकि जोखिमों से प्यार करने वाले पर्यटक सर्दियों में यहां स्नो स्काईंग के लिए आते हैं।

- केरल में **मुन्नार** बड़े बड़े चाय बागानों के लिए प्रसिद्ध है। एक सुन्दर झील को घेरे कण्डेल के चाय-बागान में पत्तियां तोड़ने और उसके प्रसंस्करण को देखने और जानने का अवसर मिलता है। इस क्षेत्र को टेढ़े-मेढ़े रास्ते, धुंधली पहाड़ियों एवं मनमोहक पौधों और वन्य जीवों का वरदान प्राप्त है। यहां दक्षिण भारत की सबसे ऊंची चोटी अनामुडी तक के साहसिक ट्रेक तथा एरावीकुलम राष्ट्रीय उद्यान को देखना अथवा रॉक-क्लाईम्बिंग और पैराग्लाईडिंग पर जाना बहुत रोचक लगता है। यहां अवसर मिलते ही मन्नार देखने के लिए पर्यटकों का लालायित रहना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

- तमिलनाडु में **ऊंटी** गर्मियों के ताप से बचने के लिए एक शान्त स्थल है जिसके लिए आप मेटुपलयम से छोटी ट्रेन ले सकते हैं। ऊँटी के सबसे चर्चित आकर्षणों में 22 एकड़ में फैला सरकारी वनस्पति उद्यान है। यहां ग्रीष्म उत्सव के रूप में प्रति वर्ष मई में 'पुष्प प्रदर्शनी' का आयोजन, ऊँटी झील में नौकायन तथा नीलगिरी पहाड़ियों में सुन्दर दृश्य का दीदार करने के लिए डोडाबेटा चोटी पर चढ़ना प्रमुख हैं।

- **कोडईकनाल** मदुरै से 120 किलोमीटर दूर तमिलनाडु की पलानी हिल्स में बसा हुआ है। यहां वनस्पति और प्राणी जगत की प्रचुर विविधता है। यहां आप नाशपाती के बाग और तिकोनी छत वाले आकर्षक भवनों को देख सकते हैं। कोडईकनाल में जड़ी बूटियों तथा सुगन्धित तेलों को खरीदना बहुत ही रोचक है जिसमें यूकिलिप्टस का तेल विशेष रूप से लोकप्रिय हैं।

- **माऊन्ट आबू:** समुद्री तल से 1220 मीटर की ऊंचाई पर स्थित माऊन्ट आबू अरावली श्रृंखला का सबसे ऊंचा स्थल है। माऊंट आबू का शब्दिक अर्थ है 'बुद्धिमत्ता की पहाड़ी' तथा यह हरी भरी जंगली पहाड़ियों के बीच एक मरूद्यान है। यह राजस्थान के वीरान रेगिस्तान के

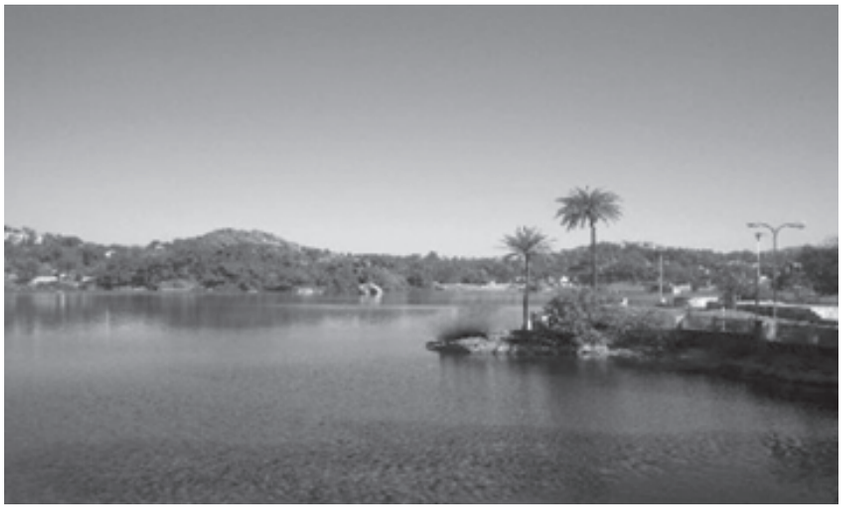

चित्र 12.6: माऊन्ट आबू पर्वतीय स्थान

बिल्कुल विपरीत है तथा राजस्थान का एक मात्र पर्वतीय क्षेत्र है। यहां पर आप दिलवाड़ा जैन मन्दिर देख सकते हैं जो भारत में जैन वास्तुकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। मन्दिर के भीतरी भाग में सफेद संगमरमर पर बहुत सुन्दर कटाई करके कलाकृतियां बनाई गई हैं। विमल वाशी मन्दिर और तेजपाल मन्दिर उन सबमें सर्वाधिक सुन्दर हैं। यह पर्वतीय क्षेत्र नक्की झील के लिए भी प्रसिद्ध है। देवी दुर्गा को समर्पित एक प्राचीन मन्दिर माऊन्ट आबू के उत्तर में 3 किलोमीर की दूरी पर अवस्थित है। इसको पहाड़ी की प्राकृतिक गुफ़ा में बनाया गया है।

माऊन्ट आबू के निकटवर्ती क्षेत्रों में भी रोचक पर्यटक स्थल हैं जैसे गुरू शिखर (15 किमी), अचलेश्वर महादेव मन्दिर (11 किमी.), माऊन्ट आबू वन्य जीव अभयवन (8 किलोमीटर), ब्रह्म कुमारी आध्यात्मिक विश्वविद्यालय तथा संग्रहालय। माऊन्ट आबू वन्य जीव अभयवन पक्षियों, तेंदुओं, साम्भरों और जंगली सुअरों की प्रजातियों का घर है।

- **खण्डाला:** महाराष्ट्र में पश्चिमी घाटों में अवस्थित एक पर्वतीय स्थल है। यह दक्कन के पठार और कांकण के मैदान को जोड़ने वाली सड़क पर है। लोनावाला सहयाद्री पर्वत श्रृंखला के ढ़ाल पर स्थित है तथा सुन्दर घाटियों, पहाड़ियों, दूधिया जल प्रपातों, हरी भरी हरियाली और आन्ननददायी ठण्डी हवाओं के वरदान के कारण प्रसिद्ध है। कुने जल प्रपात, टाईगर्स लीप, ड्यूक्स नोज, शिवाजी पार्क, राजमाची पार्क, रेवूड, लोहगड़ दर्शन तथा अमृतांजन प्वाइंट यहां के प्रमुख आकर्षण हैं।

तालिका 12.2: भारत में अन्य लोकप्रिय पर्वतीय स्थल

राज्य	कहां	पर्वतीय स्थल
आन्ध्र प्रदेश	अराकू घाटी	हार्सले हिल्स
गुजरात	सतपुड़ा	विल्सन हिल्स
हिमाचल प्रदेश	चैल	धर्मशाला, डलहौजी, कसौली, मनाली, शिमला, कुफरी, पालमपुर
जम्मू-कश्मीर		श्रीनगर, पहलगाम, गुलमर्ग, लेह
कर्नाटक		कुद्रमुख, केमानगुण्डी, मदीकेरी, नन्दी हिल्स, चिकमंगलूर
मध्य प्रदेश		पंचमढ़ी
महाराष्ट्र		लोनावाला, अम्बोली, चिकालदरा, खण्डाला, लावासा, महाबालेश्वर, माथेरन, पंचगनी, टोरानमल
मेघालय		नोकलीकई
ओडिसा		दरिंगबाड़ी
राजस्थान		माऊन्ट आबू
सिक्किम		गंगटोक, पेलिंग, लाचुंग
तमिलनाडु		ऊंटी, कुनूर, कोडईकनाल
उत्तराखंड		नैनीताल, मसूरी, अल्मोड़ा, औली, कौसानी, रानीखेत
पश्चिम बंगाल		कलीमपोंग, कुरसेओंग

चित्र 12.7: एक पर्वतीय स्थल

चित्र 12.8: भारत में पर्वतीय स्थल

टिप्पणियाँ

पाठगत प्रश्न 12.3

1. वन्य जीव अभ्यारण्य तथा पक्षी विहार को परिभाषित कीजिए।
2. पर्यटक वन्य जीव अभ्यारण्य तथा पक्षी विहारों को देखने क्यों जाते हैं?
3. नल सरोवर पक्षी विहार क्यों प्रसिद्ध है?

आपने क्या सीखा

- भारत को चार प्रमुख भागों में बांटा गया है। ये (अ) उत्तरी पर्वत, (ब) उत्तरी मैदान, (स) प्रायद्वीपीय पठार और (द) तटीय मैदान एवं द्वीप समूह है। पर्यटन की दृष्टि से सभी अति महत्वपूर्ण हैं।
- यह हमारे देश की बहु-विविधता को प्रदर्शित करता हैं। विविधता को पर्यटन के लिए मुख्य आकर्षण के रूप में देखा जा सकता है।
- भौतिक स्वरूप, जलवायु, परम्पराओं, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में विविधता उपलब्ध है। वस्तुतः देश की वृहत्तर विविधता पर्यटकों को विभिन्न स्थानों को देखने के अपार अवसर प्रदान करती है।
- कुछ क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए अनुकूल हैं तथा साहसिक पर्यटन के लिए उपयुक्त हैं।
- प्रकृति पर्यटन भी बहुत लोकप्रिय है। एक उदाहरण तो हिमालय ही है। राजस्थान का मरूस्थल भी संस्कृति और परम्पराओं में बहुत समृद्ध है।
- तटीय क्षेत्र, 'बीच' पर्यटन के लिए बहुत समृद्ध हैं। देश और विदेश से पर्यटक इनको देखने आते हैं। इसी प्रकार द्वीप भी बहुत लोकप्रिय हैं।
- हिमालय की पहाड़ियां और ढलान पर्वतीय स्थलों के रूप में बहुत लोकप्रिय हैं। अतः देश की बड़ी विविधता पर्यटन के बड़े अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार सरकार द्वारा सही बढ़ावा देने वाली नीति से देश में पर्यटन को प्रोत्साहन मिल रहा है।

पाठांत प्रश्न

1. भारत के विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों का वर्णन कीजिए।
2. भारत का भौतिक स्वरूप किस प्रकार पर्यटन की गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है?
3. भारत में पर्यटन केन्द्रों का विवरण लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

1. दक्कन के पठार को तीन भागों में बांटा जाता है। दक्कन ट्रैप, पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट। यह 7 लाख 59 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। इसकी औसत ऊंचाई 500 मीटर से 1000 मीटर तक है।

2. पश्चिमी घाट

3. अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह शैल से बने हैं जबकि लक्षद्वीप प्रवालों से निर्मित है। अण्डमान द्वीप समूह बड़े आकार के द्वीपों से बना है और इसमें द्वीपों की संख्या ज्यादा है जबकि लक्षद्वीप द्वीप समूह कम संख्या के छोटे द्वीपों से बना है।

12.2

1. भारत में कई पर्यटक सर्किट हैं। पर्यटक इन मार्गों से स्थानों के दर्शनार्थ जाते हैं। पर्यटन के दृष्टिकोण से इन स्थानों का बहुत महत्व है। उनकी अधिक मांग होने के कारण इन्हें टूर–ऑपरेटर (यात्रा करवाने वाले) संचालित तथा आयोजित करते हैं।

2. उत्तर भारत में कई पर्वतीय स्थल हैं। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण स्थल हैं: शिमला, कुल्लू, मनाली, मसूरी, नैनीताल, दार्जीलिंग, माऊन्ट आबू, धर्मशाला

3. तीन प्रकार: हवाई, जलीय और भूमार्गीय

   (अ) हवाई साहसिक पर्यटन – पैराशूटिंग और पैराग्लाइडिंग

   (ब) जलीय साहसिक पर्यटन – राफ्टिंग और वाटर स्काईंग

   (स) भू–साहसिक पर्यटन – रॉक क्लाइम्बिंग और एंगलिंग

12.3

1. वन्य जीव अभ्यारण्य मानवीय हस्तक्षेप से दूर वन्य जीवों के संरक्षण हेतु एक सुनियोजित क्षेत्र होता है। पक्षी विहार एक विशेष प्रकार के वन्य जीव अभ्यारण्य क्षेत्र होता है जिसमें पक्षियों के विविध प्रजातियों को उनके मूल निवास के रूप में संरक्षण दिया जाता है।

2. पर्यटक पशुओं और पक्षियों के स्वाभाविक व्यवहार को देखने के उत्सुक होते हैं।

3. नल सरोवर पक्षी विहार दलदली पक्षी विहार के रूप में प्रसिद्ध है तथा भारत का व्यस्ततम पर्यटक स्थल है।

टिप्पणियाँ

13

भारत में पर्यटन की प्रगति और प्रतिरूप

यात्रा और पर्यटन भारतीय परम्परा और संस्कृति का भाग है। पर्यटन उद्योग का एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह हमारी अर्थव्यवस्था के उभरते हुए पहलुओं में से एक है। इससे बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है और रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। इससे संरचनात्मक विकास होता है। वैश्वीकरण के युग में यात्रा और पर्यटन की गतिविधियाँ काफ़ी बढ़ गई हैं। संयुक्त राष्ट्र के विश्व पर्यटन संगठन ने भविष्यवाणी की है कि पर्यटन 4% की वार्षिक औसत दर से बढ़ता रहेगा। भारत ने अपनी समृद्ध प्राकृतिक और सांस्कृतिक विविधता के आधार पर 'विश्व पर्यटन मानचित्र' पर अपना अलग स्थान बनाया है। भारत में पर्यटन तीसरा बड़ा उद्योग है जिसमें एक करोड़ लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। यह अध्याय भारत में घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन की प्रगति और प्रतिरूपों के वर्णन करने का एक प्रयास है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों में अन्तर करने में सक्षम होंगे;
- पर्यटन का अर्थ तथा इसको प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का वर्णन कर सकेंगे;
- पर्यटन को बढ़ावा देने में पर्यटकों के आकर्षण की भूमिका को पहचान सकेंगे;
- भारत में विदेशी पर्यटकों की बढ़ती संख्या की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन के रुझान को दर्शा सकेंगे;
- घरेलू पर्यटन की प्रगति एवं प्रतिरूप का वर्णन कर सकेंगे;
- पर्यटन उद्योग से हुई कमाई पर चर्चा कर सकेंगे;
- पर्यटन को बढ़ावा देने में सरकार की पहल और प्रयास को उजागर कर सकेंगे।

13.1 पर्यटक

हम यह पढ़ चुके हैं कि यात्री और पर्यटक में स्पष्ट अन्तर है। उस व्यक्ति को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक नहीं कहा जाता है जब वह किसी देश में जाता है और वहां उसे कोई कार्य करने को मिल जाता है। उदाहरण के लिए राजनयिकों अथवा सैन्य बलों को पर्यटक नहीं समझा जाता है। इसलिए पर्यटक विभिन्न उद्देश्यों के लिए जाता है जिनमें मनोरंजन, अवकाश, विश्राम, स्वास्थ्य, अध्ययन, धार्मिक विश्वास/आस्था, व्यापार और बिना कोई पारिश्रमिक लिए मित्रों और रिश्तेदारों से मिलना इत्यादि शामिल है।

पर्यटकों को दो स्तरों में रखा जा सकता हैं – घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक: किसी विदेशी पासपोर्ट पर भारत आने वाला व्यक्ति जो कम से कम 24 घंटे भारत में रुकता है। यात्रा का उद्देश्य विश्राम, मनोरंजन, अवकाश, स्वास्थ्य, अध्ययन, धार्मिक आस्था, खेल, परिवार से मिलना, मिशन और बैठक करना हो सकता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति कोई धनोपार्जन नहीं करता तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक कहा जाता है।

घरेलू पर्यटक: कोई व्यक्ति यदि देश के भीतर ही अपने निवास या कार्य स्थल के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर जाता है और 24 घंटे से ज्यादा समय तक किसी आवासीय स्थल में रहता है। उसका उद्देश्य अवकाश, विश्राम, खेल, तीर्थयात्रा, धार्मिक विश्वास, अध्ययन, स्वास्थ्य और सामाजिक उत्सव होना चाहिए। परन्तु, अपने गांव अथवा पैतृक स्थान पर रिश्तेदारों अथवा मित्रों से मिलने के लिए छुट्टी पर आने वालों अथवा सामाजिक और उत्सव में शामिल होने वालों को पर्यटक नहीं माना जाता है।

13.2 पर्यटकों के लिए आकर्षण

पर्यटन हमारी संस्कृति और परम्पराओं का एक अभिन्न अंग रहा है। भारत को सभी आगन्तुकों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार के लिए जाना जाता है, भले ही वे किसी भी स्थान से आए हों। आगुन्तकों के लिए मैत्रीपूर्ण परम्पराएँ, विभिन्न प्रकार की जीवन शैलियाँ, सांस्कृतिक विरासत, रंगारंग मेले और त्योहार पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। प्राचीन काल से भारत के भिन्न भागों में शासकों ने आलीशान आरामदेह महलों, अद्भुत मन्दिरों, खूबसूरत बागों, ऊंचे किलों तथा मक़बरों का निर्माण किया है। अन्य आकर्षणों में सुन्दर 'समुद्र तट', वन्य जीव, राष्ट्रीय उद्यान, पक्षी विहार, बर्फ से ढ़ँक क्षेत्र, नदियाँ, पर्वतीय शिखर, प्रौद्योगिक पार्क, विज्ञान संग्रहालय और तीर्थ यात्रा केन्द्र सम्मिलित हैं। हेरिटेज ट्रेन्स, योग, आयुर्वेद, सिद्ध और प्राकृतिक स्वास्थ्य रिसोर्ट भी बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

भारतीय हस्तशिल्प विशेषत: जेवर, कालीन, चमड़े का सामान, हाथी दांत और पीतल का सामान विदेशी पर्यटकों की खरीददारी की मुख्य वस्तुएँ हैं। वे अपनी धनराशि का लगभग 40% अंश इस प्रकार के सामान की खरीददारी पर खर्च करते हैं। प्राकृतिक स्थल और सांस्कृतिक विरासत की सुंदरता भारत को पर्यटकों के लिए स्वर्ग बनाती हैं। इसी कारण से हमने 'अतिथि देवो भव:' (मेहमान भगवान का स्वरूप है) की सांस्कृतिक परम्परा को विकसित किया है जो हमारे सामाजिक

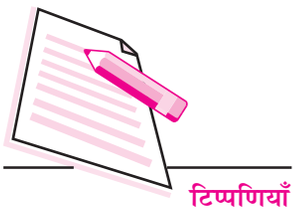

टिप्पणियाँ

व्यवहार में झलकती है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था 'एक पर्यटक के रूप में स्वागत कीजिए और एक मित्र के रूप में वापस भेजिए'।

पर्यटन के लिए भारत प्राकृतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत सम्पन्न देश है। भारत में पर्यटन को दो मुख्य वर्गों में बांटा जा सकता है – प्राकृतिक और सांस्कृतिक।

प्राकृतिक परिदृश्य में सम्मिलित हैं :

पर्वतीय पर्यटन, द्वीपीय पर्यटन, मरूस्थलीय पर्यटन, तटीय पर्यटन, सरोवरीय पर्यटन, वन्य जीव पर्यटन, साहसिक पर्यटन।

सांस्कृतिक पर्यटन में सम्मिलित हैं:

धार्मिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन, पारम्परिक पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, खेल पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन।

उपरोक्त सभी प्रकार के पर्यटन अलग-अलग भागों से घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

13.3 पर्यटन में उभरते आयाम

पारम्परिक पर्यटन के अतिरिक्त नई प्रकार की पर्यटन गतिविधियों का सृजन किया गया है। भारतीय पर्यटन में उभरते आयाम है :

- स्वास्थ्य पर्यटन
- आध्यात्मिक पर्यटन
- साहसिक पर्यटन
- मीटिंग, प्रोत्साहन, सम्मेलन तथा प्रदर्शनी (MICE) पर्यटन
- ग्रामीण पर्यटन
- स्थायी पर्यटन

भारत में स्वास्थ्य पर्यटन कम कीमत पर विश्व स्तरीय इलाज़ प्रदान करता है। इसमें भारतीय पद्धति की चिकित्सा जैसे आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति, यूनानी, सिद्ध और एलोपैथी शामिल हैं। भारतीय चिकित्सकीय पर्यटन विश्व के विकसित देशों जैसे अमेरिका, यूरोप और मध्य पूर्व क्षेत्रों से पर्यटकों को आकर्षित करता है जहां इलाज करवाना बहुत महंगा है।

भारत अध्यात्मवाद का केन्द्र है। जहां विभिन्न धर्मों का संगम है जैसे हिन्दू, सिक्ख, इस्लाम, ईसाई, बौद्ध और जैन। धार्मिक आस्था में विश्वास करने वाले लोगों ने भारत के भिन्न-भिन्न भागों में कई आकर्षक मन्दिरों, मस्ज़िदों, मठों और चर्चों का निर्माण किया है। ये धार्मिक स्थान बड़ी संख्या

में घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। साहसिक और प्राकृतिक पर्यटन भी आजकल लोकप्रिय हो रहा है। भौगोलिक विविधता भारत को साहसिक पर्यटन के लिए अच्छा स्थान तथा अवसर प्रदान करती है। अधिकतम साहसिक गतिविधियाँ ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों में चल रही हैं।

सभाएँ, प्रोत्साहन, सम्मेलन और प्रदर्शनी पर्यटन (Meeting, Incentives, Conferences and Exhibitions; MICE) वर्ष 1991 में भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद तेजी से उभरता हुआ क्षेत्र है। अब भारतीय पर्यटन उद्योग व्यापारिक पर्यटकों का स्वागत करने के लिए सभी प्रकार की सुविधाओं से पूरी तरह तैयार एवं सम्पन्न है। ऐसी सुविधाओं तथा संरचनात्मक ढांचे को अभी भी सुधारा जा रहा है तथा उसके लिए निवेश किया जा रहा है।

ग्रामीण पर्यटन में पर्यटकों का स्थानीय लोगों तथा उनके सांस्कृतिक जीवन के साथ परस्पर सम्बन्ध बन जाता है।

स्थायी पर्यटन वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करता है तथा साथ ही यह भी ध्यान रखा जाता है कि भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने में किसी भी तरह की कमी न हो। इसमें यह भी ध्यान रखा जाता है कि पर्यटन का पर्यावरण के साथ नकारात्मक प्रभाव ज्यादा न हो।

पाठगत प्रश्न 13.1

1. घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।
2. प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य पर्यटन की व्याख्या कीजिए।
3. MICE, सभाएँ – प्रोत्साहन – सम्मेलन और प्रदर्शनी पर्यटन का वर्णन कीजिए।

13.4 पर्यटन का विकास

पर्यटन देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन स्वभाव से बहुत गतिशील होता है। इसमें स्थान और समय के संदर्भ में परिवर्तित होता रहता है। किसी क्षेत्र में पर्यटन का विकास अनेक कारणों पर निर्भर करता है। पर्यटन का विकास सकारात्मक अथवा नकारात्मक हो सकता है। जब पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होती है तो विकास सकारात्मक होता है। नकारात्मक विकास तब होता है जब पर्यटकों की संख्या पिछले वर्षों की तुलना में घट जाती है। पर्यटकों की संख्या को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते हैं जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्राकृतिक और महामारियाँ इत्यादि।

यात्रा और पर्यटन की गतिविधियाँ मानव सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही चलती रही हैं। यह समय के साथ उतार-चढ़ाव के माध्यम से बढ़ता रहा हैं। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारत में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन में वृद्धि की दर बहुत कम थी। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत में पर्यटन गतिविधियों, पर्यटकों के आवागमन में तीव्रता से वृद्धि हुई। भारत का विकसित देशों के सामने

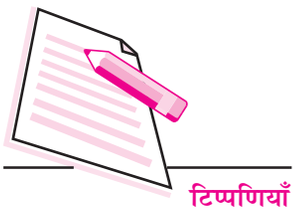

टिप्पणियाँ

खुलेपन के कारण ऐसा हुआ। पर्यटन क्षेत्र में मूलभूत संरचनाओं के विकास में इसकी उत्पत्ति निहित है।

भारत में 1990 के दशक के प्रारंभ से ही पर्यटन में वस्तुत: वृद्धि हो रही है। अमीर देशों की अच्छी वित्तीय स्थिति एवं अवकाश पाने वाले पर्यटकों के छुट्टियाँ बिताने, दर्शनीय स्थल देखने एवं व्यापारिक बैठकों आदि ने पर्यटन उद्योग को काफी बढ़ावा दिया है। गत दशकों में यात्रा और पर्यटन की वृद्धि के मुख्य कारण अच्छी यातायात व्यवस्था, पहुंचने की सुविधा, संचार एवं आवास इत्यादि हैं। 1980 के दशक के बाद भारत में पर्यटन गतिविधियों ने गति प्राप्त की। 1990 में दक्षिण एशिया में पर्यटकों के आने में काफी वृद्धि अंकित की गई। दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में भारत एक प्रमुख पर्यटक गंतव्य स्थल है। भारत में आधे से अधिक पर्यटकों का आगमन होता है और दक्षिण एशिया की पर्यटन आय का लगभग 75% भारत को प्राप्त होता है।

किसी देश के पर्यटन सूचकांक को मापने के अनेक तरीके हैं। उनमें से दो तरीके अति महत्वपूर्ण हैं। पहला अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों का आगमन तथा दूसरा पर्यटन से प्राप्त आय। हम भारत में पर्यटन की प्रगति को समझने के लिए पर्यटकों को दो वर्गों में बांट सकते हैं। (अ) विदेशी पर्यटकों का आगमन और (ब) घरेलू पर्यटकों का आगमन।

13.5 पर्यटन को प्रभावित करने वाले कारक

यात्रा और पर्यटन को प्रोत्साहन देने वाले अनेक कारक हैं। पर्यटन की मूलभूत संरचनात्मक सुविधाओं एवं आधुनिक सेवाओं में वृद्धि ने जीवन को सहज बनाया है एवं अधिक यात्राएँ करने के लिए प्रोत्साहित किया है। परिवहन में सुधार, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी में अत्यधिक परिवर्तनों ने दर्शनीय क्षेत्रों में लोगों के आवागमन को बढ़ाया किया है। किसी भी क्षेत्र में पर्यटन की वृद्धि के लिए उत्तरदायी कुछ महत्वपूर्ण कारक निम्नलिखित हैं:

- भौगोलिक
- सांस्कृतिक कार्यक्रम
- सुरक्षा और चौकसी
- आर्थिक स्थिति
- सुविधाएँ और सेवाएँ
- सरकारी नीतियाँ

(i) भौगोलिक

भौगोलिक स्थितियाँ पर्यटकों के प्रवाह को प्रभावित करती हैं। प्राय: गर्म मैदानी क्षेत्र के पर्यटक गर्मी में पर्वतीय क्षेत्रों में ठंढे और मनोहारी मौसम के लिए जाते हैं। ठंढे क्षेत्रों के पर्यटक सर्दी में गर्म क्षेत्रों में जाते हैं। किसी क्षेत्र की अवस्थिति, जलवायु, परिदृश्य और भौगोलिक विविधता बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। पर्यटकों की पसंद को ध्यान में रखकर विभिन्न मौसमों में पर्यटकों की संख्या का अनुमान लगाया जा सकता है।

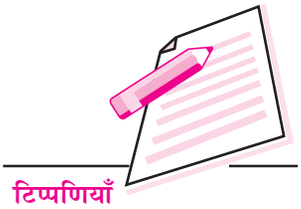

(ii) सांस्कृतिक कार्यक्रम

कुछ सामाजिक गतिविधियाँ जैसे उत्सव, मेले, नृत्य, बैठकें, स्थानीय रीति-रिवाज और धार्मिक अनुष्ठान बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा और उत्तर भारत में होली तथा दीवाली, गोवा में आनन्दोत्सव (कार्नीवाल), गुजरात में डांडिया, राजस्थान में मरूस्थल समारोह, हरियाणा में सूरजकुण्ड मेला, केरल में ओणम, आदि कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रम हैं जो बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

(iii) सुरक्षा और चौकसी

सुरक्षा और चौकसी पर्यटकों के आगमन में वृद्धि को अत्यधिक प्रभावित करती हैं। यदि किसी पर्यटक के साथ कोई दुर्घटना होती है तो पर्यटकों के आगमन की संख्या में कमी आ जाती है। प्रत्येक पर्यटक पहले अपनी सुरक्षा चाहता है। कश्मीर घाटी में पर्यटन बहुत कम हो चुका है। यह विशेषत: 1985 के बाद आतंकवादी गतिविधियों के कारण ऐसा हुआ। पर्यटकों का आगमन कश्मीर घाटी की ओर न होकर अन्य राज्यों जैसे हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड की ओर बढ़ गया।

(iv) आर्थिक स्थिति

लोगों की आर्थिक स्थिति भी पर्यटन को प्रभावित करती हैं। ऊंची आय वाले लोग प्राय: निम्न आय वर्ग की तुलना में अधिक यात्रा करते हैं क्योंकि उनकी क्रय शक्ति अधिक होती है। वे यात्रा और पर्यटन पर अधिक खर्च कर सकते हैं।

(v) सुविधाएँ और सेवाएँ

अनेक प्रकार की मूलभूत संरचनात्मक सुविधाएँ और सेवाएँ पर्यटकों के आवागमन को पुरजोर तरीके से निर्धारित करती हैं। इनमें आवास, होटल, पहुंच, यातायात, बैंकिंग सेवाएँ, संचार, बुकिंग, गाईड्स, मनोरंजन की गतिविधियाँ शामिल हैं। इन सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता पर्यटकों को किसी स्थान पर जाने के लिए प्रोत्साहित अथवा हतोत्साहित करती हैं।

(vi) सरकारी नीतियाँ

सरकारी नीतियाँ पर्यटकों के आगमन को बहुत हद तक प्रभावित करती हैं। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार कुछ सब्सिडी, पैकेज, उदार वीज़ा नीति और यात्रा नियमों में ढील दे सकती है। कुछ देशों में पर्यटकों के लिए वीज़ा की जरूरत नहीं होती और गंतव्य देश में पहुंचने पर वे प्राप्त करते हैं। जबकि अन्य देशों में इसे प्राप्त करने की बहुत कठोर शर्तें होती हैं। विभिन्न देशों से पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए भारत सरकार कुछ प्रदर्शनियाँ आयोजित करती हैं।

13.6 विदेशी पर्यटक आगमन

भारत अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए एक अच्छा आकर्षण है क्योंकि यहां सर्वोत्तम पर्यटन सुविधाएँ सस्ते में उपलब्ध है। वर्ष 1951 में भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों की कुल संख्या मात्र 16829

थी। वर्ष 1981 में यह संख्या बढ़ कर 11.4 लाख हो गई तथा वर्ष 2011 में 63.0 लाख हो गई। अत: पिछले 60 वर्षों में कुल 61.3 लाख विदेशी पर्यटक बढ़ चुके हैं। वर्ष 1951 से 2011 के बीच विदेशी पर्यटकों के आगमन में निरन्तर सकारात्मक वृद्धि रिकार्ड की गई है। वर्ष 1951 से 2010 के बीच भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों की दशकीय वृद्धि दर तथा वार्षिक वृद्धि दर को तालिका 13.1 के अंतिम दो कालमों में अच्छी तरह से अध्ययन किया जा सकता है।

तालिका 13.1: भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन : 1951-2010

वर्ष	आगमन	संख्या में सकल वृद्धि	दशकीय वृद्धि दर (%)	वार्षिक वृद्धि दर (%)
1951	16929	-	-	-
1960	123095	106266	631.4	63.14
1970	280821	157726	128.1	12.81
1980	1253694	972873	346.4	34.64
1990	1707158	453464	36.1	3.62
2000	2649378	942220	55.1	5.19
2010	5583746	2934368	110.7	11.07

स्रोत: पर्यटन मंत्रालय से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर गणना

तालिका 13.2: भारत मे विदेशी पर्यटकों का आगमन (1997-2015)

वर्ष	संख्या (मिलियन्स में)	प्रतिशत
1997	5.50	9.3
1998	5.54	–0.7
1999	5.83	5.3
2000	5.89	1.1
2001	5.44	–7.8
2002	5.16	–5.1
2003	6.71	30.1
2004	8.36	24.6
2005	9.95	19.0
2006	11.75	18.1
2007	13.27	12.9
2008	14.38	8.4
2009	14.37	–0.1
2010	17.91	24.6
2011	19.50	8.9
2012	18.26	–6.3
2013	19.95	9.2
2014	22.33	13.1
2015	23.33	4.4

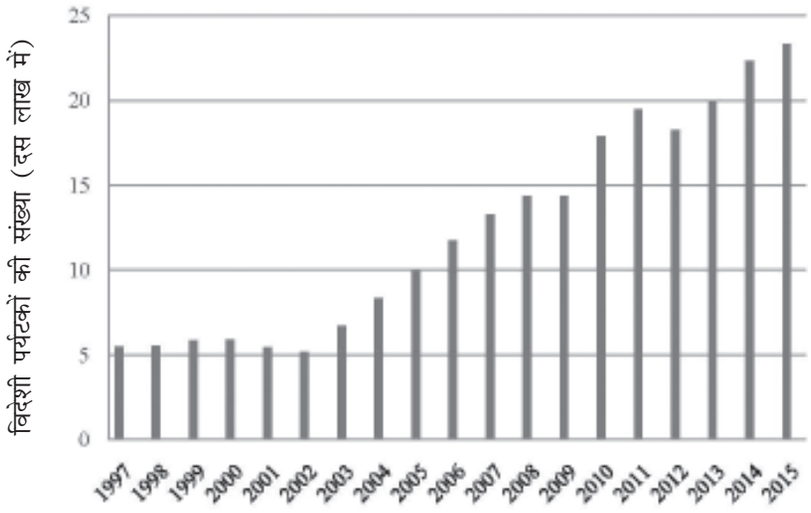

चित्र 13.1: विदेशी पर्यटकों के आगमन का प्रवृत्ति

13.7 विदेशी पर्यटन आगमन का प्रतिरूप

भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। वर्ष 1997 में भारत की विदेशी पर्यटकों में हिस्सेदारी मात्र 0.40% थी। वर्ष 2011 में यह बढ़ कर 0.64% हो गई। वर्ष 2011 में कुल 63.1 लाख विदेशी पर्यटक भारत के विभिन्न पर्यटक स्थलों पर पहुँचे। विश्व पर्यटन में भारत की रैंकिंग 2002 में 54वें स्थान से सुधर कर 2011 में 38वें स्थान पर पहुंच गई। तत्पश्चात वर्ष 2015 में और अधिक सुधार हुई एवं रैंकिंग 24वें स्थान पर आ गया। विदेशी पर्यटकों के प्रारूप की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

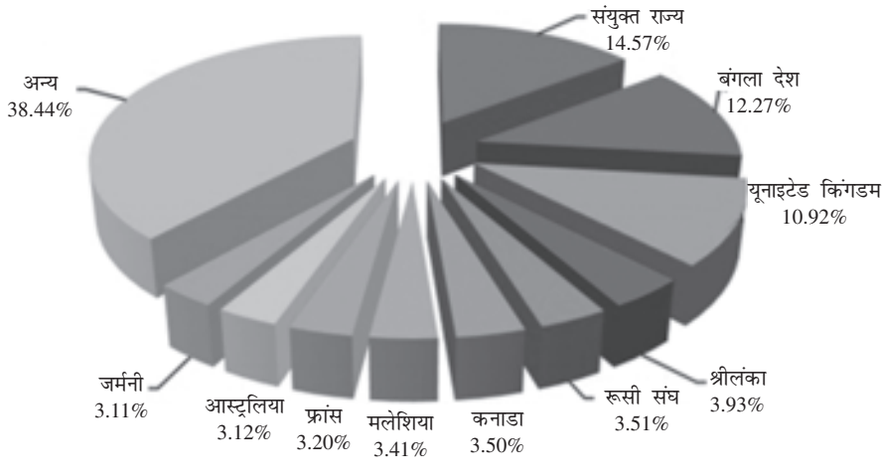

चित्र 13.2: वर्ष 2014 में भारत में चोटी के 10 देशों के पर्यटक आगमन का प्रतिशत

अब वर्ष 2014 में दस बड़े देशों का परिदृश्य वर्ष 2011 के परिदृश्य से बदल गया है। चित्र 13. 2 में संयुक्त राज्य अमेरिका का सबसे अधिक प्रतिशत दर्शाया गया है। यह 14.57% है जिसके

बाद बंगला देश 12.27% पर आता है। युनाईटिड किंगडम 10.92%, श्रीलंका 3.93%, रूसी संघ 3.51% कनाडा 3.50%, मलेशिया 3.41%, फ्रांस 3.20%, आस्ट्रेलिया 3.12%, और जर्मनी 3.11% है। अन्य सभी देशों का हिस्सा 38.44% के बराबर है।

भारत एक कम खर्चीला देश है। इसलिए विदेशी पर्यटक भारत में अधिक समय गुजारते हैं। यह हमारे लिए अच्छा है कि विदेशी पर्यटक यहां एक महीने से अधिक समय तक रुकते हैं। इसका अर्थ है कि भारत विदेशी पर्यटकों के लिए सर्वाधिक पसन्दीदा स्थान है।

तालिका 13.3: 2014 में दस राज्यों/संघीय क्षेत्रों में विदेशी पर्यटकों की संख्या

रैंक	राज्य/संघीय क्षेत्र	संख्या	हिस्सा प्रतिशत में
1	तमिलनाडु	4,657,630	20.6
2	महाराष्ट्र	4,389,098	19.4
3	उत्तर प्रदेश	2,909,735	12.9
4	दिल्ली	2,319,046	10.3
5	राजस्थान	1,525,574	6.8
6	पश्चिम बंगाल	1,375,740	6.1
7	केरल	923,366	4.1
8	बिहार	829,508	3.7
9	कर्नाटक	561,870	2.5
10	हरियाणा	547,367	2.4
	चोटी के दस राज्यों का कुल योग	20,038,934	88.8
	अन्य	2,528,716	11.2
	योग	**22,567,650**	**100**

संभव है कि प्रत्येक वर्ष विभिन्न राज्यों का भ्रमण करने वाले पर्यटकों की संख्या के अनुसार राज्यों की स्थिति बदलती रहे। उदाहरण के लिए वर्ष 2011 में महाराष्ट्र की स्थिति सबसे ऊपर थी जहां विदेशी पर्यटकों की संख्या 24.7% थी। तमिलनाडु दूसरे स्थान पर था। अब तमिलनाडु पहले स्थान पर आ गया है। यह 20.6% है जबकि महाराष्ट्र में 19.4% विदेशी पर्यटक 2014 में पहुँचे। सबसे कम विदेशी पर्यटक हरियाणा में 2.4% पहुँचे।

? क्या आप जानते हैं

दस चोटी के देशों में संयुक्त राज्य अमेरिका, बंग्लादेश, युनाइटेड किंगडम, श्रीलंका, रूसी संघ, कनाडा, मलेशिया, फ्रांस, आस्ट्रेलिया और जर्मनी से मिलाकर भारत आने वाले विदेशी पर्यटक 61.54% हैं। प्रतिवर्ष भारत में आने वाले 60 लाख से अधिक विदेशी पर्यटकों की संख्या के बावजूद विदेशी पर्यटकों में हमारा हिस्सा 1% से भी कम है। देश के सभी स्मारकों में से ताज़महल, कुतुब मीनार और आगरा का लाल किला सर्वाधिक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है।

क्रियाकलाप 13.1

कारण खोजिए कि क्यों भारत में सबसे अधिक विदेशी पर्यटक उत्तर अमेरिका तथा यूरोप से आते हैं और सबसे कम अफ्रीका से।

13.8 घरेलू पर्यटकों में वृद्धि

भारत में यात्राओं और पर्यटन का अच्छा इतिहास रहा है। समाज के विभिन्न वर्गों के लोग देश के विभिन्न पर्यटन स्थलों के भ्रमण के लिए आते हैं। अनेक कारणों से घरेलू पर्यटन बढ़ा है। आय के स्तरों का बढ़ना, क्रय शक्ति और गतिशील मध्यम वर्ग का उदय प्रमुख कारण है। घरेलू पर्यटकों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। विभिन्न राज्यों का भ्रमण करने वाले कुल घरेलू पर्यटकों की संख्या वर्ष 1997 में 1598.8 लाख थी। वर्ष 2007 में यह संख्या बढ़कर 5267 लाख हो गई हैं। दस वर्षों में 3668.8 लाख पर्यटकों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2015 में यह संख्या बढ़कर 14319.7 लाख हो गई। अत: 1997 से 2015 के बीच यह वृद्धि दर 795.65% की रही। यह वृद्धि 41.88% प्रतिवर्ष के हिसाब से बनती है। घरेलू पर्यटकों के भ्रमण में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इसका विस्तृत विवरण तालिका 13.4 में देखा जा सकता है।

तालिका 13.4: भारत में घरेलू पर्यटकों की संख्या (1997 से 2015)

वर्ष	संख्या (लाख में)	प्रतिशत
1997	159.88	14.1
1998	168.2	5.2
1999	190.67	13.4
2000	220.11	15.4
2001	236.47	7.4
2002	269.60	14.0
2003	309.04	14.6
2004	366.27	18.5
2005	392.04	7.0
2006	462.44	18.0
2007	526.70	13.9
2008	563.03	6.9
2009	668.80	18.8
2010	7477.0	11.8
2011	864.53	15.6
2012	1045.50	20.9
2013	1142.53	9.3
2014	1282.80	12.9
2015	1431.97	11.6

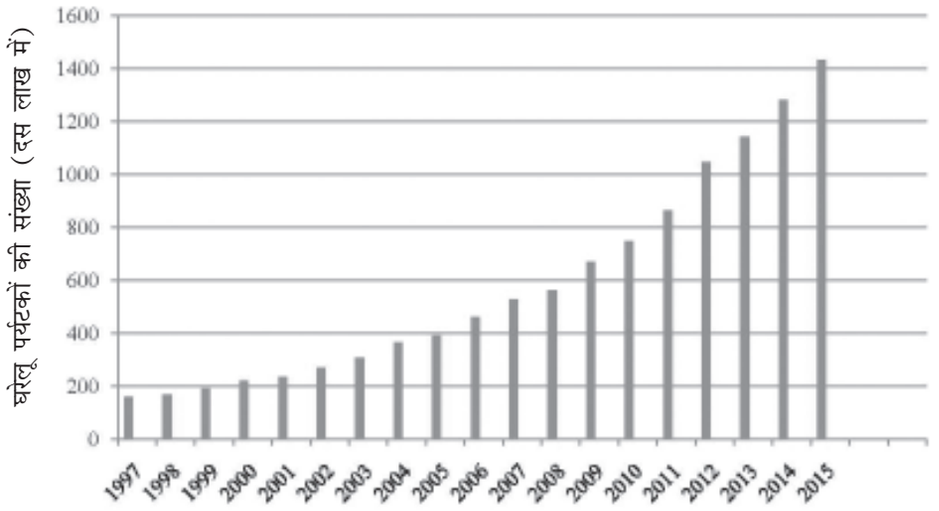

चित्र 13.3: घरेलू पर्यटकों की प्रवृत्ति

उपरोक्त ग्राफ़ (चित्र 13.3) 1997 से 2015 के बीच घरेलू पर्यटकों की वार्षिक वृद्धि को दर्शाता है। वर्ष 1997–2015 के बीच वार्षिक वृद्धि दर 41.88% थी। यह घरेलू पर्यटकों की वार्षिक वृद्धि दर में बढ़ोतरी का स्पष्ट संकेत है। घरेलू पर्यटन में थोड़े उतार–चढ़ाव के साथ निरन्तर वृद्धि हुई है।

घरेलू पर्यटन के स्वरूप

घरेलू पर्यटन का स्वरूप बिल्कुल स्पष्ट हैं। कुछ राज्य घरेलू पर्यटकों के आगमन की दृष्टि से बहुत आकर्षक हैं। उनमें से तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश एवं कई अन्य राज्य महत्वपूर्ण हैं।

तालिका 13.5: 2015 में चोटी के दस राज्यों/संघीय क्षेत्रों में घरेलू पर्यटकों की संख्या

रैंक	राज्य/संघीय क्षेत्र	संख्या (लाख में)	हिस्सा प्रतिशत में
1.	तमिलनाडु	333.46	23.3
2.	उत्तर प्रदेश	204.89	14.3
3.	आन्ध्र प्रदेश	121.59	8.4
4.	कर्नाटक	119.86	8.4
5.	महाराष्ट्र	103.40	7.2
6.	तेलंगाना	94.52	6.6
7.	मध्य प्रदेश	77.98	5.4
8.	पश्चिम बंगाल	70.19	4.9
9.	गुजरात	36.29	2.5
10.	राजस्थान	35.19	2.5
	शीर्ष के दस राज्य	1197.37	83.6
	अन्य	234.61	16.4
	कुल	**1431.97**	**100.0**

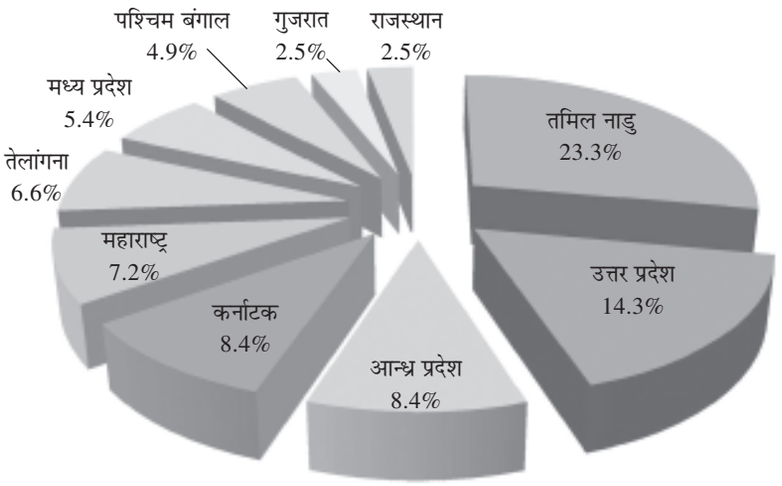

चित्र 13.4: शीर्ष के दस राज्यों/संघीय क्षेत्रों में घरेलू पर्यटकों का प्रतिशत : 2015

चित्र 13.4, वर्ष 2015 के दौरान घरेलू भ्रमण में शीर्ष के स्थान रखने वाले विभिन्न राज्यों/संघीय क्षेत्रों के प्रतिशत भाग और रैंक दर्शाता है। घरेलू पर्यटकों के भ्रमण में 2014 में उच्च स्थान प्राप्त करने वाले पांच राज्य तमिलनाडु (32760 लाख), उत्तर प्रदेश (18280 लाख), कर्नाटक (11830 लाख), महाराष्ट्र (9410 लाख) और आन्ध्र प्रदेश (9330 लाख) हैं जिनका प्रतिशत का हिस्सा क्रमशः 25.4%, 14.2%, 9.2%, 7.3% और 7.2% है। इन पांच राज्यों में देश के कुल घरेलू पर्यटकों का 63.26% है।

क्रियाकलाप 13.2

1. अपने ज़िले/राज्य के प्रमुख पर्यटक स्थल का भ्रमण कीजिए। उनके मूल स्थान के बारे में सूचना एकत्रित करके पर्यटकों के परिचय का ब्यौरा तैयार कीजिए। घरेलू और विदेशी पर्यटकों के आधार पर प्राप्त सूचना का विश्लेषण करने का प्रयास कीजिए। उन्हें भिन्न-भिन्न राज्यों अथवा देशों के आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता है।

2. चिकित्सकीय उपचार के लिए विभिन्न देशों से दिल्ली आने वाले अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को दर्शाने के लिए एक फ्लो चार्ट तैयार कीजिए।

13.9 पर्यटन से आय

पर्यटन एक ऐसा उद्योग है जिसमें विदेशी पूंजी अर्जित करने की अद्भुत विशेषता है। यह निरन्तर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है क्योंकि यह व्यापार में संतुलन बनाए रखने में सहायता करता है। जब कोई पर्यटक पर्यटन सेवाओं अथवा सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए कुछ पैसा खर्च करता है तो यह पर्यटन से प्राप्त आय कहलाती है। अपने गन्तव्य पर पहुंचने से पहले वे अपनी स्थानीय मुद्रा को अमरीकी डालर, यूरो, इंग्लैंण्ड के स्टर्लिंग पौण्ड, जापानी येन, आस्ट्रेलियाई अथवा सिंगापुर डालर में बदलवाता है। गन्तव्य देश में पहुंचने के बाद वे डालर इत्यादि को स्थानीय मुद्रा में बदलवाते

हैं। वर्ष 2011 में पर्यटन से प्राप्त विदेशी मुद्रा आय 16.56 अरब अमरीकी डालर थी जो वर्ष 2010 की आय 14.19 अरब डॉलर की तुलना में काफी अधिक थी। यह 16.7% की वार्षिक दर से वृद्धि हुई। मार्च 2015 में विदेशी मुद्रा विनिमय 1.662 अरब डॉलर थी जबकि मार्च 2014 में यह 1.674 अरब डॉलर थी। विदेशी मुद्रा विनिमय की वृद्धि दर 0.7% पहुँच गई।

वर्ष 1997 में विश्व पर्यटन आय में भारत का हिस्सा 0.64% था और वर्ष 2002 में यह 0.72% हो गया। इसके पश्चात इसमें बड़ी तेजी से वृद्धि हो रही है तथा यह 2011 में बढ़कर 1.61% हो गया।

जनवरी–अप्रैल 2013 में विदेशी विनिमय से आय 6.878 अरब अमेरिकन डालर थी जो 2012 की इसी अवधि में 6.145 अरब अमेरिकन डालर थी। यह 0.603 अरब अमरीकी डॉलर की वृद्धि थी। यह चार महीने के समय में 9.61% की वृद्धि दर हो जाती है। मार्किट सर्वेक्षण शोध के अनुसार भारतीय पर्यटन की विदेशी विनिमय आय 2010–2015 में 7.9% की वार्षिक चक्रवृद्धि दर से बढ़ने की उम्मीद है।

? क्या आप जानते हैं

घरेलू पर्यटकों का लगभग दो तिहाई (63.3%) भारत के पांच राज्यों तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और आन्ध्र प्रदेश से आते हैं।

13.10 पर्यटन को बढ़ावा देने में सरकार के प्रयास

देश में पर्यटन को बढ़ाने में केन्द्रीय और राज्य सरकारें अनेक प्रयास कर रही हैं। वर्ष 1949 में परिवहन मंत्रालय के अंतर्गत एक पर्यटन शाखा स्थापित की गई थी। परन्तु वर्ष 1957 में एक अलग पर्यटन विभाग तथा 1958 में पर्यटन विकास परिषद का गठन किया गया। इसने देश में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ाने में बहुत सहायता की। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में पर्यटन के विकास को नियोजित ढंग से शुरू किया गया। छठी पंचवर्षीय योजना में पर्यटन बड़ी तेजी से बढ़ा। सरकार द्वारा समय–समय पर उठाए गए कदमों के कारण देश में पर्यटकों का आगमन निरंतर बढ़ता रहा।

वर्ष 1982 में एक नयी पर्यटन नीति की घोषणा की गई जिसने एक नई दिशा निर्धारित की। भारत सरकार द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए नीतियाँ तैयार की गई। भारत सरकार द्वारा सातवीं पंचवर्षीय योजना में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया। बाद में वर्ष 1988 में मोहम्मद युनुस की अध्यक्षता में पर्यटन पर बनी राष्ट्रीय कमेटी ने पर्यटन में स्थायी विकास प्राप्त करने के लिए एक व्यापक योजना तैयार की। इस कमेटी की तैयार की गई रिपोर्ट को भारतीय पर्यटन में नींव का पत्थर कहते हैं। वर्ष 1992 में राष्ट्रीय कार्य योजना तैयार की गई थी जिसमें पर्यटकों के आगमन तथा विदेशी विनिमय में उल्लेखनीय वृद्धि प्राप्त करने की रणनीतियाँ शामिल थीं।

वर्ष 1996 में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय रणनीति का प्रारूप बनाया गया। 14 मई 2000 को सरकार ने पर्यटन मंत्रालय को एक अलग मंत्रालय घोषित किया और तब से सरकार

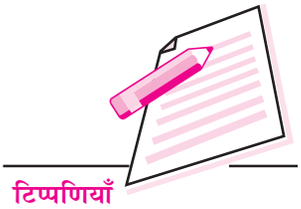

भारत में पर्यटन को प्रभावशाली ढंग से प्रोत्साहित करने के लिए कार्य कर रही है। पर्यटन को सुचारू बनाया गया और टूर-ऑपरेटरों तथा ट्रैवल एजेन्ट्स को स्वीकृति एवं अनुमति प्रदान करने के नियमों को सरल बनाया गया। वर्ष 2010 के संघीय बजट में भारत सरकार ने पर्यटन मंत्रालय को देश में पर्यटन गतिविधियाँ बढ़ाने के लिए 1000 करोड़ रूपये से भी ज्यादा की राशि आबंटित की।

पाठगत प्रश्न 13.2

1. पर्यटन की वृद्धि को परिभाषित कीजिए।
2. भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन का स्वरूप क्या है?
3. भारत का कौन-सा राज्य घरेलू पर्यटन में उल्लेखनीय योगदान देता है?

आपने क्या सीखा

- पर्यटक किसी स्थान का अनेक उद्देश्यों से भ्रमण करता है जिनमें मनोरंजन, अवकाश, विश्राम, स्वास्थ्य, अध्ययन, धार्मिक विश्वास, व्यापार, दोस्तों और रिश्तेदारों से बिना किसी कमाई के उद्देश्य से मिलना शामिल होता हैं।
- भारत में सभी प्रकार के पर्यटन को दो मुख्य वर्गों प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य आधारित पर्यटन में बांटा जा सकता है।
- पर्यटन का स्वरूप अति गतिशील है जो भूसतह पर तथा समय के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।
- किसी क्षेत्र या प्रदेश में पर्यटन में वृद्धि कई कारणों पर निर्भर करती हैं। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्राकृतिक, महामारियाँ इत्यादि जैसे अनेक कारक पर्यटकों के आगमन को प्रभावित करते हैं।
- घरेलू पर्यटन में वृद्धि अनेक कारणों पर निर्भर करती है। लेकिन बहुत महत्वपूर्ण कारणों में आय के स्तर, क्रय शक्ति तथा गतिशील मध्य वर्ग का उदय शामिल है।
- घरेलू पर्यटकों में निरंतर वृद्धि हो रही है। वर्ष 2001-2011 तक दशकीय वृद्धि दर 260% थी जबकि वर्ष 1997-2011 में यह 432% थी।
- देश में शीर्ष के दस राज्य घरेलू कुल पर्यटकों का 85% का योगदान देते हैं। घरेलू पर्यटकों का लगभग दो तिहाई (63.3%) केवल पांच राज्यों - उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र से आता है।

टिप्पणियाँ

- जब कोई पर्यटक पर्यटन सेवाएँ और सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए पैसा खर्च करता है तो इसे पर्यटन से प्राप्त आय कहते हैं। वर्ष 2011 में पर्यटकों से विदेश विनिमय आय 16.56 अरब अमरीकी डालर थी जो वर्ष 2010 में 14.19 अरब अमरीकी डालर थी। यह 16.7% वार्षिक वृद्धि दर दर्शाती है।
- देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए केन्द्रीय और राज्य सरकारें अनेक प्रयास कर रही हैं। पर्यटन को सुचारू बनाया गया है और टूर-आपरेटरों तथा ट्रेवल एजेन्टों को स्वीकृति एवं अनुमति देने के नियमों को सरल बना दिया गया है।
- किसी क्षेत्र में पर्यटन की वृद्धि के लिए उत्तरदायी कुछ कारकों जैसे- भौगोलिक, सांस्कृतिक, सुरक्षा, आर्थिक, सुविधाएँ, सेवाएँ तथा सरकारी नीतियाँ हैं।
- भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन निरन्तर बढ़ रहा है। वर्ष 1951 से 2014 तक इसमें तीव्र वृद्धि थी। वर्ष 1951 में विदेशी पर्यटकों की संख्या मात्र 16,829 थी।
- वर्ष 2011 में यह बढ़कर 6.30 लाख हो गई।
- वर्ष 2014 तक यह संख्या बढ़ कर 74 लाख हो गई। वर्ष 2015 की ट्रैवल एण्ड टूरिज्म कम्पीटीटिवनेस रिपोर्ट ने भारत को 141 देशों में 52 वें स्थान पर रखा था।
- भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन मंत्रालय अनेक राष्ट्रीय नीतियाँ बनाता है। इसके अतिरिक्त मंत्रालय भिन्न स्टेकहोल्डर्स (हित धारकों) तथा निजी क्षेत्र के प्रतिनिधियों से परामर्श एवं सहयोग भी करता है।
- पर्यटन के नए रूपों जैसे ग्रामीण, समुद्री पर्यटन, चिकित्सा एवं पर्यावरणीय पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 'अतुल्य भारत' अभियान भी है।
- शीर्ष के दस देशों से भारत आने वाले पर्यटक 61% है। इन दस देशों में संयुक्त राज्य अमेरीका, बंगलादेश, युनाइटेड किंग्डम, श्रीलंका, रूसी संघ, कनाडा, मलेशिया, फ्रांस, आस्ट्रेलिया और जर्मनी शामिल हैं।
- वर्ष 2014 में विदेशी पर्यटकों की आगमन संख्या में भारत के राज्यों तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान का अधिक भाग था तथा सबसे कम हरियाणा में मात्र 2.4% था।

पाठांत प्रश्न

1. भारत भ्रमण पर आने वाले विदेशी पर्यटकों की वृद्धि और स्वरूप पर चर्चा कीजिए।
2. पर्यटन की वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या कीजिए।
3. पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का मूल्यांकन कीजिए।

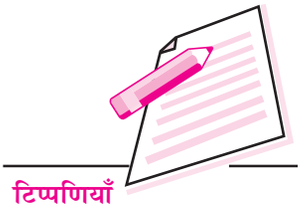

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1

1. कोई व्यक्ति अपने देश के भीतर ही अपने निवास अथवा कार्य स्थान के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर जाता है और 24 घंटे से ज्यादा समय तक किसी आवासीय स्थल में रहता है तो उसे घरेलू पर्यटक कहते हैं। विदेशी पर्यटक वह व्यक्ति होता है जो किसी विदेशी पासपोर्ट पर भारत भ्रमण के लिए आता है और कम से कम 24 घंटे भारत में रहता है। आगमन का उद्देश्य अवकाश, विश्राम, खेल, तीर्थ–यात्रा, धार्मिक विश्वास, शिक्षा, स्वास्थ्य चिकित्सा और सामाजिक समारोह होना चाहिए। किसी प्रकार की नौकरी/कार्य करना और बदले में वेतन/पारिश्रमिक प्राप्त करना नहीं होना चाहिए।

2. प्राकृतिक परिदृश्य में पर्वतीय पर्यटन, द्वीपीय पर्यटन, मरूस्थलीय पर्यटन, तटीय पर्यटन, सरोवरीय पर्यटन, वन्य जीव पर्यटन, साहसिक पर्यटन शामिल हैं। सांस्कृतिक परिदृश्य में धार्मिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन, पारम्परिक पर्यटन, स्वास्थ्य एवं चिकित्सकीय पर्यटन, खेल और ग्रामीण पर्यटन शामिल हैं।

3. MICE का अर्थ है मीटिंग्स्, इन्सेन्ट्विस, कांफ्रेसिस और एक्जीवीशन्स। पर्यटन क्षेत्र में यह रुझान तेजी से उभर रहा है, विशेष रूप से वर्ष 1991 के बाद जब भारतीय अर्थव्यवस्था को उदार बनाया गया। चिकित्सकीय पर्यटन भी तेजी से उभरता क्षेत्र है क्योंकि यहां उपचार और देखभाल सस्ती एवं प्रभावकारी है।

13.2

1. पर्यटन में वृद्धि सकारात्मक अथवा नकारात्मक हो सकती है। सकारात्मक वृद्धि तब होती है जब पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होती है। नकारात्मक वृद्धि तब होती है जब पर्यटकों की संख्या पिछले वर्ष की संख्या की अपेक्षा कम हो।

2. वर्ष 2014 में शीर्ष के दस देशों से भारत में आने वाले पर्यटकों की संख्या का अमेरिका से 14.57% था जबकि बांग्लादेश से आने वाले 12.27% पर्यटक थे।

3. घरेलू पर्यटन में तमिलनाडु राज्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान है।

टिप्पणियाँ

14

विश्व में पर्यटन का विकास और स्वरूप

विश्व में अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था के लिए पर्यटन बहुत ही महत्वपूर्ण है। जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है कि यह एक सेवा उद्योग है। पर्यटन के लिए चुने गए देश में यह स्थानीय रोजगार के अवसरों में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह घरेलू हस्तशिल्प उद्योगों को जीवन देता है तथा अनेक परिवारों को आजीविका प्रदान करता है। देश के लिए यह विदेशी मुद्रा अर्जित करने में सहायता करता है। विगत समय में विश्व के अनेक भागों में पर्यटन बहुत व्यापक रूप से बढ़ रहा है। उन क्षेत्रों में वृद्धि की उच्च दर देखी गई है जो कुछ दशक पहले बहुत महत्वपूर्ण नहीं थे तथा पर्यटन के पारम्परिक स्थलों में वैसी वृद्धि नहीं हो रही है। 'वृद्धि' शब्द का अभिप्राय गत समय की तुलना में वर्तमान समय में पयर्टकों की संख्या अथवा प्रतिशत में हुई वृद्धि अथवा कमी से है। 'स्वरूप' का अर्थ पृथ्वी पर पर्यटन गतिविधियों के क्रमिक वितरण से है। इस अध्याय में विश्व में पर्यटन के विकास और उसके स्वरूप को स्पष्ट करने का एक प्रयास किया गया है। साथ ही इस अध्याय में कारण तथा कारक सहित यह भी वर्णन किया जाएगा कि ऐसा क्यों हो रहा है?

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- विश्व की अनेक भौगोलिक ईकाइयों की पहचान कर सकेंगे;
- विश्व में पर्यटन को प्रभावित करने वाले घटकों अथवा कारकों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- विश्व को विभिन्न भू-आकृतियों के आधार पर बाँट कर उनका वर्णन कर सकेंगे;
- पर्यटन के लिए विभिन्न ईकाइयों के महत्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- विश्व में पर्यटन के भावी स्वरूप पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- विश्व में पर्यटन के विभिन्न आकर्षणों की व्याख्या कर पाएंगे;
- विश्व में पर्यटन के विकास को स्पष्ट कर सकेंगे;

- विश्व में पर्यटन के स्वरूप को पहचान कर उनका वर्णन कर सकेंगे; और
- पर्यटन को बढ़ावा देने के सरकारी प्रयासों को उजागर कर सकेंगे।

14.1 परिचय

पर्यटन का लोगों की अच्छी आर्थिक स्थिति, खाली समय, विभिन्न स्थानों को देखने की रुचि के साथ-साथ पर्यटन के लिए पैसा खर्च करने की इच्छा और योग्यता से गहरा संबंध है। पर्यटन का संबंध उस पर्यटक की यात्रा से है जो अपने निवास स्थान से दूर विश्राम, मनोरंजन, व्यापार, बैठकों, सभाओं और प्रदर्शनियों के लिए एक वर्ष से अधिक न रहता हो। पर्यटक ऐसा कोई कार्य भी नहीं करते जिसके लिए उन्हें भुगतान किया जाता हो। यात्रा और पर्यटन स्वैच्छिक गतिविधि है जिसे सरकार से दिए गए अनेक प्रलोभन और प्रोत्साहन का सहारा भी मिल सकता है, जैसे रियायती अवकाश यात्रा, किसी बैठक अथवा सभा पर खर्च की गई राशि को प्रदान करना। यहां पर्यटन की वृद्धि का अर्थ है एक समय-अवधि से दूसरी समय-अवधि में पर्यटकों की संख्या में हुई वृद्धि। यह वृद्धि सदैव संख्या का बढ़ना ही नहीं होती अपितु कभी संख्या घट भी सकती है। उदाहरण के लिए पर्यटकों की संख्या आधार वर्ष के तुलना में ही कम हो सकती है। उस मामले में वृद्धि को नकारात्मक कहा जाता है। पर्यटकों की संख्या में वृद्धि या कमी विभिन्न कारणों पर निर्भर करती है। उन कारकों को योगदान देने वाले कारक कहा जाता है। पर्यटन का स्वरूप पर्यटन की गतिविधियों का स्थान के संदर्भ में मूल्यांकन करने की कोशिश करता है। अत: पर्यटन का विकास और स्वरूप पर्यटन की गतिविधियों के स्थानिक और कालिक मूल्यांकन की ओर संकेत करता है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में पर्यटन का वर्तमान स्वरूप विभिन्न देशों की सरकारों के प्रयासों का परिणाम है।

14.2 विश्व में पर्यटन को प्रभावित करने वाले घटक

पर्यटक का अनेक घटकों के साथ सीधा संबंध है। पर्यटकों के साथ जुड़े कुछ घटक हैं :

(i) पर्यटकों की अच्छी आय

(ii) सवैतनिक अवकाश अथवा अवकाश का अधिकार

(iii) यात्रा खर्च

(iv) तकनीक

(v) पैकेज प्रदाता/यात्रा संचालक

(vi) नवीनतम जानकारी/मीडिया

(vii) विकासशील देशों में बढ़ता मध्यम वर्ग

(viii) भ्रमण के नये स्थलों का उदय और पर्यटन निवेश में बढ़ोतरी

पर्यटन स्थलों तक की यात्रा, निवास, भोजन और पेय, मनोरंजन के लिए धन की आवश्यकता होती है। पर्यटन गतिविधियों को तभी आयोजित किया जा सकता है जब पर्यटकों की वित्तीय स्थिति

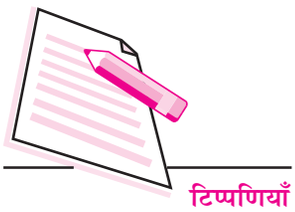

टिप्पणियाँ

मजबूत हो। दूसरे शब्दों में पर्यटन गतिविधियों का अनुमान लगाने के लिए प्रति व्यक्ति आय ही सबसे अच्छा तरीका है। ऐसे देशों में लोग जिनकी प्रति व्यक्ति आय अधिक होती है, वे स्थानीय से वैश्विक यात्राओं पर अधिक जाते हैं। सरकार/कम्पनी/कॉर्पोरेट में काम करने वालों को सवैतनिक अवकाश भी मिलता है अथवा वे अवकश के अधिकारी होते हैं। यह एक प्रकार का प्रोत्साहन है जो पर्यटन को बढ़ावा देता है। ये लोग अधिकतर पर्यटन गतिविधियाँ करते हैं। जहां पर भी ऐसी सुविधाएं हैं, वहां पर्यटन बढ़ रहा है।

यात्रा खर्च पर्यटन को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। सामान्य से कम कीमत पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देती हैं जबकि अधिक कीमत पर्यटन गतिविधियों में बाधक बनती हैं। आमतौर पर यह निर्धारण का महत्वपूर्ण कारक है परन्तु बहुत अमीर लोगों के लिए यह कोई बड़ा कारण नहीं है। यह भी वास्तविकता है कि समाज का सबसे अमीर वर्ग पर्यटन में योगदान नहीं देता। अत: यात्रा खर्च पर्यटन को प्रभावित करता है।

प्रौद्योगिकी की प्रगति ने विश्व को बहुत निकट ला दिया है। विश्व के विभिन्न पर्यटक स्थलों के बारे में इंटरनेट पर बहुत जानकारी उपलब्ध है। बहुत से चित्र भी उपलब्ध हैं। पर्यटकों को अपना गन्तव्य चुनने के लिए इनका अत्यधिक महत्व है। अत: इंटरनेट पर सूचनाओं का एक क्लिक की दूरी पर होने से पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पैकेज देने वाले/यात्रा संचालक पर्यटकों के लिए बहुत सहायक होते हैं। वे पर्यटकों की मांग के अनुसार यात्रा-क्रम को बेहतर बनाते हैं। मूल रूप से वे सहायक हैं तथा पर्यटकों की यात्रा को सुखद बनाने में सहायता करते हैं। जहां कहीं भी यात्रा पैकेज देने वाले उपलब्ध हैं और वे जिस क्षेत्र में काम कर रहे हैं, वहां विश्व के पर्यटन मानचित्र पर पर्यटन गतिविधियाँ अधिक दिखाई देती हैं।

प्रिंट और श्रव्य-दृश्य मीडिया भी विश्व को निकट लेकर लाया है। वे विश्व के प्रत्येक भाग के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। विश्व के बारे में जानकारी भी दुनियाँ में पर्यटन के बढ़ने की प्रवृत्ति पर प्रभाव डालती है। अच्छी प्रकार की लिखित जानकारी वाले तथा प्रसिद्ध क्षेत्रों में पर्यटक अधिक आते हैं जबकि कम प्रचलित क्षेत्र पर्यटकों में लोकप्रिय नहीं हैं।

विकासशील देशों में आर्थिक सम्पन्नता और विकास तथा अच्छी वित्तीय स्थिति रखने वाले वर्ग का उदय भी यात्रा और पर्यटन के लिए एक अतिरिक्त कारक है। यह पर्यटन गतिविधियों की सम्भावना को बढ़ाता रहा है।

विश्व में नए भ्रमण स्थल उभर रहे हैं। ऐसे क्षेत्र में संरचनात्मक ढांचे के विकास के लिए ज्यादा से ज्यादा निवेश किए जाते हैं। इसलिए पर्यटन में निवेश इस उद्योग को बढ़ावा दे रहा है।

14.3 विश्व में भ्रमण स्थलों पर पर्यटकों के लिए आकर्षण

विश्व के विभिन्न भागों में पर्यटकों के लिए अलग प्रकार के आकर्षण हैं। विकसित और विकासशील दुनियाँ अल्प विकसित दुनिया की तुलना में पर्यटकों के लिए अधिक अवसर प्रदान करती है। प्रारम्भ में पर्यटन मुख्यत: विकसित दुनिया तक ही सीमित था परन्तु अब चलन में बदलाव आया है और विकासशील दुनिया में अधिक से अधिक पर्यटन गतिविधियाँ हो रही हैं। मुख्य आकर्षणों को

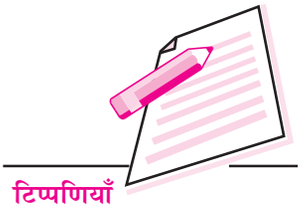

सांस्कृतिक, प्राकृतिक, घटनाओं, मन-बहलाव और मनोरंजन के अंतर्गत बांटा जा सकता है। उनके अनेक घटक होते हैं जिन्हें निम्नलिखित तालिका के माध्यम से देखा जा सकता है।

तालिका 14.1: पर्यटकों के लिए आकर्षणों पर एक विहंगम दृष्टि

सांस्कृतिक	प्राकृतिक	आयोजन	मन-बहलाव	मनोरंजन
ऐतिहासिक स्थल	दृश्य	बड़े-आयोजन	भ्रमण	थीम पार्क
पुरातत्विक स्थल	समुद्री दृश्य	सामुदायिक आयोजन	गोल्फ	मनोरंजन पार्क
वास्तुकला	पार्क	त्यौहार	तैराकी	कैसीनो
पकवान	पर्वत	धार्मिक आयोजन	टेनिस	सिनेमा
स्मारक	द्वीप, समुद्री बीच	खेल आयोजन	क्रिकेट	शॉपिंग (खरीददारी) सुविधाएं
औद्योगिक स्थल कला केंद्र	वनस्पति	व्यापार मेले	हाईकिंग	निष्पादन
संग्रहालय	प्राणी जगत	प्रदर्शनियाँ	फास्ट ट्रैक कार रेस	खेल परिसर
जातीय	तट	सम्मेलन	बर्फ के खेल	जल-पार्क
संगीत समारोह	गुफाएं	बैठकें	वर्ल्ड कप	रॉक गार्डन
खेल आयोजन	रंगमंच	–	भोजन	फुटबाल
अन्य	अन्य	अन्य	अन्य	अन्य

14.3.1 सांस्कृतिक आकर्षण

अनेक सांस्कृतिक क्षेत्र पर्यटकों की मांग पर बने रहते हैं। इनमें ऐतिहासिक स्थान, पुरातात्विक स्थल, पुराने भवनों की विभिन्न वास्तुकला के निर्माण, ऐतिहासिक महत्व के स्मारक इत्यादि शामिल हैं। संग्रहालय विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक और वास्तुकला के साक्ष्यों का संग्रह होता है। वे पर्यटकों को आकर्षित करते हैं क्योंकि उनमें से अनेक की उनको जानने की रुचि होती है। थियेटरों में संगीत सम्मेलनों तथा रोचक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कार्यक्रमों का आयोजन पर्यटन के लिए बड़े आकर्षण के केन्द्र होते हैं। कुछ स्थान अपने ऐतिहासिक पकवानों और भोजन के लिए प्रसिद्ध हैं। अत: पकवान की सुविधा पर्यटकों को आकर्षित करती है।

14.3.2 प्राकृतिक आकर्षण

प्राकृतिक खूबसूरत स्थल पर्यटकों की कमजोरी होते हैं। वे ऐसे स्थानों को देखना चाहते हैं जहां कहीं भी प्राकृतिक दृश्य, समुद्री तट तथा पर्वत होते हैं- वे स्थान पर्यटकों के लिए बेहतरीन होते हैं। पर्वतीय स्थल, द्वीप और समुद्री किनारे (बीच) जैसे स्थानों को पर्यटक खोजते रहते हैं। अलग प्रकार के पार्क तथा वनस्पति और प्राणी जगत के कई प्रकार भी पर्यटकों के रुचि के स्थल होते हैं।

14.3.3 आयोजनों के कारण आकर्षण

पूरे विश्व भर में अनेक प्रकार के विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उनमें रुचि रखने वाले लोग ऐसे आयोजनों में उपस्थित होने का प्रयास करते हैं ताकि आयोजन से पूरी तरह परिचित हो सकें अथवा विश्व के अलग-अलग कोनों से व्यापार कर सकें। उन्हें बड़े आयोजन (मेगा-इवेन्ट्स) कहा जाता है जैसे व्यापार मेले इत्यादि। बड़े खेल आयोजन खेल से जुड़े लोगों के अतिरिक्त पूरी दुनियाँ से लाखों लोगों को आकर्षित करते हैं। ओलम्पिक, विश्व फुटबाल मुकाबले तथा विश्व कप क्रिकेट मैच ऐसे आयोजनों के कुछ उदाहरण हैं। सामुदायिक आयोजन, मेले, त्यौहार और धार्मिक सम्मेलन लाखों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। मक्का-मदीना में हज, महाकुम्भ अथवा सूर्य और चंद्रग्रहण के अवसरों पर गंगा में पवित्र स्नान इसके उदाहरण हैं। पूरे विश्व में सम्मेलन, बैठकें और कॉरपोरेट आयोजन भी बहुत बड़ी संख्या में लोगों को एक जगह एकत्र करते हैं।

14.3.4 मन-बहलाव के आकर्षण

मन बहलाव के अनेक आकर्षण पर्यटकों को चुम्बक की तरह खींचते हैं। उनमें से दृश्यावलोकन, खेल जैसे गोल्फ, तैराकी, टेनिस, क्रिकेट, वाट्र रैफटिंग इत्यादि कुछ साहसिक पर्यटकों की रुचि के होते हैं। अत: वे यात्रा एवं पर्यटन को बढ़ावा देते हैं।

14.3.5 अन्य मनोरंजक आयोजन

यात्रा और पर्यटन को विभिन्न प्रकार की मनोरंजन सुविधाएं प्रदान करके भी बढ़ावा दिया जाता है। कुछ प्रसिद्ध पर्यटक केन्द्रों में मनोरंजन पार्क, कैसिनो (जुआ घर), शॉपिंग (खरीददारी) सुविधाएं इत्यादि होती हैं। खेल केन्द्र और खेलों के आयोजन भी पर्यटकों के लिए बहुत रुचिकर होते हैं। ये कुछ ऐसे थीम हैं जिनकी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों में बहुत मांग बनी रहती है।

क्रियाकलाप 14.1

अपने राज्य के ऐसे स्थानों की सूची बनाइये जहां अंतर्राष्ट्रीय खेल करवाए जाते हैं तथा विभिन्न देशों के पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं।

पाठगत प्रश्न 14.1

1. पर्यटकों के साथ जुड़े किन्हीं पांच कारकों की सूची बनाइए।
2. किन्हीं तीन प्राकृतिक और किन्हीं तीन सांस्कृतिक आकर्षणों के बारे में लिखिए।
3. खेल पर्यटन के बारे में आप क्या जानते हैं?

14.4 यात्रा और पर्यटन का स्थानिक वितरण

पर्यटन का स्थानिक वितरण विभिन्न पर्यावरणीय स्थितियों पर निर्भर करता है। प्राकृतिक दृश्य, सुन्दर प्राकृतिक स्थल, आसान पहुंच तथा सामान्य जलवायुगत परिस्थितियाँ कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं। इन सबसे अलग क्षेत्रों का सौन्दर्यीकरण और दृश्य निर्माण, बांध निर्माण तथा बहुउद्देशीय परियोजनाओं का विकास, मूर्तिकृत बाग, स्मारक और प्रसिद्ध स्थलों का पर्यटक भ्रमण करते हैं। महत्वपूर्ण धार्मिक त्यौहारों पर पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं जहां उपर्युक्त आकर्षण पर्यटकों के पक्ष में होते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त कुछ महत्वपूर्ण पर्यटक स्थलों को नीचे मानचित्र में दर्शाया गया है। इनमें से अधिकांश आर्थिक रूप से विकसित यूरोप के देशों, भूमध्य सागर के इर्द-गिर्द तथा अमेरिका में स्थित हैं। समय के साथ अन्य विकासशील देशों का नए पर्यटक स्थलों के रूप में महत्व बढ़ गया है। विश्व में पर्यटन गतिविधियों के व्यापक विस्तार का मुख्य कारण लोगों की बढ़ती आय है।

चित्र 14.1 विश्व पर्यटन मानचित्र

4.5 विश्व के दस शीर्ष पर्यटक स्थल

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संघ (यूएनडब्ल्यूटीओ जिसका मुख्यालय स्पेन में मेड्रिड है) ने 2015 की अपनी वार्षिक रिपोर्ट में संकेत किया है कि पर्यटन की दृष्टि से फ्रांस शीर्ष पर है क्योंकि यहां लगभग 67,310,000 पर्यटक विश्व के विभिन्न भागों से पहुंचते हैं। फ्रांस के बाद अमेरिका का नम्बर आता है और दसवें नम्बर पर हंगरी आता है जहां 2015 में पूरे विश्व से 17,428000 पर्यटक पहुंचे थे।

तालिका 14.2: यूएनडब्ल्यूटीओ 2015 में विश्व के शीर्ष दस पर्यटक स्थल

क्रमांक	देश	पर्यटकों की संख्या
1.	फ्रांस	67,310,000
2.	संयुक्त राज्य अमेरिका	47,752,000
3.	स्पेन	43,252,000
4.	इटली	34,087,000
5.	यूनाइटेड किंगडम	25,515,000
6.	चीन	23,770,000
7.	पोलैण्ड	19,520,000
8.	मेक्सिको	19,351,000
9.	कनाडा	17,636,000
10	हंगरी	17,248,000

2014 में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के पहुंचने की दृष्टि से दस शीर्ष स्थलों को चित्र 14.2 में दर्शाया गया है। तालिका 14.2 में देशभर के आगुन्तकों की संख्या का विवरण दिया गया है।

चित्र 14.2: 2014 में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के पहुंचने की दृष्टि से दस शीर्ष स्थल

2014 में पूरे विश्व में 1.135 मिलियन अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक थे जो कि 2013 में 1.87 मिलियन अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की अपेक्षा 4.3% अधिक थे। नीचे दी गई तालिका 14.3 में 2012–14 के बीच पर्यटकों के आगमन की संख्या तथा प्रतिशत परिवर्तन को दर्शाती है।

तालिका 14.3: दस शीर्ष देशों में पर्यटन में वृद्धि

सं रैंक	देश	यूएनटीडब्ल्यूटीओ क्षेत्र	अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों का पहुंचना (2014)	अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों का पहुंचना (2013)	परिवर्तन 2013 से 2014 (%)	परिवर्तन 2012 से 2013 (%)
1	फ्रांस	यूरोप	83.7 मिलियन	83.6 मिलियन	▲ 0.1	▲ 2.0
2	संयुक्त राज्य	उत्तरी अमेरिका	74.8 मिलियन	70.0 मिलियन	▲ 6.8	▲ 5.0
3	स्पेन	यूरोप	65.0 मिलियन	60.7 मिलियन	▲ 7.1	▲ 5.6
4	चीन	एशिया	55.6 मिलियन	55.5 मिलियन	▲ 0.1	▲ 3.5 ?
5	इटली	यूरोप	48.6 मिलियन	47.7 मिलियन	▲ 1.8	▲ 2.9
6	टर्की	यूरोप	39.8 मिलियन	37.8 मिलियन	▲ 5.3	▲ 5.9
7	जर्मनी	यूरोप	33.0 मिलियन	31.5 मिलियन	▲ 4.6	▲ 3.7
8	यू.के.	यूरोप	32.6 मिलियन	31.1 मिलियन	▲ 5.0	▲ 6.1
9	मेक्सिको	उत्तरी अमेरिका	29.8 मिलियन	28.4 मिलियन	▲ 5.3	▲ 10.2
10	रूस	यूरोप	29.1 मिलियन	24.2 मिलियन	▲ 20.5	▲ 3.2

14.6 विश्व में पर्यटन की वृद्धि

पर्यटन उद्योग 20 सदी के मध्य से फल-फूल रहा है। इससे पूर्व पर्यटन की गतिविधियाँ केवल विश्व के सीमित हिस्सों तक ही सीमित थीं। ऐसे हिस्से विकसित देशों में ही केन्द्रित थे। 1950 के बाद पर्यटन विश्व के केन्द्रों की वृद्धि विकसित देशों के बाहर भी देखी गई। नए स्थल बढ़ने लगे और पर्यटक ऐसे क्षेत्रों के भ्रमण के लिए आने लगे। इसके अतिरिक्त अल्प विकसित देशों की बढ़ती अर्थव्यवस्था भी इन देशों से पर्यटकों को आकर्षित करने लगी। इससे पर्यटन के क्षेत्रों में वृद्धि के साथ-साथ पूरे विश्व में पर्यटकों की संख्या बढ़ने लगी।

यात्रा और पर्यटन की वृद्धि और विकास पूरे विश्व में एक समान नहीं था। कुछ क्षेत्र बहुत अच्छी तरह से विकसित थे और उन्हें एक लम्बे समय से विकसित किया गया था। कुछ अन्य क्षेत्र भी बढ़-चढ़कर आगे आ रहे हैं। पूर्वी एशिया और प्रशान्त महासागर में आने वाले पर्यटकों की संख्या बहुत बड़ी है। औसतन यह 13% प्रतिवर्ष है जिसके बाद मध्य एशिया 10% प्रतिवर्ष की दर से आता है। 2000 से पूर्व यूरोप और अमेरिका पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण स्थल थे परन्तु पिछले दिनों इनमें क्रमश: 10% और 13% की कमी हुई है। इन दोनों क्षेत्रों में पर्यटकों की हिस्सेदारी 1950 में 95% थी। 1990 में घटकर 82% हो गई और 2000 में यह 76% हो गई। अन्य क्षेत्रों का पर्यटन स्थल के रूप में उभरने से यह कमी आई।

हालांकि वृद्धि की प्रक्रिया को संक्षेप में दर्शाने के लिए तालिका 14.4 पिछले 5 वर्षों में पर्यटकों की निरन्तर बढ़ती संख्या को दर्शाती है।

तालिका 14.4: वर्ष 2011 से 2015 में पर्यटकों की बढ़ती संख्या

क्रमांक	वर्ष	पर्यटकों की कुला संख्या
1	2011	983 मिलियन
2	2012	1,035 मिलियन
3	2013	1,087 मिलियन
4	2014	1,135 मिलियन
5	2015	1,184 मिलियन

14.7 विश्व में भविष्य के लिए पर्यटन में वृद्धि

2010 से अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन में 4.4% की वृद्धि हुई है जो 2015 में 1,184 मिलियन तक पहुंच गई है, यह वृद्धि लगातार 6 वर्षों में औसत से अधिक वृद्धि है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या में प्रतिवर्ष 4% या अधिक की वृद्धि हुई है। 2015 में 2014 से 50 मिलियन अधिक पर्यटकों ने अंतर्राष्ट्रीय स्थलों की यात्रा की। भावी वर्षों के लिए सम्भावनाएं सकारात्मक हैं जिसमें अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन में विश्वव्यापी 4% की वृद्धि की आशा है।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन ने 2015 में नई ऊँचाइयों को छुआ है। इस क्षेत्र का मजबूत प्रदर्शन विश्व के अनेक भागों में आर्थिक विकास और रोजगार निर्माण में योगदान दे रहा है। अत: देशों के लिए यह आवश्यक है कि वे ऐसी नीतियों को बढ़ावा दें, जो पर्यटन के निरन्तर विकास, जिसमें यात्रा सुविधाएं, मानव संसाधन विकास और दीर्घ जीविता शामिल है, पर ध्यान दिया गया हो।

क्रियाकलाप 14.2

एशियाई देशों के लिए विश्व पर्यटक आंकड़े एकत्र कीजिए। विश्व पर्यटन में भारत की हिस्सेदारी का पता कीजिए और यह पता लगाइए कि विश्व स्तर पर भारत की हिस्सेदारी कम क्यों है?

पाठगत प्रश्न 14.2

1. विश्व पर्यटन को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।
2. पर्यटकों के लिए आकर्षक आयोजन और मनोरंजक गतिविधियों की चर्चा कीजिए।
3. 2011 से विश्व पर्यटन की वृद्धि पर चर्चा कीजिए।

14.8 विश्व में पर्यटकों का आगमन

यह स्पष्ट है कि पर्यटक विश्व के कुछ भागों में बड़ी संख्या में केन्द्रित हैं। वे विकसित अर्थव्यवस्थाओं में अधिक हैं परन्तु उनका वितरण उभरती अर्थव्यवस्थाओं में भी बढ़ रहा है। यदि हम देशों के

आकार और जनसंख्या की तुलना करें तो उन देशों का स्थानिक वितरण विकसित देशों में बहुत अधिक है। अधिकांश विकसित अर्थव्यवस्थाओं का क्षेत्र बहुत कम है और तुलनात्मक रूप से जनसंख्या भी बहुत कम है। लोगों के समृद्ध होने के कारण वे पर्यटन गतिविधियों के लिए समय निकाल पा रहे हैं। इस कारण ऐसे देशों में यात्रा और पर्यटन अधिक लोकप्रिय हैं।

विभिन्न देशों का भ्रमण करने वाले पर्यटकों की सही संख्या को चित्र 14.3 में दर्शाया गया है। मानचित्र से प्रकट होता है कि सामान्य और ठण्डी जलवायु वाले क्षेत्र पर्यटन गतिविधियों के लिए बहुत अनुकूल हैं।

चित्र 14.3: विश्व के विभिन्न भागों में पर्यटकों का आगमन

अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन की प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ रही है। लगभग 17 वर्ष के समय में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन की संख्या 1995 में 530 मिलियन से बढ़कर 2012 में 1035 मिलियन तक पहुंच चुकी है। यह संख्या दुगने से थोड़ी सी कम है। 2011 की तुलना में 2012 में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन की संख्या लगभग 4% बढ़ी है। 2012 में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन की कुल संख्या इतिहास में पहली बार एक बिलियन से अधिक पहुंची है। एशिया और प्रशान्त क्षेत्र में उच्चतम वृद्धि 7% दर्ज की गई।

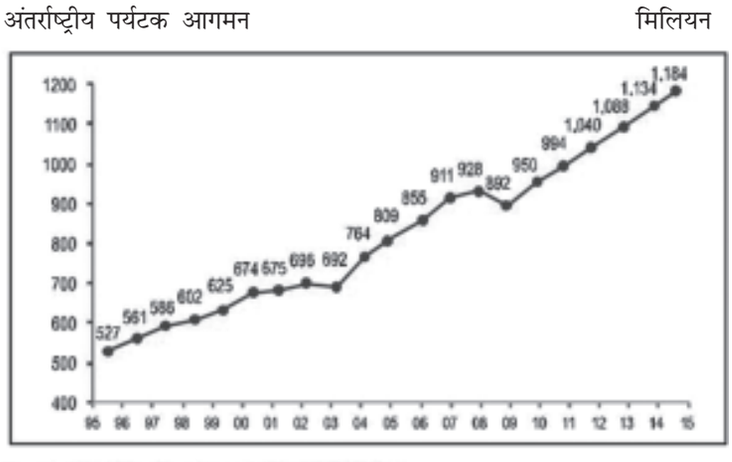

Source: World Tourism Organization (UNWTO) ©

चित्र 14.4: अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन में वृद्धि

ग्राफ (चित्र 14.4) 1995 से 2015 तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आने वाले पर्यटकों की लम्बी और लगातार वृद्धि को दर्शाता है। 1995 में यह संख्या लगभग 527 मिलियन थी और 2002 तक आगमन में बढ़ती निरन्तरता को दर्शाता है। 2003 में थोड़ी कमी आई परन्तु 2004 में दोबारा वृद्धि की प्रवृत्ति दिखी गई जो 764 मिलियन थी। 2010 तक हम पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि को देखते हैं और 2015 के अन्त में यह 1.184 मिलियन तक बढ़ गई।

2015 में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन में हिस्सेदारी

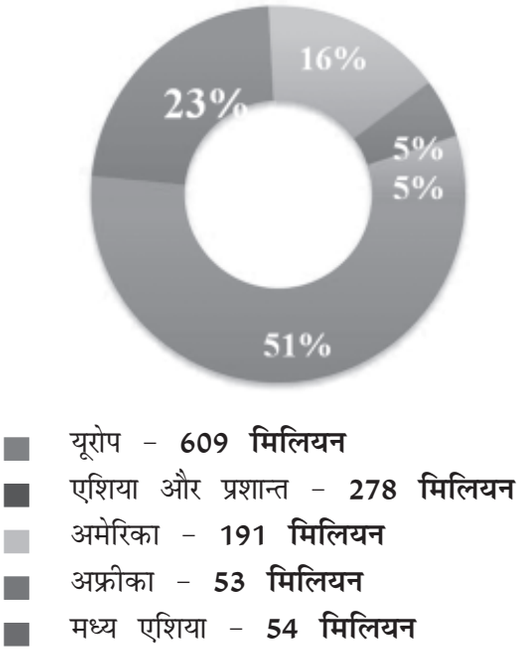

चित्र 14.5

यद्यपि उपर्युक्त चार्ट 2015 में पांच भिन्न क्षेत्रों में वृद्धि की बदलती स्थिति को दर्शाता है। पर्यटकों की अधिकतम संख्या, (609 मिलियन) यानी 51% ने यूरोप का भ्रमण किया। यूरोप के बाद एशिया और प्रशान्त क्षेत्र का नम्बर आता है जो 278 मिलियन पर्यटक संख्या अर्थात् कुल का 23% है। सबसे कम संख्या 53 मिलियन (5%) ने अफ्रीका का भ्रमण किया।

14.9 पर्यटक आगमन और प्राप्ति

पर्यटक आगमन का अर्थ है किसी पर्यटन केन्द्र पर आने वाले और निवास पाने वाले व्यक्तियों की संख्या। ऐसे लोग कम से कम एक रात के निवास के लिए आते हैं। साथ ही आने वाले सभी लोगों को आयु सीमा के बिना गिना जाता है। एक बच्चे को भी पर्यटक केन्द्र पर आने वाले पर्यटक के रूप में गिना जाता है। भले ही उससे रात्रि विश्राम के लिए कोई किराया नहीं लिया जाता। अत: आयु की सीमा लागू नहीं होती। इसलिए सभी लोगों को गिना जाता है और इस संख्या को आए हुए पर्यटकों की संख्या के रूप में जाना जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक प्राप्तियाँ आने वाले अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों द्वारा पर्यटन गतिविधियों पर किया गया खर्च है। इसमें राष्ट्रीय यात्रा और परिवहन सुविधा प्रदान करने वालों द्वारा किया गया कुल भुगतान शामिल किया जाता है। लक्ष्य देश में किसी भी प्रकार की वस्तु अथवा सेवा प्राप्त करने के बदले किए गए भुगतान को गिना जाता है। दूसरे शब्दों में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों द्वारा प्रयोग की गई किसी भी प्रकार की राशि को प्राप्तियों के वर्ग में गिना जाता है जैसे निवास, लक्ष्य देश के भीतर यातायात, भोजन और पेय, मनोरंजन, स्मृति चिह्नों के क्रय और प्रवेश शुल्क इत्यादि को गिना जाता है।

यूरोप में आगमन 3% बढ़ा जबकि अफ्रीका में आगमन 2% बढ़ा। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन प्राप्तियाँ 2013 में 1197 बिलियन अमरीकी डॉलर की अपेक्षा 2014 में विश्व स्तर पर बढ़कर 1245 बिलियन अमरीकी डॉलर पहुंच गई जो सही अर्थों में 3.7% की वृद्धि के बराबर है। (इसमें मुद्रा विनिमय दर में घटाव-बढ़ाव और मुद्रस्फीति को ध्यान में रखा गया है।)

2014 में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों से निवास, भोजन, पेय, मनोरंजन, खरीददारी तथा अन्य वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च से प्राप्तियाँ अनुमानत: 1,245 बिलियन अमरीकी डॉलर (937 बिलियन यूरो) तक पहुंच गया है जो सही अर्थ में (विनिमय दर के घटने-बढ़ने एवं मुद्रास्फीति को ध्यान में रखते हुए) 3.7 की वृद्धि है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन 2014 में 4.4% की दर से बढ़ा और 2013 में 1087 मिलियन के मुकाबले 2014 में 1135 मिलियन तक पहुंच गया।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन प्राप्तियों के अतिरिक्त पर्यटन से निर्यात की आय भी अंतर्राष्ट्रीय यात्री परिवहन सुविधाओं के माध्यम से प्राप्त होती है (अनिवासियों को दी गई सेवा) यह आय (परिवहन सुविधाओं) 2014 में अनुमानत: 221 बिलियन अमरीकी डॉलर थी जिसने अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन से कुल निर्यात को 1.5 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर अथवा 4 बिलियन अमरीकी डॉलर प्रतिदिन कर दिया। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन से होने वाली प्राप्तियों में सभी क्षेत्रों में वृद्धि हुई।

विश्व : अंतर्निहित पर्यटन
अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन प्राप्तियां 2014 (यूएस डॉलर बिलियन)

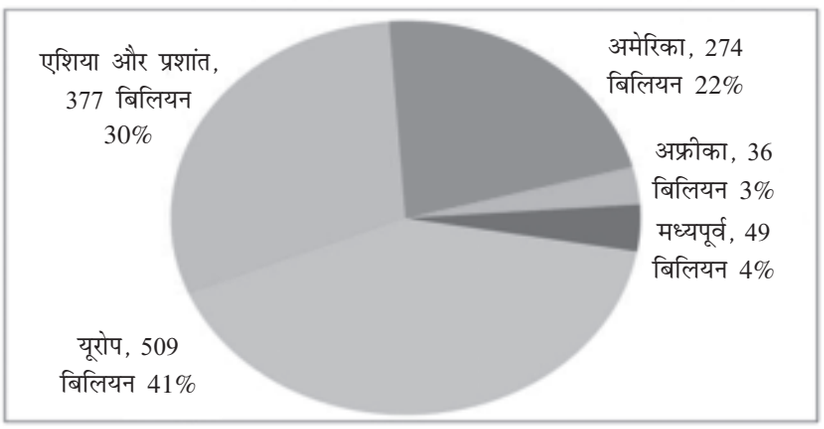

Source: World Tourism Organization (UNWTO) ©

चित्र 14.6

चित्र स्पष्ट रूप से 2014 में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन प्राप्तियों में हिस्सेदारी को दर्शाता है जिसमें यूरोप का सबसे बड़ा भाग था। यूरोप का विश्वव्यापी अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन प्राप्तियों में 41% का भाग है,

उसने पर्यटन आय में 17 बिलियन अमरीकी डॉलर से 509 बिलियन अमरीकी डॉलर (383 बिलियन यूरो) की वृद्धि देखी गई। एशिया और प्रशान्त में 30% की वृद्धि हुई जो 16 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 377 बिलियन अमरीकी डॉलर (284 बिलियन यूरो) हो गई। अमेरिका में (22% भागीदारी) प्राप्तियाँ 10 मिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर कुल 274 बिलियन अमरीकी डॉलर (206 बिलियन यूरो) हो गई। मध्य पूर्व में प्राप्तियाँ अनुमानत: 4 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 49 बिलियन अमरीकी डॉलर (37 बिलियन यूरो) हो गई तथा अफ्रीका में (3% भागीदारी)1 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 36 बिलियन (27 बिलियन यूरो) हो गई।

14.10 विश्व पर्यटन की सम्भावनाएं

विश्व पर्यटन की बढ़ती सम्भावनाओं के स्वरूप को निम्न चित्र द्वारा दर्शाया गया है। यह 1950 से अब तक तथा वर्ष 2020 के लिए किए भावी आकलन के लिए भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की प्रवृत्ति को दर्शाता है। इस उल्लिखित अवधि के प्रारम्भ में पर्यटन गतिविधियाँ बहुत व्यापक नहीं थीं। ऐसा ही विकसित माने जाने वाले देशों के लिए सत्य था। विकसित देशों के बाहर यात्रा और पर्यटन उद्योग में वृद्धि 1970 से दिखाई देने लगी। ऐसा विकासशील देशों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार आने के कारण हुआ। इससे मध्यम, उच्च मध्यम वर्ग को उपभोगजन्य आय में वृद्धि हुई। यह लोगों द्वारा अपनाई गई पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने वाला टॉनिक सिद्ध हुई। तब से पर्यटन के वैश्विक स्वरूप में परिवर्तन आया। पर्यटन को चौतरफा विस्तार मिला परन्तु इसने विकसित देशों का हिस्सा कम कर दिया। औसतन प्रतिवर्ष वृद्धि की दर लगभग 4.5% है।

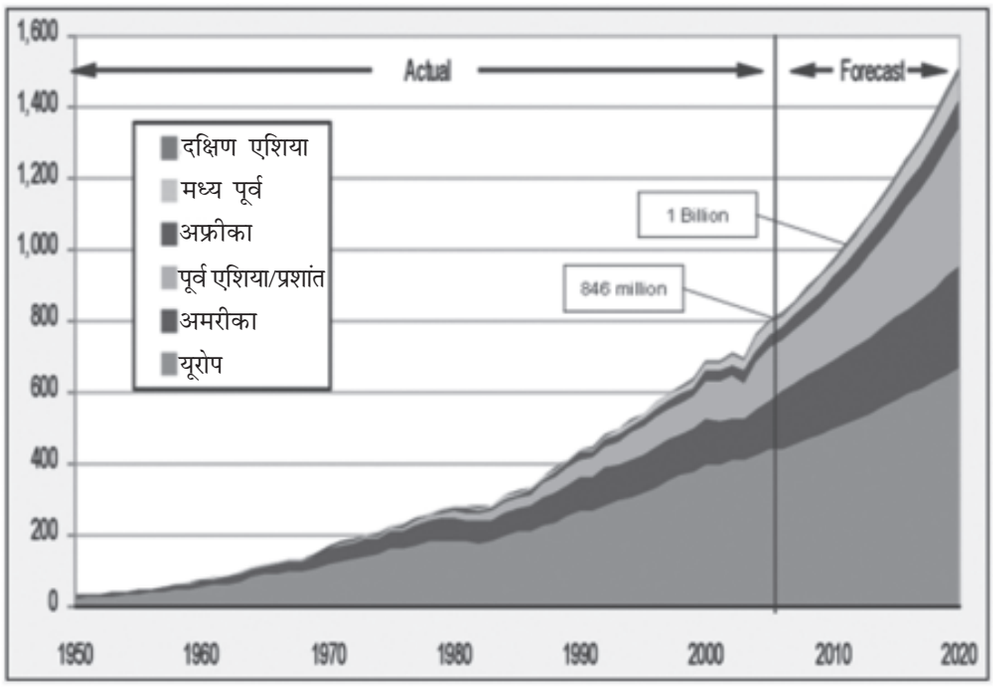

Source: www.world.tourism.org

चित्र 14.7 विश्व में क्षेत्रीय पर्यटन वृद्धि का आकलन (1950-2020)

कुछ मुख्य बिन्दु :

- यूरोप को सर्वाधिक लोकप्रिय स्थल माना गया है जहां 2020 तक पर्यटकों की संख्या 717 मिलियन तक पहुंचने की अनुमान है। ऐसा माना जाता है कि यह औसतन 3.1% की दर से बढ़ेगी।
- पूर्व एशिया और प्रशान्त में वृद्धि की दर 6.5% वार्षिक रहने का अनुमान है। इसका भाग विश्व के कुल पर्यटकों का 25% रहेगा और अमेरिका के स्थान पर यह दूसरी सबसे बड़ी स्थिति में होगा।
- अमेरिका और मध्य एशिया में पर्यटन गतिविधियाँ बढ़ने का पूर्वानुमान है। यहां 7% वार्षिक वृद्धि होने की सम्भावना है।
- दक्षिण एशिया में पर्यटन सबसे कम है परन्तु ऐसा माना जा रहा है कि पर्यटन में वृद्धि के कारण 2020 में यहां भी पर्यटन बढ़ेगा। इसका भाग 2020 में लगभग 19 मिलियन होगा जो 1995 की तुलना में पांच गुणा अधिक है।

तालिका 14.5: विश्व में पर्यटन आगमन का आकलन

विश्व के क्षेत्र	आधार वर्ष	पूर्वानुमान		बाजार में भाग (%) वृद्धि दर (%)		वर्षिक औसत
	1995	2010	2020	1995	2020	1995-2020
	(मिलियन में)					
विश्व	565	1006	1561	100	100	4.1
अफ्रीका	20	47	77	3.6	5.0	5.5
अमेरिका	110	190	282	19.3	18.1	3.8
पूर्व एशिया और प्रशान्त	81	195	397	14.4	25.4	6.5
यूरोप	336	527	717	59.8	45.9	3.1
मध्य एशिया	14	36	69	2.2	4.4	6.7
दक्षिण एशिया	4	11	19	0.7	1.2	6.2

? क्या आप जानते हैं

विश्व पर्यटन दिवस प्रतिवर्ष 27 सितम्बर को मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में पर्यटन के महत्व के बारे जागरुकता पैदा करना है। प्रत्येक वर्ष 27 सितम्बर के दिन यूएनडब्लूटीओ (UNWTO) इच्छुक पार्टियों को उनके देश के अवकाश स्थलों पर आयोजित होने के विशेष समारोहों में भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है।

पाठगत प्रश्न 14.3

1. विश्व पर्यटन में योगदान देने वाले शीर्ष दस देशों के बारे में लिखिए।
2. विश्व के कौन से भाग की अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन प्राप्तियों में अधिकतम भागीदारी है।
3. अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन में विकासशील देशों की भागीदारी में कैसे वृद्धि हुई?

आपने क्या सीखा

- विश्व में पर्यटन के स्वरूप और वृद्धि के वितरण में एक समानता नहीं है। बहुत पहले से पर्यटन विकसित देशों और वहां के सम्पन्न लोगों का काम रहा है। परन्तु पिछले कुछ दशकों से विकासशील देशों में भी आर्थिक प्रगति हो रही है।
- विश्व के भिन्न-भिन्न भागों में समाज के बड़े वर्ग की आर्थिक स्थिति में सुधार से पर्यटन की वृद्धि और स्वरूप में परिवर्तन आया है और यह अभी भी चल रहा है।
- पर्यटन विश्व के बड़े-बड़े स्थलों के साथ-साथ यहां से जुड़े लोगों तक पहुंच गया है। ऐसा लोगों की अधिक आय, लोगों की क्रय शक्ति, कम खर्चीली यात्रा, विश्व की बढ़ती जानकारी तथा सरकार की ओर से बढ़ावा देने के कारण हो रहा है।
- 1950 से विश्व में पर्यटन की गतिविधियाँ बढ़ने का मुख्य कारण विभिन्न प्रकार के आकर्षण रहे हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटकों का आगमन लम्बे समय से निरन्तर धीमे-धीमे बढ़ रहा है। 1995 में यह लगभग 527 मिलियन था और 2002 तक इसमें निरन्तरता दिखाई देती है। 2003 में थोड़ी कमी दिखाई देती है परन्तु 2004 में पुन: वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है जो 764 मिलियन है। 2010 तक हम पर्यटक आगमन में निरन्तर वृद्धि देखते हैं जो 2015 में बढ़कर 1.184 मिलियन हो चुकी है।
- पर्यटन का स्थानिक क्षितिज पारम्परिक से अपारम्परिक क्षेत्रों तक बढ़ चुका है। अपारम्परिक क्षेत्रों का योगदान समय के साथ बहुत तेजी से बढ़ रहा है और पर्यटन का बदलता रूप बहुत स्पष्ट हो रहा है और कुछ समय बाद विश्व का अधिकांश भाग पर्यटन मानचित्र पर होगा।

पाठांत अभ्यास

1. 1950 से विश्व पर्यटन की बढ़ती प्रवृत्ति पर चर्चा कीजिए।
2. अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन की वर्तमान प्रवृत्ति का विश्लेषण कीजिए।
3. पर्यटन आगमन और प्राप्तियों में शीर्ष के दस देशों की हिस्सेदारी को स्पष्ट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1

1. (i) पर्यटकों की उपभोगजन्य आय की वृद्धि

   (ii) सवैतनिक अवकाश अथवा अवकाश का अधिकार

   (iii) यात्रा खर्च

   (iv) प्रौद्योगिकी

   (v) पैकेज प्रदाता/यात्रा संचालक

2. प्राकृतिक : दृश्य, पार्क, तट

   सांस्कृतिक : ऐतिहासिक स्थल, पुरातात्विक स्थल, संग्रहालय

3. खेल पर्यटन पर्यटकों का किसी अन्य स्थान पर खेल देखने अथवा भाग लेने की यात्रा होती है। खेल पर्यटन में गोल्फ, तैराकी, टेनिस, क्रिकेट, बर्फ के खेल, विश्व कप, फुटबाल इत्यादि शामिल होते हैं।

14.2

1. विश्व पर्यटन को प्रभावित करने वाले कुछ कारक प्राकृतिक स्थल, वहां तक की पहुंच तथा सामान्य जलवायु की परिस्थितियाँ होते हैं।

2. अनेक विशिष्ट कार्यक्रम जैसे त्यौहार, धार्मिक और व्यापारिक मेले पूरे विश्व में आयोजित किए जाते हैं। अनेक मनोरंजक गतिविधियाँ जैसे स्थलों का भ्रमण, खेल–गोल्फ, बर्फ के खेल, विश्व कप, फुटबाल इत्यादि पर्यटकों पर चुम्बकीय प्रभाव डालते हैं।

3. 2011 से विश्व पर्यटन में वृद्धि काफी अधिक है। वर्ष 2011 में 983 मिलियन पर्यटकों का आगमन हुआ 2013 में यह बढ़कर 1087 मिलियन पर्यटकों तक हो गया और 2015 में बढ़कर यह 1184 मिलियन हो गया है। वृद्धि होने की सम्भावनाएं सकारात्मक हैं और 2016 में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की वृद्धि दर 4% की दर से होने की संभावना है।

14.3

1. फ्रांस, संयुक्त राज्य, स्पेन, इटली, यू.के. चीन, पौलेण्ड, मेक्सिको, कनाडा और हंगरी

2. अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन प्राप्तियों में यूरोप की हिस्सेदारी अधिकतम 41% है।

3. पूर्व एशिया और प्रशान्त में पर्यटकों का आगमन बहुत मजबूत हैं। यूरोप और अमेरिका की भागीदारी काफी कम हुई है। ऐसा अन्य पर्यटक स्थलों के विकसित होने अथवा बढ़ने के कारण हुआ है। 2020 तक दक्षिण एशिया का भाग 19 मिलियन तक पहुंचने का अनुमान है जो पिछले वर्षों से कहीं अधिक है।